राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक
जे. के. बंसल R.A.S.
(निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर)

ग्रन्थांक 195

राठौड़ां री ख्यात

(हिन्दी अनुवाद)

सम्पादक
कैलाशदान उज्ज्वल I.A.S.
पुष्पेन्द्रसिंह

प्रकाशक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

1999

प्रथमावृत्ति—500

मूल्य : रु. 55.00

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक
जे. के. बंसल R.A.S.
(निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर)

ग्रन्थांक 195

राठौड़ां री ख्यात

(हिन्दी अनुवाद)

सम्पादक
कैलाशदान उज्ज्वल I.A.S.
पुष्पेन्द्रसिंह

प्रकाशक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

1999

प्रथमावृत्ति—500 मूल्य : रु. 55.00

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक
जे. के. बंसल R.A.S.
[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क 195

राठौडां री ख्यात
(हिन्दी अनुवाद)

सम्पादक
कैलाशदान उज्ज्वल I. A. S.
पुष्पेन्द्रसिंह

प्रकाशक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

1999

प्रथमावृत्ति 500

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित
सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थानप्रदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्टग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक
जे. के. बंसल R.A.S.

ग्रन्थाङ्क 195

राठौडां री ख्यात
(हिन्दी अनुवाद)

सम्पादक
कैलाशदान उज्ज्वल .A. S.
पुष्पेन्द्रसिंह

प्रकाशक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

1999

प्रधान सम्पादकीय

'ख्या' प्रकथने धातु से निष्पन्न ख्यात मूलतः संस्कृत भाषा का शब्द है जहां इसे प्रसिद्ध, आहूत, विदित, उक्त, अभिहित अथवा प्रख्यात के रूप में माना गया है किन्तु राजस्थान के इतिहास लेखकों ने इसका विस्तृत अर्थ ग्रहण करते हुये इसे इतिहास का अभिव्यंजक माना है।

राजस्थान में ख्यात, बात, हाल, हकीकत, वंशावली एवं पीढीयावली आदि ऐतिहासिक साहित्य प्रचुर मात्रा में लिखा गया है। मारवाड़ के राठौड वंश से संबंधित मुहणोत नैणसी की ख्यात का सर्वप्रथम प्रकाशन सन् 1960 में विभाग की पुरातन ग्रन्थमाला में किया गया था और तत्पश्चात् इस विभाग द्वारा बांकीदास की ख्यात, महाराजा मानसिंह की ख्यात, महाराजा विजयसिंह की ख्यात तथा महाराजा तखतसिंह की ख्यात आदि अन्य ख्यातों को प्रकाशित किया।

इसी परम्परा में प्रस्तुत राठौडां री ख्यात का हिन्दी अनुवाद आपके समक्ष प्रस्तुत है। यहां पर मैं बता देना आवश्यक समझता हूं कि विभाग द्वारा अब तक राठौड वंश की लगभग समग्र ख्यात प्रकाशित की जा चुकी है, मात्र महाराजा अभयसिंह, रामसिंह एवं बखतसिंह की ही ख्यात का प्रकाशन अधूरा रह रहा था। मुझे खुशी है कि उक्त रिक्तांश की पूर्त्ति भी श्री कैलाशदान उज्ज्वल के प्रस्तुत सम्पादन से हो रही है। महाराजा अभयसिंह का काल राजनीतिक दृष्टि से कुछ उथल पुथल एवं अशान्ति का रहा है फिर भी उनके काल में सूरजप्रकाश, राजरूपक एवं विरदश्रृंगार जैसे महत्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना की गई। इसके अलावा अभयसिंह के काल में कई निर्माण कार्य भी किये गये। महाराजा रामसिंह एव बख्तसिंह का युद्ध एवम् अन्ततोगत्वा महाराजा बख्तसिंह की गद्दीनशीनी ख्यात में वर्णित है।

जो भी हो, प्रस्तुत रचना अनुवाद रूप में उपलब्ध होने से हिन्दी-इतिहास प्रेमियों एवं साहित्य सेवियों के लिये विशेष दृष्टि से उपादेय होगी ऐसा मेरा विश्वास है।

जे. के बंसल
निदेशक

अनुक्रम

प्रधान सम्पादकीय

भूमिका — I - VIII

अनुवाद — 1 - 86

I

भूमिका

साम्राज्य काल के प्रारंभिक गदर बाद के विदेशी एवं भारतीय इतिहासकारों को फारसी ग्रन्थ सुलभ होने से उन्होंने मुसलमान शासकों के आश्रित लेखकों के अपने ग्रन्थों से ली गई जानकारी पर भरोसा कर उसे अपनी रचनाओं का महत्वपूर्ण आधार बनाया। विदेशी शासकों का निरन्तर विरोध करते हुए संघर्षरत वंशों का इतिहास, प्रथम तो उनके भाग्य के उतार-चढ़ाव के कारण सहज उपलब्ध नहीं था; दूसरे जो कुछ सामग्री एकत्र की जा सकती थी वह राजस्थानी में थी जिसे सीखने पढ़ने का श्रम करने के धीरज का अभाव होने से उन्होंने कतिपय निराधार अवधारणाओं और अप्रसंगोचित पाठ भेदों का सहारा ले इस सामग्री को अविश्वसनीय ठहराने के कुतर्क ढूंढने को अधिक महत्व दिया। राजस्थानी भाषा में उपलब्ध इस जानकारी को राज्य-आश्रित व्यक्तियों द्वारा लिखी हुई कह कर अनुपयोगी कहने वाले यही लोग मुस्लिम शासकों के आश्रितों की लिखी सामग्री को संपूर्ण सत्य मानते रहे।

शिक्षा के प्रसार एवं राजस्थान के अपने विद्वानों की रुचि के कारण यहाँ उपलब्ध ऐतिहासिक सामग्री का समुचित उपयोग शुरु होने लगा। यहाँ बता देना प्रसंगोचित होगा कि जिन विद्वानों को सम्यक् दृष्टिकोण की जानकारी का अभाव अखरा उनकी मांग पर अथवा स्वत: मुख्य राजपूत राज्यों के शासकों ने विश्वस्त सामग्री जैसे वंशावली, बही, फरमान, पत्र व्यवहार, पुराने अभिलेख, पट्टे, शिलालेख, काव्य पुष्ट मौखिक परंपरा का मूल्यांकन तथा उपयोग कर इतिहास संग्रह की व्यवस्था की। इस दिशा में प्रथम उल्लेखनीय प्रयास सिंहढायच दयालदास द्वारा तैयार की गई बीकानेर महाराज रतनसिंह के समय की 'दयालदास री ख्यात' कहा जा सकता है, जो कर्नल पाउलेट द्वारा रचित 'बीकानेर राज्य गजेटियर' का आधार है। दयालदास के इस योगदान की उपयोगिता इन्हीं के लिखे 'देशदर्पण' ग्रन्थ से बढ़ गई। महाराज डूंगरसिंह ने इन दो ऐतिहासिक ग्रन्थों से संतोष नहीं किया और ओझा के शब्दों में 'प्रान्तीय भाषा में समस्त भारतवर्ष का इतिहास लिखने की आज्ञा दी।' जिस पर दयालदास ने वि.सं. 1948 में 'आर्य आख्यान कल्पद्रुम' तैयार किया।

दयालदास की कृतियों के साथ-साथ खोजपूर्ण अध्ययन कर अपने ऐतिहासिक ग्रन्थ तय्यार करते समय ओझा तथा कतिपय अन्य ने उदयपुर के कविराजा श्यामलदास विरचित विशाल ग्रन्थ 'वीर-विनोद' और जोधपुर राज्य की उपलब्ध ख्यातों को समुचित महत्व दिया और उन्हें आधार बनाया। राजस्थान में उपलब्ध सामग्री के प्रति अपने पूर्वाग्रहों पर व्यापक पुनर्विचार करने को प्रेरित इतिहासकारों ने खुलकर इस सामग्री पर अपना विश्वास व्यक्त किया जिससे प्रोत्साहित हो नैणसी की रचनाओं सहित अन्य ऐतिहासिक सामग्री सुलभ करने का श्रेय प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर ने अर्जित किया।

ख्यात, वंशावली एवं अन्य क्षेत्रीय अभिलेखों से परहेज करने वाले, राजस्थानी भाषा, परंपरा, मान्यता इत्यादि के अपर्याप्त जानकार कतिपय अन्य क्षेत्रीय इतिहास लेखकों ने ख्यात शब्द का संबंध ख्याति और उस क्रम में प्रशंसा से प्रथम तो मान लिया और फिर अपनी इस अवधारणा के कारण कि प्रशंसा झूठ अथवा कम से कम अतिशयोक्ति होती है इस मान्यता को ख्यातों को अविश्वसनीय मानने का प्रमाण समझ लिया।

प्रथम तो यह मान्यता कि ख्यात शब्द ख्याति का पर्यायवाची है अथवा उससे व्युत्पन्न है, ठीक नहीं जंचती। नैणसी की जिस रचना को ख्यात अब कहा जाता है, उसकी मूल प्रति अथवा नैणसी के समय की प्रतिलिपि उपलब्ध नहीं और न ही उसके कहीं होने की कोई जानकारी रखता है अथवा देखने का दावा करता है। इस अभाव के कारण तहकीक कोई नहीं कह सकता कि नैणसी ने अपनी कृति को ख्यात शीर्षक दिया था। इससे पृथक् नैणसी ने उसे मिली सामग्री को हकीकत या फिर बात कहा है। बात के लिए राजस्थानी में एक शब्द अखियात भी है जिसका प्रयोग स्मरणीय घटना के संबंध में किया जाता है। अखियात प्रकटतया आख्यान एवं आख्यायिका से संबंधित है जिसका अर्थ है कहानी। ख्याति शब्द का रूप किसी कदर आख्यान के समान होने से आख्यान को प्रशस्ति ग्रन्थ मान अविश्वसनीय मानना युक्तिसंगत नहीं कहा जा सकता।

डॉ. राजेन्द्र नाथ पुरोहित, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, उदयपुर द्वारा कृपया भेजी नैणसी की ख्यात की वहाँ उपलब्ध सर्वाधिक पुरानी प्रति संबंधी जानकारी इस प्रकार है —

"(1) उक्त ग्रन्थ की हस्त प्रति सं. 2522 में ख्यात शब्द का प्रयोग हुआ है।
(2) ग्रन्थ का लिपिकर्ता : वीठू पन्ना।
(3) लिपीकाल वि.सं. 1899 मिति माघ वदि 8 तथा
(4) लिपि स्थान : बीकानेर है।

उक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि बीकानेर महाराज रतनसिंह के अनुज श्री लक्ष्मणसिंह के अध्ययनार्थ तय्यार करवाई गई थी। ग्रन्थ को कोई शीर्षक नहीं दिया गया है अपितु स्थान-स्थान पर पृथक्-पृथक् वृत्तांत हेतु.... ख्यात एवं......वात दर्शाया गया है।"

उपरोक्त जानकारी इस अनुमान व निष्कर्ष की पुष्टि करती है कि नैणसी की रचना का शीर्षक 'नैणसी री ख्यात' नहीं रहा होगा और नैणसी ने शब्द ख्यात और वात समान-अर्थी समझे थे। प्रकटतया ख्यात का संबंध वात या आख्यायिका से न कि प्रशस्ति से माना जाता था। फिर आता है बांकीदास का संकलन। इसे अब ख्यात कहा जा रहा है जबकि स्वयं बाकीदास ने कृति को बातों का संकलन माना था।

दूसरी महत्व की बात है ख्यातों की विषयवस्तु। नैणसी की रचना का एक भाग है राजनैतिक इतिहास संबंधी लेखक द्वारा विविध व्यक्तियों से प्राप्त की गई सामग्री। कतिपय अलौकिक प्रसंगों संबंधी बातों को इस संकलन में स्थान मिला है। नैणसी निश्चित ही ईमानदार इतिहासकार था। उसमें झूठा श्रेय लेने की पायी जाने वाली कमजोरी नहीं थी। उसने ईमानदारी से उन सभी व्यक्तियों का, जिनमें से शायद ही कोई उसका नाम नहीं दिया जाने पर अड़ंगा खड़ा करता, सद्भावना से पूरा विवरण दिया है। प्राप्त सामग्री यानि बातों और हकीकत में कहीं प्रशस्ति अथवा खुशामद की बू नहीं। झूठी प्रशंसा उसका प्रयोजन होना अकल्पनीय है।

यही बात सांमान्यताय अन्य 'ख्यात' कही जाने वाली पोथियों के लिए कहते संकोच नहीं होना चाहिये। जोधपुर अथवा मारवाड़ के राठौड़ शासकों की ख्यातों के लिए ऐसा आरोप सर्वथा अनुचित होगा। प्रस्तुत ख्यात एवं अन्य में उन घटनाओं का स्पष्ट विवरण दिया है जो शासकों के कृतित्व एवं व्यक्तित्व के लिए लांछन थी। महाराजा अभैसिंह तथा बखतसिंह का षड्यन्त्र - जिसकी परिणिति पितृवध था - राजाओं की गलतियां, अन्याय, क्रूरता इत्यादि बिन्दुओं का विगतवार वर्णन देने वाले इन अभिलेखों पर झूठी प्रशंसा का आरोप लगा इस सामग्री का तिरस्कार करना निन्दनीय चेष्टा होगी।

ख्यात की आलोचना करने वालों के इस कथन को अनदेखा अवश्य नहीं किया जा सकता कि कई घटनाओं की संवत्-मिती ठीक नहीं और कतिपय तथ्यों की पुष्टि, आलोचकों की थाती, फारसी इत्यादि भाषा के ग्रन्थों से नहीं होती। इस बिन्दु पर विचार करते समय हमें याद रखना होगा कि विविध कारणों से हमारे यहाँ नैणसी से पूर्व इतिहास लिपिबद्ध नहीं होने का अनुमान है। ख्यात लिखने की परंपरा शुरु होने के बाद के समय को पूर्व से अलग करके तिथियों इत्यादि पर विचार करें तो विदित होगा कि तथाकथित संवत् इत्यादि की त्रुटियां पूर्वकाल के आलेखों में है। इसके लिए ख्यातकार फुटकर काव्य वंशावली और बातों पर निर्भर थे। स्मृति की स्वाभाविक प्रवृति के कारण समय के साथ-साथ इन बिन्दुओं पर भूल होना अनहोनी बात नहीं।

इसके अलावा एक उल्लेखनीय बात और है। सामान्यतया पुराने समय के संवत् देने का ढंग भिन्न था। उस समय पुरानी घटना अथवा व्यक्ति का समय शताब्दि में दिये जाने की एक प्रथा भी थी। प्रमुख गढों के निर्माण समय की याद्दाश्त टीप में 'बारै रे समत' आदि लिखा मिलेगा जिसका तात्पर्य है बारहवीं सदी के समत में। सदी का वह समय जिसमें निर्माण हुआ या घटना घटी, निश्चित मालूम न होने से सदी बताकर ही संतोष किया जाता था। काव्य में यह परंपरा अधिक मिलती है; संभवत: इसलिए कि प्रथम तो रचयिता तिथि, माह, समत को कविता का अंग बनाने के श्रम से प्राय: दूर रहना चाहता होगा और दूसरे मौखिक पुनरावृत्ति के दौरान कदाचित यह छूट गया।

क्षेत्रीय अभिलेखों का संबंध प्राय: क्षेत्रीय घटनाओं से होता था जो फारसी इतिहासकारों के मुख्यालय और आश्रयदाताओं के विवरण तथा रुचि का हर समय विषय नहीं होने से उनकी रचनाओं में स्थान की हकदार नहीं हो सकती थी । इसलिए सभी विवरणों की पुष्टि का अभाव ख्यातों की अवहेलना का वायस नहीं बनाया जाना चाहिये ।

उपरोक्त विवेचन का तात्पर्य यह नहीं कि ख्यात एवं उसकी आधार सामग्री के विपरीत साक्ष्य का सम्यक् मूल्यांकन नहीं किया जाय और विवरण-भेद की स्थिति में ख्यात में दिये क्रम को ही तरजीह दी जाय वरन् यह है कि खींचातानी से निकाली गई तथाकथित कमियों के कारण ख्यातों से मुंह नहीं मोड़ना चाहिये। इतिहास की हर प्रकार की आधार सामग्री की प्रामाणिकता पर टीका-टिप्पणी करना न कठिन है और न कभी रुका है । समुचित निष्पक्षता से प्रत्येक दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति को यथोचित स्थान देने से सम्यक् इतिहास तय्यार करने की दिशा में अपेक्षित प्रगति होगी । प्रत्येक महती पक्ष के अभिलेखों को शोध-विद्यार्थियों को उपलब्ध कराने के उद्देश्य से 'ख्यात' इत्यादि के प्रकाशन का जो सिलसिला इन दशकों में आरंभ किया गया उसे बढ़ाने की दिशा में वर्तमान प्रयास एक कदम समझा जाये ।

इतिहास संबंधी राजस्थानी में उपलब्ध सामग्री के पांच विभाग है :

1. वंशावली एवं पीढ़ियाँ ।
2. ख्यात तथा हकीकत ।
3. पद्य अथवा गद्य में ऐतिहासिक जीवनियाँ ।
4. विशिष्ट ऐतिहासिक घटना अथवा व्यक्ति की प्रशंसा में रचित फुटकर छंद ।
5. ऐतिहासिक व्यक्तियों संबंधी 'वात' साहित्य ।

उपरोक्त सामग्री की उपयोगिता, विश्वसनीयता, स्थान, महत्व पर बेहतर विद्वान बहुत कुछ कह चुके हैं । डॉ. रघुवीर सिंह ने अपनी 'जोधपुर राज्य की ख्यात' की भूमिका में इन मुद्दों पर काफी विस्तार से प्रकाश डाला है । उसकी पुनरावृत्ति न कर यहाँ इतना लिखना पर्याप्त होगा कि जोधपुर के राठौड़ शासकों संबंधी ख्यातों की अपनी कतिपय विशेषताएं हैं ।

"ऐसी ख्यातें", वे लिखते हैं, "न केवल राजकीय अभिलेखागार वरन राज्यवंश से निकट संपर्क में आने वाले कुछ व्यक्ति और परिवार भी लिखते थे ।" उन्होंने स्वीकार करते हुए भी कि नैणसी देश-दीवाण एवं उच्च पदों पर रहा और उसे राजकीय अभिलेख सुगम्य थे, 'नैणसी री ख्यात' को 'मुख्यतया गैर-सरकारी' माना है । उन्हें उपलब्ध ग्रन्थों में उन्होंने 'कविराजा की ख्यात' का विशेष उल्लेख करते हुए बताया है कि यह परकोटे के एक आले में मिली थी और प्रति का लेखक अज्ञात है । इतालवी विद्वान् टैसीटोरी ने मिरगेश्वर निवासी भोमदान सांदू के यहाँ जोशी आईदान द्वारा

तय्यार की गई जिस प्रतिलिपि का उल्लेख किया है वह सांदू जोरावरसिंह जी के यहां से प्राप्त कर इस कृति का आधार बनाई गई है । प्रति में कहीं उस ग्रन्थ की जानकारी नहीं दी है जिससे नकल तय्यार की गई, इसलिए निश्चित नहीं कहा जा सकता कि मूल लेखक कौन है किंतु सामान्य तुलनात्मक अध्ययन से प्रतीत होता है कि तथ्य और विवरण उस पांडुलिपि सदृश है जिसकी पुष्पिका से विदित होता है कि शोधक खिड़िया आईदान ने 'शीत तप और वाय का कष्ट सहकर और दुख पाकर यह शोधकार्य किया जिसके परिणामस्वरूप उसकी कमर (कड़ीयां) और गर्दन टेढी हो गई और जिसकी की चार पोथियां समत 1931 मिती चैत सुदि 12 शनिवार को जोशी साहिबराम को 'शामल' रखकर शोधी ।' निष्कर्ष संभव है कि हमारी आधार-प्रति उक्त पुष्पिका वाली प्रति से तय्यार की गई होगी ।

जोधपुर की ख्यात की अपनी अन्य विशेषता है । जोधपुर राज्य अथवा मारवाड़, इतिहास में यहाँ के कई शासकों के शौर्य, प्रतिभा एवं राजनैतिक सूझ, राज्य के विस्तार और इसके सामरिक महत्व के कारण, विशेष स्थान रखता था। क्षेत्रफल के लिंहाज से विलीनीकरण पूर्व जोधपुर, राजस्थान का सबसे बड़ा और देश का तीसरा बड़ा राज्य था । मुगल राज्य में यहाँ के शासकों को सर्वोच्च, सप्त हजारी, मनसब, तक प्राप्त हुआ था। यहाँ काव्य अथवा गद्य में ऐतिहासिक अभिलेख/सामग्री/मजमून तय्यार करने अथवा वंशावली रखने और महत्वपूर्ण घटनाओं का विवरण तय्यार करने की परंपरा राव जोधाजी द्वारा मंडोर पुनः जीतने के समय पन्द्रहवीं सदी के उत्तरार्द्ध से है । अधिकांश सामग्री राजस्थानी भाषा में है ।

यहाँ के इतिहास संबंधी दूसरी विचारणीय बात यह है कि जोधपुर नगर और गढ मुगलों के वास्तविक शासनकाल की दो शताब्दियों में अकबर के शासनकाल में बीस वर्ष संवत् 1663 से 1683 तक और महाराजा अजीतसिंह जी के समय में तीस वर्ष सन् 1678 से 1708 तक मुगलों के कब्जे में रहा और यहां राठौड़ शासन इन अवधियों में समाप्त प्रायः हो गया था । मरहठा वैभव के युग में सर्वत्र दक्खनियों का दबदबा था। दिल्ली सिंहासन के नाममात्र के अधिकारी मुगलिया बादशाह कमोबेश मराठों के संरक्षण में, उनकी दया पर, दिन काटने वाले वेतनभोगियों के समान थे । राजपूत राज्यों में जोधपुर ने मरहठा प्रभुत्व को सीमित रखने के लिये सर्वाधिक प्रयास किये । अन्य प्रमुख राजपूत राज्यों की तुलना में जोधपुर का विरोध प्रभावी और दीर्घ रहा। ख्यात के प्रस्तुत विभाग से संबंधित राठौड़ राजाओं के काल में एक ओर जोधपुर का अभ्युदय और महत्व बढ़ा तथा दूसरी ओर मुगलों का अधोपतन और मरहठों का उत्थान हुआ । स्वाभाविक ही था कि दोनों की महत्वाकांक्षाओं के टकराव की इस अवधि में ऐतिहासिक सामग्री को सुरक्षित रखने की दिशा में, शांति और व्यवस्था के अभाव के कारण समुचित ध्यान नहीं दिया जा सका। राज्य के इतिहास लेखन को इन व्यवधानों से जो हानि हुई उसकी कल्पना सहज ही की जा सकती है । राजनैतिक

उथल-पुथल, अराजकता और अनिश्चितता की इन अवधियों का इतिहास लेखन पर दुष्प्रभाव अपेक्षित था। ओझा ने यहाँ तक कहा है कि 'इतिहास की बहुत सी सामग्री जोधपुर के शासकों के निरन्तर झगड़ों में फंसे रहने के कारण नष्ट हो गई।' महाराज रामसिंह और महाराज भीमसिंह के समय आपसी अनबन और उत्तराधिकार इत्यादि से उत्पन्न गृह-युद्ध और अंतर्कलह का कुप्रभाव इतिहास संरक्षण एवं लेखन पर पड़ने की कल्पना स्वाभाविक होगी।

अवश्य ही इन घटनाओं तथा परिस्थितियों एवं उपलब्ध जानकारी पर विचार कर विद्वान इस मत पर पहुँचे कि 'राजकीय इतिहास जो "जोधपुर राज्य की ख्यात" नाम से प्रसिद्ध है, महाराजा मानसिंह जी के समय में लिखा गया था। इसमें आरंभ से लेकर महाराज मानसिंह जी की मृत्युतक का हाल है।'

प्रस्तुत रचना के संपादन की आधार प्रति, जैसा कि संकेत दिया जा चुका है, मानसिंह जी कालीन उक्त खिड़िया आईदान की रचना की प्रतिलिपी है। प्रतिलिपिकार ने कुछ जानकारी पुष्पिका के रूप में यों दी है।

'ईती महाराजाधिरा(ज) म्हाराजाजी श्री श्री 108 श्री मानसिंह जी रे राज री ष्यात संपूरण। वाचे जिणने पांलागणो आसरीवाद वंचासी। दसकत जोसी आईदान . . . । और आखर ऊंचे नीचे आयो हुवे तो; रसूं दीरघ में फरक हुवे तो माफ करावसी। जोधपुर मधे (मध्ये ?). . . . ।

राज्य के शुरु के इतिहास संबंधी ख्यात के अंशों में अधिक और बाद में कम बार ख्यातकार ने उल्लेख की पुष्टि में यदाकदा दोहे, कवित्त आदि उद्धृत किये हैं। ऐतिहासिक घटना के साक्ष्य स्फुट काव्य को 'साख री कविता' नाम से अभिहित किया जाता है। खेद के साथ स्वीकारना पड़ता है कि लिपिकार ने साख के दोहे कवित्त लिखते समय क्षम्य से अधिक गलतियाँ की है। प्रकटतया लिपिकार डिंगल काव्य की विशेषताओं से ही नहीं छंदशास्त्र के सामान्य नियमोंसे भी भलीभांति परिचित नही थे। यंत्रवत् त्रुटियों कों टालने के प्रयास का अभाव प्रति में खटकता है। अच्छा हुआ कि लिपिकार ने साख के कवित्त - जो प्रचुर संख्या में है - अधिक संख्या में समाविष्ट नहीं किये। हमारा प्रयास रहा है कि उद्धृत छंदों का यथा संभव सही पाठ दें।

राठौड़ों के आदिपुरुष से आरंभ होने वाली इस ख्यात के प्रारम्भिक भागों की कमजोरियों और कमियों पर इतिहासकार विस्तार से अपने विचार प्रकट कर चुके हैं। इतिहास लेखन और ऐतिहासिक सामग्री संरक्षण के प्रति उदासीनता इन कमजोरियां का स्पष्ट कारण है। प्रारम्भिक काल संबंधी प्रामाणिक लिखित अथवा अन्य साक्ष्य उपलब्ध नहीं होने से ख्यातकार एवं उन व्यक्तियों ने, जिन्होंने जानकारी बनी रखने की ओर यदाकदा ध्यान दिया, दंतकथाओं और अवधारणाओं के साथ-साथ कतिपय गैर ऐतिहासिक दृष्टिकोणों का अवलंबन किया। परिणामस्वरूप ख्यात के प्रारम्भिक भागों को इतिहास लेखन में काम लेते समय बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता है। किन्तु बिना काम लिये काम भी नहीं चलेगा क्योंकि मान्यता प्राप्त ऐतिहासिक सामग्री का क्षेत्र

विशाल होने से क्षेत्रीय इतिहास को उसमें नगण्य स्थान मिला है। हमारे क्षेत्र की राजनैतिक उथल पुथल और राज्य निर्माण में सफल राजवंशों के इतिहास की ठीक जानकारी हासिल करने के इच्छुक शोधकर्त्ता का क्षेत्र प्राय: क्षेत्रीय सामग्री तक सीमित है जिसमें ख्यातों को मुख्य और काव्य को गौण स्थान देने के सिवाय चारा नहीं है।

सदैव अपने महत्व के अनुरूप प्रभाव अर्जित करने वाले राजस्थानी भाषियों ने गतिशीलता की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए अन्य भाषाओं से शब्द लेने में संकोच नहीं किया। ऐसे कई शब्दों के तत्सम रूप राजस्थानी का अंग बने यह आश्चर्य की बात नहीं। आश्चर्य की बात तो यह है कि कतिपय विदेशी शब्दों का राजस्थानी में अर्थ सर्वथा पृथक् हो गया। यथा शब्द शैतान से निकले राजस्थानी शब्द शैतान का अर्थ दीर्घकाय होता है और 'जालम' का अर्थ क्रूर नहीं यहाँ जोरदार है। ख्यात में बहुतायत से फारसी से लिए राजस्थानी के शब्द है।

जोधपुर राज्य संबंधी ख्यातें अच्छे राजस्थानी गद्य का उदाहरण मानी जाती है। प्रौढशैली और अविकल सहज प्रवाह इनकी अभिव्यक्ति की उल्लेखनीय विशेषताऐं हैं। कुल मिलाकर पाठ रुचिकर है। लिखावट में शब्दों के बीच में जगह न छोड़ने से उत्पन्न प्रवाहिक व्यवधान पर काबू पाने के बाद पाठक स्वत: शैली के प्रति आकर्षित होता है। ख्यात में तत्कालीन दरबारी चाल-चलन, रीति-रिवाज मान्यताओं का परिचय सहज ही मिल जाता है। प्रस्तुत कृति में हमारा यह प्रयास रहा है कि भाषानुवाद में यथा संभव लेखंक के मूल आशय को अभिव्यक्ति मिले। राजस्थानी संस्कृति से जुड़ाव एवं तत्कालीन शासन संबंधी क्रियाकलापों के अध्ययन में रुचि से यह कार्य और सुगम हो गया।

कहना अनुचित नहीं होगा कि उपरोक्त निवेदन को ध्यान में रखते हुए ख्यातों का सावधानीपूर्वक उपयोग करना लाभप्रद है। ख्यात लेखन परंपरा के आरंभ होने के साथ ही तद्विषयक राजवंशों की पकड़ मजबूत हो जाने से और वैभव तथा प्रभुत्व की बढ़ोतरी के फलस्वरूप ख्यातों की प्रामाणिकता बढ़ गई। प्रस्तुत ग्रन्थ के लेखन काल के समय राठोड़ों की शक्ति बहुत बढ़ चुकी थी और इतिहास लेखन प्रशासनिक परिपाटी का अंग बन चुका था। इसलिये ख्यात का यह भाग उन कमियों से मुक्त कहा जा सकता हैं जिनका हवाला देकर ख्यातों का तिरस्कार किया जाता था। इस काल की ख्यात में पचासों ऐसे उद्धरण है जो सिद्ध करते हैं कि लेखक का दृष्टिकोण साहसिक और इतिहास एवं सत्य समर्पित है। इस संबंध मे यथा स्थान पहले कहा जा चुका है कि शासक के लिए अप्रिय सत्य देने से ख्यातकार ने आनाकानी नहीं कर अपनी रचना की प्रामाणिकता पर संदेह की गुंजाइश नहीं रखी। उम्मीद है सम्पूर्ण विवेचन को ध्यान में रखते हुए इस ग्रन्थ का अध्ययन लाभप्रद और उपयोगी सिद्ध होगा।

राज. प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान के तत्कालीन निदेशक श्री आनंदकुमार ने स्वागत योग्य प्रस्ताव व यथा समय सहयोग प्रदान कर इस कार्य को अल्पसमय में पूरा करने में सहायता की । हम उनके तदर्थ आभारी है ।

कैलाशदान उज्जवल
पुष्पेन्द्रसिंह

श्री गणेश जी महाराज

माहाराज अभेसिंहजी पुत्र अजीत सिंहजी का जन्म विपदा काल में समत् 1759* की मिगसर कृष्णा 14 शनिवार को जालोर में हुआ तथा समत् 1781** की श्रावण कृष्णा सप्तमी शुक्रवार को बादशाह की सेवा में थे तब राजतिलक हुआ। समत् 1805*** की आठ [1] शुक्ला पूर्णिमा सोमवार को वे अजमेर में 46 वर्ष 7 माह 15 दिन की आयु प्राप्त कर परलोक सिधाए। उन्होंने 24 वर्ष 11 माह 23 दिन राज्य किया जिसकी ख्यात का विवरण इस प्रकार है —

जोधपुर में महाराजा अजीतसिंह जी का स्वर्गवास होने पर माहाराज अभैसिंहजी की आंण-दुहाई[2] जारी हुई। महाराजा वखतसिंह ने दिवंगत माहाराजा का विवरण दिल्ली लिख कर पठाया तब महाराजा अभयसिंह जी ने जमना नदी पर पांणीवाड़े[3] स्नान करने पधारे। समत 1781 की श्रावण कृष्णा सप्तमी को राजतिलक विराजमान हुए। बादशाह का मुजरा करने पहुंचे तब बादशाह ने अपने हाथ से केसर का तिलक किया।

मोतियों के अक्षत चस्पा किए, सिर पांव, हाथी, किलंगी वगैरा इनायत किए, हफ्त-हाजारी[4] मन सब हुआ। सदैव वत पद प्रतिष्ठा हुई और महाराजा अजीत सिंह जी के समय जो परगेन जब्त हुए उनमें से इतने इन्हें प्रदान किए 1 नागोर, 1 केकड़ी, 1 घड़ियाली, 1 फूलिआ, 1 परबततसर, 1 मारोठ, 1 .... कुल 7।

भंडारी रुगनाथ तो हुजूर के पास दिल्ली में था तथा प्रधान भंडारी खींवसी, पंचोली रामकिशन, खानसमा[5] पुरोहित रणछोड़ वगैरा एवं अन्य खास-पासवान सभी देश[6] में थे। जयसिंह जी जयपुर[7] ने अपनी पुत्री की अभेसिंह जी के साथ सगाई की और विवाह करने का निवेदन किया तब सरदारों ने महाराजा से प्रार्थना की कि देश लौटने के बाद आमेर जाकर विवाह करें। यह प्रार्थना महाराज को पसंद नहीं आई और भाद्रपद सुदि अष्टमी को मथुरा पधार आमेर जयसिंह जी की पुत्री तथा महाराजा संग्रामसिंह जी की दोहित्री से विवाह किया, सरदारों की प्रार्थना उपरांत काम किया इसलिए सरदार रवाना हो गए, उनकी सूची।

---

* सन् 1701 ई.

** सन् 1723 ई.

*** यहाँ संवत् 1806 होना चाहिये। सन् 1748 ई.

1. यहाँ आषाढ होना चाहिये।
2. राज्याभिषेक की घोषणा।
3. मृत्यु संस्कार संबंधी स्नान जो किसी निर्दिष्ट जलाशय में किया जाता है और जलांजलि दी जाती है।
4. सात हजारी
5. एक पदनाम, भोजनालय अधिकारी।
6. मारवाड़ राज्य
7. महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय, जयपुर।

2

खांप[1] चांपावत

सगतसिंह पुत्र आई दान जी पट्टे गांव रोहट ।
अगर सिंह पुत्र सबल सिंह पट्टे गांव भरनडां ।
नाहर खान पुत्र सबल सिंह पट्टे गांव विजियासणी ।
जोरावर सिंह पुत्र उदेभांण पटेगांव चिरपटियो ।
रांम सिंह पुत्र कूंपा पटे गांव समाड़ियो ।
जेतसिंह पुत्र सबल सिंह पटे गांव थारासणी ।
अनोप सिंह पुत्र वीरमदे पटे गांव गंठियो ।
विसनसिंह पुत्र दलपत पटे गांव वीठोरो ।
हरकिसन पुत्र मांनसिंह पटे गांव गागूरड़ो ।
जोरावर सिंह पुत्र दोलत सिंह पटे सोनेई ।
किल्यांण सिंह पुत्र दोलत सिंह पटे गांव धणलो ।
देवकरण पुत्र विहारीदास पटे गांव जोगवास ।
अखेसिंह पुत्र जगरूप पटे गांव ढूढीयो ।
सवाइ सिंह पुत्र हरिसिंह पटे समदोलाव ।
स्यांमसिह पुत्र उरजन पटे गांव सिणलो ।
हाथीसिंह पुत्र फतेसिंह पटे सिणलो ।
रामसिंह पुत्र माधोसिंह पटे गांव फलासलो ।
विजेसिंह पुत्र फतेसिंह पटे गांव देवलियो ।
सुजांण सिंह पुत्र लालसिंह पटे गांव सीवांणियो ।
किरतसिंह पुत्र वाघसिंह
.... सिंह पुत्र .... सिंह पट्टे गांव ....

21

खांप कूंपावत[2] आसांमी 5 पाँच

हरभांण पुत्र भगवानदास पटे गांव खोखरो ।
सूरजमल पुत्र हरीसिंह पटे गांव सिरीयारी ।
बहादुर सिंह पुत्र कीरतिसिंह पटे गांव नाड़सर ।

1. राठौड़ों की शाखा — चांपा पुत्र रिड़मल के वंशज ।
2. राठौड़ों की शाखा — कूंपा पूत्र महाराज पौत्र अखेराज के वंशज ।

रघुनाथसिंह पुत्र श्याम सिंह पट्टे गांव रजलाणी
जोरावर सिंह पुत्र साहबखांन पटे गांव ईसाली ।
वगैरा और भी आसांमियां रवाना हुई ।

5

खांप जेतावत[1] आसांगी पांच 5
जेतमाल पुत्र सादुल पटे गांव वासणी ।
नाहरखां पुत्र जोरावरसिंह पटे गांव काकेलाव ।
विजेसिंह पुत्र गोरधन पटे गांव डारड़ो ।
रघुनाथसिंह पुत्र रूपसिंह पटे गांव सेबाज ।
बखतसिंह पुत्र मानसिंह पटे गांव सारंगवासणी ।

खांप करणोत[2] आसांमी दो 2
सिवकरण पुत्र खींवकरण पटे गांव बालोतरो ।
चेनकरण पुत्र दुरगादास पटे गांव समदरड़ी ।

2

खांप मेड़तिया[3] आसांमी तीन 3
जूंजारसिंह पुत्र अचलसिंह पटे गांव ईड़वो ।
जोधसिंह पुत्र हिन्दूसिंह पटे गांव बाजोली ।
दोलतसिंह पुत्र जूंजारसिंह चांदावत पटे गांव कोसाणो ।

3

खांप जोधा[4] आसांमी 4 चार
दुर्जनसिंह पुत्र सबलसिंह पटे गांव पाटोदी ।
रतनसिंह पुत्र देवकरण पटे गांव देधांणो ।

---

1. जैता पुत्र पंचायण राठौड़ के वंशज ।
2. करणा पुत्र रिड़मल राठौड़ के वंशज ।
3. दूदा पुत्र राव जोधा के वंशज ।
4. मालदेव पुत्र राव गांगा के वंशज ।

माल पुत्र नाथा पटे गांव खुर्द आंतरोदी ।
उदेभांण पुत्र विहारीदास पटे गांव धनेरियो ।

4

खांप ऊदावत[1]
अमरसिंह पुत्र कुसलसिंह पटे गांव नीबाज ।
जसकरण पुत्र प्रतापसिंह पटे गांव कुसालपुरो ।
भाखरसिंह पुत्र हृदयरांम पटे गांव गिररी ।
अभेरांम पुत्र सादुल पटे गांव विरोल ।

खांप करमसोत[2] आसामी तीन
राठोड़ उदयसिंह पुत्र हरनाथ सिंह पट्टा गांव खीवंसर
मोहकम सिंह पट्टे गांव आचीणो
सगतसिंह पुत्र विट्ठल दास पट्टे गांव डांवरौ

खांप भदावतों[3] में (1) मांडण सिंह पुत्र जेतसिंह पट्टे गांव मढलो
(2) मेगराज पुत्र करण पट्टे गांव फालको
(3) किशऩ सिंह पुत्र गोरधन पट्टे

और भी कई सरदार तो अपने घर गए और कइयों ने अणदसिंहजी[4], रायसिंह जी[5] का साथ दिया । राजवी किशोर सिंहजी[6] अपने ननिहाल जैसलमेर चले गए ।

सोजत का हाकिम धनरूप था । रायसिंह जी तथा अणंदसिंह जी उपद्रव कर रहे थे । सोजत हकूमत जोधपुर राज्य के अधीन करने के लिए महाराजा बखतसिंह जी ने मनरूप को मदद सहित भेजा था ।

1. ऊदा पुत्र सूजा राठौड़ के वंशज ।
2. करमसी पुत्र जोधा के वंशज ।
3. भदावत - ? संभवतः करमस्यात राठौड़ों की एक उप शाखा ।
4,5.6. स्वर्गीत महाराज अजीतसिंहजी के पुत्र ।

भंडारी विजैराम मारोठ की फौज लेकर सोजत पर भेजी सेना की सहायता को आ रहा था उसी दौरान सोजत के जो जेतावत,[1] कूंपावत[2] गढ में थे उन्होंने अणदसिंह जी का अमल[3] कर लिया, भंडारी धनरूप और मनरूप दोनों को कैद कर लिया ।

जैतारण हाकिम भंडारी गोरधन पुत्र मेगराज दीपावत था जिसे जैतारण के उदावतों ने योजना बना कैद कर लिया । जैतारण पर कब्जा कर लिया ।

भंडारी विजैराम के साथ मारोठ के मेड़तिया थे जिन्होंने उसे कैद नहीं करने दिया और मेड़तिया[4] सरदार विजैराम सहित जोधपुर आए ।

राठोड़ सगत सिंह पुत्र आईदान[5] रोहट को आया सुना तब महाराज बखतसिंह जी ने आदमी भेज बुलाया तो उसने निवेदन प्रेषित किया कि हम तो महाराजा अजीतसिंह जी के पुत्रों के सेवक हैं किन्तु आप दोनों ने भंडारियों के कहने में आकर ठीक नहीं किया ।

ऐसा आपको नहीं करना था । राज तो आपको ही मिलता । महाराज से हमने तत्पश्चात अरज की थी कि अभी विवाह नहीं करें किन्तु उन्होंने स्वीकृत नहीं की । जैसिंहजी ने सब बुरे काम किए है । परन्तु भंडारी रुगनाथ के कहे इतने काम हुए और भी भंडारी सरदारों की खींचतान करते हैं जिससे सरदार नाराज होते हैं तथा राठौड़ नाखुश है भंडारियों से । इसलिए भंडारियों को आप कैद करें तो सरदार मान जायेंगे और देश का उपद्रव समाप्त हो जायेगा । तब भंडारियों को कैद करने की हां भरी । सगत सिंह और बखत सिंह जी देश का प्रवन्ध करने को चढे तथा पंचोली केसरी सिंह के झालरै[6] के पास डेरा किया । समत् 1781* के कार्तिक माह में सिकदार[7] दयालदास को भंडारियों को कैद करने का हुक्म दिया । अरजुन फिटक[8] और खींवा देवड़ा[9] कैद की आज्ञा का सुनकर स्वत: भंडारी खींवसी की हवेली गए, एवं भंडारी थानसिंह पुत्र खींवा तथा मुलकचंद पुत्र पोमसिंह को मार डाला । बखतसिंह जी के डेरे केसरीसिंह के झालरे पर थे वहां भंडारी विजैराम एवं अनोपचंद सुत रुगनाथ तथा व्यास दीपचंद, व्यास फतैचंद को पकड़ कैद कर लिया तब पकड़ा धकड़ी में चेला धना के हाथ की तलवार का वार अनोपसिंह की पीठ पर लगा । वह बचा नहीं और भंडारी भींव पुत्र उदैकरण को चेले गोपी ने मार डाला ।

---

* सन् 1723

1,2. राठौड़ों की दो खंप 3. शासन स्थापित करना

4. राठोड़ों की दूदावन खांप जिन्हें उनकी प्रथम राजधानी मेड़ता के पीछे मेड़तिया कहते हैं ।

5. चांपावत शाखा का सरदार । 6. पक्का कुंड जिसकी सभी दिशाओं में पगथिए होते हैं ।

7. एक ओहदा

8. राठौड़ राजपूतों की अल्पज्ञात उपजाति फिटक पुत्र थांथी पौत्र केलण प्रपोत्र राव रायपाल के वंशज ।

9. चौहान राजपूतों की शाखा

अरजुन एवं खींवा ने बखतसिंह को जाकर हाजरी दी और कहा कि हम थानसिंह और मूकचंद को मार कर आए हैं । उन्होंने फरमाया कि बिना आज्ञा क्यों मारा । एतराज किया और गाली दी तब फिटका उरजा[1] ने कहा कि आप तो भंडारियों को नहीं मरवाते किन्तु हमारे स्वामि महाराज अजीतसिंहजी को भंडारियों ने मरवाया इसलिए, हमने उन्हें मारा है और भी अनुचित बोले तब राठोड़ सगतसिंह जी ने तथा अभै सिंह जी ने फिटक उरजे को मार डाला । खींवा भागकर जैसलमेर किशोरसिंह जी के पास गया सो बाद में कमा[2] चीता[3] को भेजा जिसने धोखे से उसे मारा ।

चांपावत महासिंहजी को सेना देकर मेड़ता भेजा । सो खींवसी को कैद करने आदमी मेड़ता गए किन्तु खींवसी के डेरे रू. 500/- प्रतिदिन पर सेवक उणियारा के नरुका[4] हरनाथ सिंह के डेरे में जा बैठा[5] इसलिए हाथ नही आया ।

भंडारियों को कैद कर के महाराज अभैसिंहजी को अरज करवाई कि सरदारों का बिखराव समाप्त करने के लिए इन्हें कैद किया है, और काम पंचोली[6] बगसीराम को सौंपा है । वहाँ भंडारी रुगनाथ आपके पास है सो पकड़वा कर कैद कर दिरावें । महाराज को यह संदेश मथुराजी के अपने डेरे पर मिला तब भंडारी रुगनाथ को बुलाकर संपूर्ण हकीकत बताई और फरमाया कि सरदारों का असंतोष समाप्त हो तब तक तुम डेरे में बैठे रहो । इस प्रकार नजरबंद किया । इससे कई सरदार मान गए ।

रूगनाथ की नजरबंदी पर वहां दीवान का काम पंचोली रामबगस तथा बालकिशन से करवाया ।

समत 1781* के आषाढ में बादशाह से सीख[7] लेकर मथुराजी से हुजूर जोधपुर पधारे । राजा जैसिंह जी की ओर से भेजे 5000 सवारों सहित लाला शिवदास एवं नारायाण दास को साथ लिया ।

जोधपुर पहुंच भंडारी रूगनाथ इत्यादि सभी भंडारियों को रिहा कर दिया तब सरदार फिर नाराज होकर कूच कर गए । वे जालोर की ओर गए । महाराजा स्वयं उन्हें मनाने पीछे गए । सरदारों

---

* सन् 1723

1. अरजुन
2. नाम
3. रावत राजपूतों की चीता खांप
4. कछवाहा राजपूतों की शाखा
5. शरण ले ली
6. राजवर्गी कायस्थ 7. रुखसत, इजाजत

की रजाबंदी हेतु भंडारी रूगनाथ एवं खींवसी को फाल्गुन में पुन: कैद कर दिया। दीवान पद मूता गोकलदास समदड़िया को दिया और जोधपुर सूबे की सेवा सिघवी जोधमल को सौंपी। तत्पश्चात् जालोर से सोजत होते हुए मेड़ता पधारे।

बगड़ी ठाकुर जेतावत अचलसिह गांव खोखरावालों के बड़े-बूढ़ों की मेड़ता के महलों में गांव सरनाबड़ा के सिवसिंह से हत्या करवाई।

तत्पश्चात् मेड़ता से प्रस्थान कर नागोर पधारे। जहां राव इंदरसिंह जी ने गढ से सामना किया। एक माह लड़े और फिर बातचीत कर इंदरसिंह जी नागोर से चले गए और महाराजा का अमल नागोर पर हो गया। पं. राम किशन को सूबेदार रखा। किलेदार परबतसर की बसी के चांदावत ईसरी सिंह को नियुक्त किया।

एतद् पश्चात् महाराज बखतसिंह जी ने सैन्य संगठन कर अणद सिंह जी रायसिंहजी पर, जो देश में लूट करने चढ़े और उन्हें देश से निकाल मेड़ता पधारे। दोनों महाराजाओं[1] का मिलाप हुआ।

समन 1782* की कार्तिक में महाराजा बखतसिंह जी को राजाधिराज का खिताब महाराज[2] ने इनायत किया और जागीर में नागोर प्रदान किया। पृथक् राज्य स्थापित किया तथा मुत्सद्दी, खवास-पासवान वगैरा सेवक दिये।

महाराज बखतसिंह जी का जन्म समत् 1763** के भादवा वद अष्टमी का था।

राजाधिराज को इनायती का विवरण : जड़ाऊ रकमें दी, जवाहरात का सिर पाव, मोतियों की माला 1, मोतियों की किलंगी 1, तलवार 1, कटार 1, सिरपेच 1, हाथी 4, घोड़े 100, ऊंट 40, तोपखाने के नग 3।

मुत्सदी, खवास पासवान एवं सेवकों का विवरण इस प्रकार है —

दीवान मूता अमरदास

2 बख्शी पं. लालचंद, सिधी सरूप मल

2 पुरोहित पदमसिंह पुत्र अखैराज एवं केसरिसिंह पुत्र अखेराज

1 बाहठ करणीदान पुत्र केसरीसिंह

---

* सन् 1724 ** सन् 1705

1. महाराज अभैसिंहजी एवं बखतसिंहजी 2. म. अभैसिंहजी

1 व्यास हरलाल पुत्र रूपचंद

4 खीची - करणो, फत्तो, जगनाथ, हरनाथ

3 धावड़ बंदरा, धांधल हरदास, धां. नरहरदास

3 गैहलोत - अणदराम, हरराम, दरजी भूरो

1 मांगलीया किसनदास रसोड़े का दरोगा

1 जोसी देवदत्त रसोड़े का मुसरफ कमलापत रांमदेव का भांणेज

2 अबदार साहब खां दूसरा और

4 पड़िहार - गिरधर, फतो, जसो, नाथो सोहाणी

2 साहांणी मनो अगोलियो हररांम।

कुल 26

इतने सेवक साथ भेजे। राजाधिराज बखतसिंहजी ने नागोर राज्य में प्रवेश किया। श्री हुजूर साहिब का बख्शी पं. रामकिशन था उसे और मांग कर लिया। बाद में पंचोली लालचंद जी को दीवानी दी और मूता अमरदास, सिंधी सरूपमल को सीख दे दी। और भंडारी मनरूप व धनरूप अणदसिंह जी रायसिंह जी की कैद में थे सो लाख रुपियों का हर्जाना भरकर आये और भंडारी गोरधन भी कैद में था सो रुपये पच्चीस हजार भरकर आया।

अणदसिंह जी रायसिंह जी ने धरती में उत्पात मचाया उनके विरुद्ध अभियानों के चलते अणदसिंहजी रायसिंहजी के पास जो सिरदार थे उनमें से कितने ही तो वापस लौट आये और जो सिरदार उनके पास रहे उनका विवरण —

1 रा. हृदयराम पुत्र राजसिंह खांप ऊदावत पटे रायपुर।

1 रा. मोकमसिंहपुत्र जोधसिंह जोधा पटे गांव बलाड़ो।

1 रा. दोलतसिंह पुत्र जुंजारसिंह चांदावत[1] पटे कोसांणो।

1 रा. उदेसिंह पुत्र हरनाथ करमसोत पटे खींवसर।

4

1. मेड़तिया राठौड़ों की एक उपशाखा चांदा पुत्र वीरम पौत्र दूदा के वंशज।

संवत 1782* कार्तिक में ओहदे इस प्रकार इनायत हुए ।

1 परधांन चांपावत महासिंह पुत्र भगवानदास पटे पोकरण, भंडारी खींवसी की तागीर ।

1 दीवानगी भंडारी रुघनाथ को दी ।

1 बगसी (पदवी) पं. रामकरण को इनायत थी उसे तो नागोर ले गये और कांम भाई बालकिसन करता ।

1 खांनसांमा प्रोहत रिणछोड़दास पुत्र जैंदेव

1 जोधपुर हाकम भं. अनोपसिंहपुत्र रूघनाथ को ।

1 देराश्री व्यास फतेचंद पुत्र दीपचंद रामशरण हुआ तब दोलजी पुत्र फतेचंद को और फिर उदेचंद पुत्र दीपचंद को दिया ।

1 बारठ गोरखदान पुत्र केसरी सिंह

1 राजगुरु प्रोहित सूरजमल पुत्र अखेराज (ति) वरी का ।

1 दोढीदारी गूजर विजेराम को दी

1 जोधपुर सिकदार (री) सोभावत दयालदास, किसनदास, प्रागदास इन तीनों को एक साथ हुई और कोटवाली किसनदास के पास नहीं, दयालदास के पास रही ।

10

भं. राय खीवसी तो जोधपुर में घर पर ही रहने लगा और प्रधानगी के काल में जो लवाज़मा था वह बहाल रहा । प्रमुख डेरा रहता था ।

जेठ वद 6 को भं. राय खीवसी मेड़ता में रामशरण हुआ । पीछे लड्डुओं का मृत्युभोज हुआ । महाजनों (व्यापारियों) को प्रति परिवार 5 रुपये 'लोहण' के दिये गये । खीवसी के पुत्र अमरसिंह को दिल्ली में 'तन दीवान'[1] किया और पादशाह जी से (के सम्मुख) मुजरा करवाकर सिरपाव दिलवाया । भंडारी गिरधारीदास को सुबेदारी दी और खीवसी के भाई भतीजों को भी खातिर दिलासा हुई ।

संवत 1785** में दिल्ली में भंडारी रुघनाथ अनोपसिंह को कैद हुई । अनोपसिंह की बेटी का विवाह था और बारात बीकानेर से आई थी । सो विवाहोपरांत बारात को रोक लिया गया और बाद में विदा किया गया ।

* सन् 1724 ई. ** सन् 1727 1. कार्यवाहक दीवान

और संवत 1781* में महाराज दिल्ली से हरद्वार जी पधारे तब सभी ने मुंडन करवाया और खीवसी ने नहीं करवाया (कहा) कि मैं जैन हूं सो मैं मुंडन उपरांत परिवार में नही रह सकूंगा ।

और भंडारी खीवसी के चल बसने की खबर (जब) दिल्ली पहुंची तब महाराज ने फिक्र किया और 'नौबत' एक 'टंक' नहीं बजी । और फुरमाया कि खीवसी के भरोसे रुघनाथ को कैद किया था सो यह हुआ । अब दीवानगी अमरसिंह को देंगे सो अमरसिंह के निवास डेरे पर पधारकर मातमपुरसी की और दीवानगी का सिरपाव इस प्रकार दिया ।

विवरण —

जड़ाऊ, पालखी, सिरपेच, किलगी जड़ाऊ, हाथी, मोतियों की कंठी, मोती, कड़ा, जड़ाऊ, बैठने का सम्मान (कुरब) ।

भंडारी गिरधरदास को सूबेदारी, सिरपाव, बैठने का सम्मान (कुरब), पालकी, मोतियों की कंठी, सिरपेच इत्यादि ।

भंडारी विजै राज को सिरपाव तथा परबतसर मारोठ की हकूमतें ।

भं. मनरूप को सिरपाव और मेड़ता भेजा ।

भं. रतनसिंहको सिरपाव दिया ।

भं. अमरसिंह से बादशाह को सलाम करवाई और सिरपाव दिया ।

संवत् 1785** में भं. रुगनाथ के डेरे अरोगने पधारे, क्योंकि रुगनाथ के पोता हुआ था । तब रुगनाथ ने रु. 5000/- नजर किए और रु. 1000/- न्यौछावर किए ।

संवत् 1785 में धांधलों[1] से पेशकशी (दंड, जुर्माना) निश्चित की ।

रु. 15001/- धांधल बैरीदास (से) पट्टे गांव बेरू

रु. 5501/- भगवानदास (से) पट्टे गांव नांधड़ा

रु. 801/- उदैराम (से) पट्टे रोहावास ।

रु. 2151/- नवीसदारों से

---

* सन् 1723 ** सन् 1727

1. धांधल पुत्र आसथान राठौड़ के वंशज ।

रु.. 801/- हरदास (से) पट्टे गांव रोहला

रु. 751/- हरीदास (से) पट्टे गांव पेसवासिया

रु. 9001/-[1] केसरीसिंह (से) पट्टे गांव पोपावस

रु. 4001/- केसोदास (से) पट्टे गांव बूदोलाव

रु. 34008/-

. माहाराज अभैसिह जी ने संवत् 1781* के माध माह में मेड़ता से दिल्ली की ओर कूच किया तब श्री राजाधिराज[2] को देश[3] का जिम्मा सौंप कर मेड़ता रखा और उनके पास भंडारी अनोपसिंह को रखा।

परबतसर के पड़ाव श्री माहाराज जी को चेचक निकली जो ठीक होने पर परबतसर में शीतला माता का देवालय बनवाया। सोने चांदी के आभूषण भेंट किए और जोधपुर स्थित शीतला माता के देवालय को भी आभूषण भेंट किये। पूरे प्रदेश में शीतला माता की पूजा हुई फिर वहां से प्रस्थान कर दिल्ली पहुंचे। बादशाह से मुजरा (सलाम) किया। नवाब खान दौरा बख्शी से मित्रता बहुत बढ़ी।

माहाराज अभैसिह जी जब देश में थे तब पीछे से नवाब रोशन दौला को, जिसे लोक तुर्राबाज खां कहते थे, बादशाह ने दीवान नियुक्त कर दिया था। वह माहाराज के सम्मान स्थान पर खड़ा हो गया। जब माहाराजा सलाम करने पधारे तब आगे रोशन दौला खड़ा था। माहाराज खवा खसकर[4] उसके पास पहुंचे और उन्होंने अपनी कटार पर हाथ धरा। तब नवाब खांन दौरा ने माहाराज को ऊपर खड़ा किया और बादशाह ने दरबार बरखास्त कर दिया। माहाराज अपने डेरे पधारे। सभी सरदारों, मुत्सद्दियों को बुला फरमाया सेवा करते बादशाह ने दूसरे को मेरा स्थान दिया इसलिए अबकी बार फसाद कर रोशनदौला को मारेंगे। बाहर तुम झगड़ा कर सको तो करना।

बाद में बादशाह ने दरबार किया तब सरदारों को तय्यार करके साथ लिया और झगड़ें की ठान घोड़े पर सवार हुए। बादशाह को खबर पहुंची कि महाराज झगड़े के विचार से पधार रहे हैं तो उन्होंने दरबार बर्खास्त कर दिया। जब माहाराज को इत्तला पहुंची की दरबार बर्खास्त कर दिया है तो वे बादशाह के यहां पधारे और निवेदन किया कि मेरे सेवा में होते हुए मेरा स्थान निश्चित नहीं रखा सो अरज यही है कि आप तो महलात में खड़े रहें और इधर से तो मैं अपना दल लेकर आऊं और उधर से तुर्रेबाज खां अपना दल लेकर आवे और जिसकी जीत हो वह ऊपर का स्थान रखेगा। आप हम दोनों को आज्ञा दीजिए। जो मार लेगा वही स्थान का हकदार होगा। इस पर बादशाह ने

---

* सन् 1723

1. यहाँ पर 5001/- होना चाहिये।
2. बखतसिंहजी।
3. जोधपुर राज्य।
4. कंधे से हटाकर, हठात।

माहाराज को हर प्रकार से आश्वस्त किया और वापिस डेरे भेजा तथा फिर कभी अन्य ढंग से आम दरबार नहीं किया।

जैसलमेर की ओर से राजवी किशोरसिंह जी सैन्य दल बना मारवाड़ में लूट खसोट करने आए। इधर से राजाधिराज बखतसिंह जी चढे गांव तिंवरी चंडालिया के पास संग्राम छिड़ा। वहां रतकूड़िये के कूंपावत कनीरांम पुत्र रामसिंह के हाथ से कोसाणा का चांदावत दौलतसिंह पुत्र जूंझार सिंह मारा गया। इस सेवा के उपलक्ष्य में राजाधिराज ने कनीराम को आसोप दिलाने का वायदा कर माहाराज अभैसिंह जी से निवेदन करके कूंपावत भींव पुत्र सबल सिंह से जब्त आसोप का हुक्म दिलवाया। भीव सांभर विजय के समय मारा गया था।

किशोर सिंह जी भागकर जैसलमेर पहुंचे और वहां से बीकानेर होते हुए आमेर जयै सिंह जी पास गए। बाद में संवत 1785* में किशोर सिंहजी ने जयसिंहजी से रुखसत लेकर खंडेला शादी की और जैसलमेर लौटे और पोकरण, फलोदी पर धावे किये।

राजाधिराज का डेरा बाहर था सो भाटी नाहरखांन की पुत्री का डोला आने पर विवाह कर पोकरण, फलोदी की ओर चढे। किशोरसिंह जी भाग कर जैसलमेर चले गए।

पोकरण नरावतौं[1] के थी जो जब्त कर चांपावत महासिंह पुत्र भगवानदास को इनायत की और भीनमाल (जो चांपावतों की थी) खालिसाह कर ली।

संवत् 1785 में अणदसिंहजी व रायसिंहजी ने जालौर के गांव में लूट की तब भंडारी अनोपसिंह जोधपुर से सेना लेकर चला। अणदसिंह जी रायसिंहजी भाग कर गुजरात प्रदेश में चले गए और भंडारी अनोपसिंह जोधपुर लौट आया।

उधर अणदसिंह जी रायसिंहजी, कंठा[2], पीलू[3] की मदद से बीस हजार की सेना लेकर आए जालोर क्षेत्र लूटा। राजाधिराज नागोर से जोधपुर पहुंचे। गोरा धाय की बावड़ी पर डेरा किया। भंडारी खींवसी ने उन्हें आगे नहीं जाने दिया। खींवसी ने मराठों से बात कर कंठाव पीलू को लौटा दिया और राजाधिराज ने अणदसिंह जी रायसिंह जी को मनाया।

ईडर राज्य माहाराज श्री अभैसिंहजी की मनसब में था वह ईडर राज्य भाई अणदसिंहजी रायसिंहजी को दिया।

संवत् 1785* के भादवा में रायपुर का टाकुर उदावत रिदैराम वगैरा आसामी 19 को जो अणदसिंह जी रायसिंहजी के साथ थे सेवा में ले ठिकाने बिठाया और नवाब सरविलंद अहमदाबाद सूबे जा रहा था उसकी महमान नवाजी कर भंडारी को जालोर तक उसके साथ भेजा।

---

*,** सन् 1727 1. नरावत - नरा पुत्र सूजा के वंशज (नरा राव सातल के गोद गया था।

2 व 3. मराठा सेनानायक

खंगारोत[1] देवीसिंह आमेर छोड़ कर भाग गया (पहाड़ी क्षेत्र) के गांव झाब में बसा जहां से आमेर प्रदेश में लूटपाट करने लगा। तब आमेर से सवाई जयसिंहजी मगरा की ओर बढे और नागोर से राजधिराज चढ कर जयसिहंजी के शामिल हुए। मेवाड़ से राणांजी की सेना आई। गांव झाब एवं श्यामगढ मगरे पर थे उन्हें जीता। चांग का मेर फता निकल भागा। उसके दो पुत्र मारे गए। तथा महिलाओं को पकड़ कर राजाधिराज ने मेड़ता भेज दिया। गांव चांगचितार में माहाराज का थाना रखा और गांव ब्यावर में राणाजी का थाना रखा। माहाराज ने यह सुना तब लिखा कि ब्यावर बदनोर[2] का गांव है इसलिए थाणा राठोड़ों का रहेगा। तब थाना निरस्त रहा तथा बाद में मगरा इलाका से कूच कर राजाधिराज एवं जयसिंहजी सीयाड़ पधारे। श्री गोवर्धन नाथजी के दर्शन किए और वहां राणा संग्राम सिंहजी से मिले। जब जयसिहजी का विवाह पीसांगन में करने का निश्चय हुआ तब राजाधिराज आगे पीसांगन पधारे। भादवा वदि 8 को विवाह हुआ।

काती वदि 14 दिवाली के दिन राणावत पृथ्वीसिंह पुत्र अरीसिंह की पुत्री से गांव में विवाह हुआ तथा कार्तिक सुदि 14 को पुष्करजी पधारे जहां से जयसिंहजी आमेर गए और राजाधिराज नागोर।

अहमदाबाद का सूबेदार सरबुलन्द मराठों (दखणियों) से मिल गया। बादशाही आदेशों का पालन करना बंद कर दिया। इस पर संवत् 1786* में बादशाह ने दिल्ली में महाराज अभैसिंहजी को अहमदाबाद का सूबा प्रदान किया और निम्नलिखित निवाजिश की —

सिरपाव, कडा, मोती, किलंगी, जड़ाऊ, तलवार, हाथी और रोकड़े रु. पन्द्रह लाख दिए।

वरत (लिखावट) रु. 12,00,000/- बारह लाख की अहमदाबाद की जमा पर कर दी।

बादशाही सेना लेकर उन्होंने दिल्ली से कूच किया। उन दिनों जयपुर नया बस रहा था। वहां जयसिहजी से मिले और कार्तिक सुदि में जोधपुर पहुंचे। भंडारी दौलत राम को हाथी पर चढा उसके हाथों शहर में रुपये उछलवाये। भंडारी अमरसिह को दिल्ली में छोड़ आए थे। (जिसने) बादशाह द्वारा दिए पन्द्रह लाख रुपए निकलवाकर भेजे।

अहमदाबाद पर कूच की तय्यारी की। राजाधिराज को बुलवाया। वे आए और राईकाबाग में खेमे लगाए।तथा कोटा से गुसांईजी श्री विट्ठलराम जी मुरलीधरजी को आमंत्रित किया। उनका पधारना हुआ। ठाकुर जी का मंदिर गांव चौपासनी में बनवाया एवं प्रति बस्ती (खेड़ा) रु. 1/- एवं गंवाई पेटिया तय कर दिया।

संवत् 1786** की मिगसर वदि 11 को नागोर में राजाधिराज के राजकुमार विजैसिंहजी का जन्म हुआ। बधाई आने पर (राजाधिराज) ने अपने डेरे से पं. लालजी को श्रीजी हुजूर के यहां बधाई देने भेजा तब खासा-सिरोपाव एवं मोतियों की कंठी इनायत की।

---

* सन् 1727 ** सन् 1728

1. कछवाहा राजपूतों की शाखा। 2. बदनोर राठोड़ों की जागीर में था।

संवत् 1786* की चैत्र कृष्णा 10 को जोधपुर से गुजरात पर चढाई के लिए प्रस्थान किया। डेरा गांव सालावास में हुआ।

भादराजूण के जोधा[1] रुष्ट हो घर जा बैठे थे और प्रदेश में बिगाड़ करते थे। इसलिए गांव धूनाड़ा के डेरे से राजाधिराज बखतसिंह जी को (उधर) विदा किया। उन्होंने जोधों पर पेशकशी लगा मालगढ़ के थाने के जोधों को साथ ले श्री हुजूर के जालोर से कूच करने के समय पहुंचे।

श्री माहाराज द्वारा कूच किए जाने पर महाराणी कछवाहीजी[2] एवं जनाना सरदारों (राजलोक) वगैरा साथ लिया लेकिन महाराणी नरुकी जी के संतान होने वाली थी इसलिए उन्हें जोधपुर में रखा।

सिरोही राज्यान्तर्गत गांव रेवाड़ा के लोग जालोर क्षेत्र में उपद्रव करते थे। जब माहाराज का डेरा हरजी-थांवला में था तब उन पर रेवाड़ा की ओर सेना की टुकड़ी भेजी। जंगल कटवाया, गांव पर धावा बोल मकानात तोड़ दिए और हल चला दिया। देवड़े[3] (रेवाड़ा के निवासी) गांव छोड़ भाग गए। वहां डेरा आषाढ माह तक रखा। राठोड़ हरीसिंह पुत्र सूरजमल निवासी धांधियां के गोली लगी। वह काम आया।

अन्य राजलोकों (जनाना) को तो थांवला से विदा किया, जो जोधपुर लौटे और महाराणी कछवाहीजी एवं शेखांवतजी को साथ रखा। थांवले से प्रस्थान हुआ। अगला डेरा सिरोही राज्य के गांव पोसालिआ में हुआ। गांव नष्ट किया। सिरोही के राव की खिराज तय की। राव उदैसिंहजी ने डोला भेजा। श्री हुजूर ने पोसालिआ में भादवा वदि 8 को शादी की।

भादवा वदि 1 को माहाराज कुंवर रामसिंहजी का (जोधपुर में) जन्म हुआ। बधाई आई।

श्री माहाराज सारणेश्वर महादेव के मंदिर दर्शनार्थ पधारे तब (सिरोही) राव पैरों पड़ा और पाडीव के देवड़ा नारायण दास को सेवा में दिया।

डेरा गांव मांडल हुआ और बाद में गांव खातीवाड़े, फिर दातीवाड़े और तत्पश्चात् पालणपुर में मुकाम दस हुए। वहां के डाभी और कोली नौकर रहे। परदेसियों की सेना पांच हजार हो गई। इस सेना पर मुत्सदी मूता गोपाल दास को नियुक्त किया।

राणी कछवाही जी और खवासजी को पालणपुर में रखा।

---

*,** सन् 1728   1. राव मालदेव के वंशज राठौड़ (जो उदयपुर राज्य में था)।

2. जयपुर नरेश जयसिंहजी की सुपुत्री राजकुमारी विचित्रकंवर जिनका विवाह सन् १७२३ में महाराज अभैसिंहजी से हुआ था।

3. सोनगरा चौहान राजपूत वंश की शाखा।

बादशाही खलीता तथा अहमदाबाद की सनद देकर सेर बिलन्द खां के पास पंचोली राजसी जाति झामरिया निवासी जोधपुर एवं पंचोली परमानंद जाति भीवांणी निवासी मेड़ता को भेजा। दोनों ने बादशाही खलीता और श्री महाराज का पत्र सेरबुलन्द को दिए और बताया कि सूबा माहाराज को मिला है इसलिए आप यहां से कूच कर दीजिए। नवाब ने जवाब दिया कि सूबा इन कागजात से नहीं मिल सकता। तलवारों से मिलता है। इस पर पंचोली राजसी परमानंद ने निवेदन किया कि तसल्ली रखिए तलवारों से ही लेंगे। दोनों और से कठोर शब्द कहे गए।

वृतान्त निवेदन होने पर माहाराज और राजाधिराज ने कूच किया। माहाराज की सेना में 20000 बीस हजार और राजाधिराज के 5000 पांच हजार अश्वारोहियों ने जोधपुर से प्रस्थान किया तब से पटायतों (उमरावों) को छोड़ वेतनभोगियों को प्रतिदिन प्रति अश्व आठ आना दिया जा रहा था।

पालणपुर से कूच कर डेरे सिधपुर लगाए। वहाँ से चले सो मंजिल दर मंजिल अहमदाबाद को दाहिनी ओर छोड़ भद्राकीला की ओर गांव सरवेजड़े डेरे हुए।

तत्पश्चात् संवत् 1787* की आसोज सुदि सप्तमी को अहमदाबाद के उपनगरों में मोरचे लगाए उनका विवरण इस प्रकार है —

एक मोर्चे में दाहिनी (जींवणी) मिसल[1] के सरदार (1) करणोत अभैकरण पुत्र दुरगादास (2) चांपावत महासिंह ठाकुर पोकरण (3) चांपावत करण पुत्र राज सिंह पाली ठाकुर वगैरा भंडारी गिरधरदास तथा एक मोर्चे में बांई (डावी) मिसल के सरदार (1) मेड़तिया शेर सिंह रियां व जोधा परतापसिंह पट्टे गांव खेरवा वगैरह।

एक मोर्चे पर मारोठ के मेड़तिया, चौरासी[3] का समस्त सरदार एवं भंडारी विजैराज इनके साथ मोर्चे एक में परदेसी तथा गुजराती सिपाही तथा भंडारी रतनसिंह ये मोरचा श्री दरबार का था। मोर्चा एक राजाधिराज का था जिस में सेनाध्यक्ष (फौज मुसाहिब) पंचोली लालजी को बड़ी कुमुक के साथ भेजा।

लड़ाई आरम्भ हुई। उभय पक्ष के तोपखाने आमने-सामने होकर गोले बरसाते रहे। आसोज सुदी 10 विजय दसवीं के दिन सिरबुलंद खां की ओर से शेख अब्दुलाखां, जमालखां, एहमदअली विशाल सैन्य दल लेकर मोरचों की ओर बढ़े। बांई (डावी) मिसल के मेड़तिया शेरसिंह पुत्र सरदार

---

* सन् 1729

1 व 2. राजदरबार में बैठने की व्यवस्था के अनुसार महाराज के दाहिनी ओर राव जोधा के भाइयों के वंशज यथा चांपावत, करणोत, कूम्पावत, जैतावत आदि बैठते थे जिन्हें जिवनी मीसल कहा जाता था तथा बांयी ओर राव जोधा के पुत्रों के वंशज यथा मेड़तिया (दूदावत) करमसोत जोधा आदि थे जिन्हें डावी मिसल कहा जाता था।

3. म्हारोठ इलाके के सभी चौरासी गांवों के

सिंह रियां के मोरचे पर आए और मोरचे पर दबाव पड़ा तब दाहिनी मिसल के सरदारों, करणोत अभैसिंह पुत्र दुरगदास एवं चांपावत करणसिंह पुत्र राजसिंह ने घोड़े बढ़ा ताकीद से शेरसिंह जी के मोरचे आकर शामिल हुए। भीषण संग्राम हुआ। नवाब के 300 आदमी खेत रहे एवं 125 घायल हुए। माहाराज के इस झगड़े में काम आए व्यक्तियों की सूची इस प्रकार है।

1 चांपावत करण पुत्र राजसिंह पट्टे पाली आयु 14 वर्ष।

2 गोयंद दासोत मेड़तिया गुलाबसिंह पट्टे पांचवो।

3 मेड़तिया भोमसिंह पुत्र कुशल सिंह वडी रियां के ठाकुर का काका पट्टे गांव सारासणी।

4 जोधा हटीसिंह पुत्र जोगीदास खेरवा की भायप (बांधव) का जिसने सिर कटे के बाद भी तलवार चलाई।

5 धांधल भगवानदास सोजत के गांव बूटेलाव का।

6 पुरोहित केसरीसिंह गांव खैड़ापा।

मोरचा निकल गया। इस लड़ाई की सूचना मिलने पर श्री महाराज व राजाधिराज दोनों चढ़े। अमराई तक पहुंच गए। नवाब की सैना को उपनगर की ओट मिली हुई थी महाराज की फौज खुले मैदान में थी। आमने-सामने तोपें चलीं। नवाबी तोपखाने से गोलाबारी ज्यादा हुई इसलिए घोड़े बढ़ाने को जगह नहीं मिली तब दोनों मालिकों एवं उमरावों के बीच मशविरा हुआ कि अपने पीछे हटने पर नवाबी सेना सरक कर नजदीक आ जावे तब लड़ाई करें तो ठीक रहे। यह विचार पांच सौ सात सौ कदम (पाऊंडा)[1] पीछे हटे। इस पर नवाबी सेना इनकी ओर आगे बढ़ी और चौड़े[2] दिखाई पड़ने लगी। तब तोपें आगे कर तीन अनी[3] गठित की। भंडारी विजैराज तो फौज लिए हरावल में था और दाहिनी बाजू अपने सैन्य दल के साथ भंडारी रतनसिंह तथा बांई बाजू की फोज लिए पंचोली लालजी था। तीनों ओर से घोड़े एक साथ उठाए। दोनों महाराज तीर कमान इत्यादि शस्त्रास्त्र से सुसज्जित अपने हाथियों पर आरूढ थे। राठोड़ों ने तलवारों से अच्छा प्रबल युद्ध किया। एक प्रहर लड़ाई हुई। वहाँ नवाबी सैना के पैर उखड़ गए। महाराज श्री की विजय हुई। उभय पक्ष के कई वीर मारे गए और घायल भी बहुत हुए। नवाब का तोपखाना छीन लिया, राज्य चिन्ह (निशान) ले आए। हाथी फते जंग छीन लिया। यह लड़ाई संवत् 1787* की आसोज सुदि दसवीं के सवेरे से दोपहर तक हुई।

---

*,** सन् 1729

1. लम्बाई का नाप लगभग पाँच फुट = एक पाऊंडा

2. खुले में

3. सैन्य विभाग

नवाब की सेना के हताहतों की विवरण सूची इस प्रकार हैं —

सैयद अब्दुला खां, जमालदी खां, हाथी खां, मीर अलीयार खां, शेख तरीम खां ये पांच प्रमुख व्यक्ति हाथी पर थे सो गोले से उड़ गए और मरे । दूसरे आदमी 1200 (बारह सैकड़ा) रण खेत रहे । और घायल भी बहुत हुए । जीवित बचे सो इधर-उधर भाग गए ।

महाराज श्री अभयसिंह जी की सेना के जो व्यक्ति काम आये उनकी सूची —

कूंपावत सरदार :

रामसिह पुत्र सबलसिंह पटा रामसीन

सुलतान सिंह पुत्र सांवत सिंह

अर्जुन सिंह पुत्र पद्म सिंह

मेड़तिया सरदार :

शंभूनाथ पुत्र गोरधन

सरदार सिंह पुत्र जोरावर सिंह

माधोदासोत गुमानसिंह पुत्र हटीसिंह एवं उनका पिता

हटीसिंह मोरचे में काम आये जिनके पीछे सास एवं बहू दोनों ने सत[1] किया ।

<u>अन्य —</u>

सेखावत विसनसिंह पुत्र अनोपसिंह

भाटी सेसमल पुत्र अखेराज

चौहान सुरजणसिंह पुत्र सबल सिंह

सोनगरा दौलतसिंह पटे गांव कूरणो

नरूका पदमसिंह पुत्र बख्तावर सिंह

खानसामा प्रोहित रणछोड़दास पुत्र जैदेव

धावड़ मयाराम

गूजर कंवर राम सिंह जी

सिंधल[2] हरदास

खीची गोरधन

केशवदास कपड़ों के कोठार (पर)

---

1. सती हुई

2. धांधल भी पढ़ा जा सकता है ।

23 व्यक्ति मोरचों में काम आये एवं मुख्य लड़ाई तथा फुटकर काम आये 116 व्यक्ति। घायल हुए उनकी तफसीलवार सूचि —

1. जोधा अनोपसिंह पुत्र हरनाथ बहुत घायल हुआ, 84 घाव लगे, चार पैसे भर हड्डियाँ उन घावों में से निकली, जिन्हें गंगा प्रवेश हेतु भेजा गया। उस समय का जोधा अनोप सिंह का कवित इस प्रकार है —

केई वार ओरयां विच जाडां भरहासौ
केई वार चाचरे बांण उड्या बाणांसौ
केई वार अभचरावां रथां बैठ ऊतरी
केई वार नायतां आंण टूक जौड़े तनरीयो ॥
केई वार (हरा रो) खंड विखंड हुओ धणियां कजे।
निबधिया धजा साथ ओ अनोप ऊभो अजे ॥

राठौड़ सवाईसिंह पुत्र विजयसिंह बलूंदा के ठाकुर के छोटे भाई को यद्यपि घाव तो पाँच सात लगे तथापि उसने अच्छा रणकौशल दिखाया।

और भी कई सरदार घायल हुए।

राजाधिराज बखतसिंह जी इस युद्ध में अधिकतर हरौल में रहे और उनके साथ ने भी तन-मन से युद्ध किया। राजाधिराज के जो सैनिक काम आये उनकी सूचि इस प्रकार है —

प्रमुख सरदारों के नाम

चांदावत हरीसिंह पुत्र हटिसिंह पटे गांव नोखा

मेड़तिया पदमसिंह पुत्र दौलतसिंह

करणोत चतुरभुज पुत्र फतहसिंह

जोधा करणसिंह पुत्र हरनाथ

जोधा प्रतापसिंह पुत्र राजसिंह

भाटी हीमतसिंह पुत्र जगमाल

दीवांण पंचोली लालजी के तीर लगा

केई वार ओरयां विच जाडां वरहासौ
केई वार चाचरे बांण उड्या बाणांसौ
केई वार अभचरावां रथां बैठ ऊतरी
केई वार नायतां आंण टूक जौड़े तनरीयो ॥
हरा रो खंड विखंड हुओ, कई वार धणियां कजे।
निबधिया धजा मरणो नहीं, ओ अनोप ऊभो अंजे ॥

पिछला चार घड़ी दिन रहा उस समय विजेता महाराज की सेना के कई लोग तो डेरे में लौट आये और कई लड़ रहे थे उस समय अमीखां ने, जो 2000 सैनिक लेकर नदी पर खड़ा था, महाराज की सेना पर हमला किया जिससे महाराज की सेना तनिक पीछे सरकी ।

लेकिन महाराज की सेना में हाथी रतनगज था जिसने अपनी सूंड की सांकल से नवाब की सेना को समीप नहीं आने दिया । महाराज की सेना में खबर पहुँचने पर सैनिक निकलकर युद्ध में शामिल लुए और उन्होंने नवाब की सेना को धकेल दिया । सूर्यास्त तक नवाब की सेना शहर में वापस घुस गई ।

आसोज सुदि 11 को दोनों महाराज सेना लेकर चढे और उनकी सेना शहर से एक कोस की दूरी पर खड़ी हो गई । नवाब की सेना शहर से बाहर आयी उस समय नीबाज ठाकुर ऊदावत अमरसिंह पुत्र कुशलसिंह एवं बलूंदा ठाकुर चांदावत अभयसिंह पुत्र विजयसिंह मारवाड़ से वहाँ आये और चढ़ी सवारी[1] महाराज का मुजरा किया और सविनय निवेदन किया कि अब हमारे भी हाथ देखें । उभय पक्ष की तोपों की लड़ाई हुई । सूर्यास्त हुआ तब महाराज डेरे लौटे ।

झगड़े में काम आये तथा घायल हुए उनकी सूचि —

240 सरदार तथा राजपूत घायल हुए एवं 116 काम आये घोड़े 521 घायल हुए और 266 काम आये ।

आसोज सुदि 12 को नीबांज ठाकुर अमरसिंह पुत्र कुशलसिंह के नाम पत्र बेजकर नवाब ने उन्हें बुलाया । वे महाराज से अनुमति लेकर शहर में गये और वहाँ यह तय हुआ कि नवाब शहर तो महाराज के सिपुर्द कर देगा एवं उसे माल असवाब देकर कुछ मंजिलों तक पहुँचा देना तथा उससे चढ़ी असवारी मुलाकात कर पाग बदल भाई बनाना ।

कार्तिक वदि 7 को अश्वारुढ महाराज अभयसिंहजी एवं महाराज बखतसिंहजी के पास घोड़े पर सवार होकर नवाब आया श्री महाराज से मिला, पागें बदली और उभय पक्ष से शिष्टाचार का पालन हुआ एवं नवाब को पहुँचाने के लिये अमरसिंह पुत्र कुशलसिंह को भेजा तथा भारबरदारी[2] दी । वह उसे पाँच सात मंजिल पहुँचाकर आये ।

महाराज श्री अभयसिंह जी का अमल[3] अहमदाबाद में हुआ उन्होंने शाही बाग मे प्रवेश किया । सूबे की नायबी भंडारी रतनसिंह को हुई ।

संमत 1787[4] से 1789* के सूबे की तीन वर्ष की आय रुपये 8534000/- पचासी लाख चौंतीस हजार हुए ।

---

* सन् 1729 से 1731 तक

1. वाहनारूढ़ 2. खेमे एवं मालवाहन आदि संबंधित माल असवाब ।

3. आधिपत्र 4. यहाँ मूल प्रति में सं.1785 लिखा है जो प्रकटतया गलत है ।

किंतु गुजरात के लोगों से मारवाड़ियों ने हरप्रकार से भलीभांति उन्हें दूसरे समझकर शोषण किया जिससे लूट एवं कम मूल्य में बहुत सी सामग्री प्राप्त की यद्यपि कई मुख्य व्यक्ति काम आये थे। सामान एवं तोपखाना सरकार एवं उमरावों को प्राप्त हुआ।

संवत 1787 से 1789* के तीन वर्ष की आय रुपये 8534000/- रुपये पचासी लाख चौतीस हजार हुई जिसका विवरण —

800000/- वीरमगांव : पंचोली गुमानसिंह, भंडारी शिवचंद, भंडारी देवीचंद, तीन वर्ष के रुपये आठ लाख हुए।

950000/- धवलखां : भंडारी देवीचंद भंडारी अमरदास तीन वर्ष के रुपये

160000/- धंधूकी : मूंहता सूरजमल और भंडारी विरदभांन; तीन वर्ष के एक लाख साठ हजार।

290000/- परगना कड़ी : तीन वर्ष के रुपये दो लाख नब्बे हजार।

442000/- नलीयार मातर पूरी पंचोली इंद्रभांण को इजारे पर तीन वर्ष दी सो रुपये चार लाख बयालीस हजार बाद में भं. रतनसिंह के हस्ते।

220000/- देह गांव तीन वर्ष के रुपये दो लाख बीस हजार।

1605000/- पटलाद : सिं. जोधराज तीन वर्ष के सोलह लाख पाँच हजार।

800000/- खंभायच मोमन खां से आठ लाख रुपये। मोमनखां को बादशाह ने बक्शी बनाकर साथ में भेजा था।

165000/- मोड़सा भंडारी जेता आसकरण

120000/- कपड़बंध मुहता बखतमल एक लाख बीस हजार।

142000/- थांगणो पंचोली अखेसिंह एक लाख बयालीस हजार

140000/- उमरोट के तीन वर्ष के एक लाख चालिस हजार

320000/- पाटण की जागीर राजा बखतसिंह को दी थी बाद में भंडारी अमरदास रहा रुपये तीन लाख बीस हजार।

117000/- मुहगा दो वर्ष के एक लाख सतरह हजार।

75000/- सिधपुर तीन वर्ष के पचहतर हजार।

148000/- बीजापुर खीरालू तीन वर्ष के रुपिया।

---

* सन् 1729 से 1731 तक

59000/-	अहमदनगर के उनसठ हजार
38000/-	बडनगर के अड़तीस हजार वर्ष तीन के
63000/-	वीसलनगर के तीन वर्ष के तिरेसठ हजार
45000/-	कोटो पारचो तीन वर्ष के पेतालिस हजार
300000/-	मुकाता (अन्य राजस्व) के तीन वर्ष के रुपये तीन लाख बैठे ।
600000/-	सायर राहदारीन खास के छः लाख ।
10000/-	टकसाल तीन वर्ष के दस हजार ।
925000/-	देसी फरोई भंडारी लखजी मोतीपोता और मोदी जगा नौ लाख पचीस हजार
8534000/-	

खानसामां के पद की खिदमत प्रोहित जीवनदास (पुत्र) रणछोड़दास को हुई । बाद में जब उसका देहान्त हो गया तब यह खिदमत प्रोहित जगूजी को हुई ।

और मराठा बाजीराव विशाल सेना लेकर गुजरात में आया । और श्री महाराज को कहलवाया कि गुजरात की चोथ खांडेराव लेता था सो मर गया ।

सो अब मैं लूंगा । तब ऊदावत अमरसिंह पुत्र कुशलसिंह नींबाज, नवाब अजीमुलखां एवं भंडारी विजयराज को सामने भेजा वे उसे माघ सुदि पूर्णिमा को अहमदाबाद में श्री हुजूर के पास ले आये । बाजीराव ने आशीर्वाद दिया तथा महाराज ने मसनद से खड़े होकर नमस्कार पालागन कहा । मसनद के नजदीक वह बैठा, एक माह वहाँ रहा, दो चार बार हुजूर में आया । बाद में नर्मदा के किनारे निजामुल्मुल्क के आने के समाचार आये तब चोथ निश्चित हुई किन्तु बाजीराव ने अनुमति चाही । उस पर महाराज ने उसको सिरपाव इनायत किया एवं महमानदारी के लिए कुछ रोकड़ रकम दी । नींबाज ठाकुर अमरसिंह और भंडारी विजयराज को उसे पहुँचाने भेजा । वे बाजीराव को बड़ोदरा तक पहुँचाकर आये ।

मोदी जगन्नाथ, टीकूदास, रामजीदास महेश्वरी निवासी सोजत जो कि सरदारों का मोदी खाना तोला करते थे उन्हें महाराज ने समस्त सायरात ईजारे पर दी, दरबार का मोदी खाना दिया, परगने की हुकूमत दी, लाखों रुपयों की दौलत हुई ।

चारण कविया करणीदान को अहमदाबाद में सिरोपाव प्रदान किया और सोजत परगने में गांव आलावास इनायत किया और उन्होंने रवानगी की ।

संमत 1787* के आसाढ में राजाधिराज सीख करके नागौर पधारे ।

श्री महाराज ने अहमदाबाद से पहले रवानगी की और परली तरफ से खांडेराव की बहु उमा का उमराव कंठा फौज बीस हजार लेकर चोथ के लिये आया तब श्री हुजूर ने सेना देकर पंचोली बालकिशन को एवं मारोठ की सेना सहित भंडारी विजयराज को विदा किया । वे 20 कोस सामने गये । चोथ की लेनदेन ऊदावत अमरसिंह के हस्ते ठहरी । उतने में श्री हुजूर का आदेश पहुँचा कि कंठा को धोखा देकर मारदो । यह खबर अमरसिंह ऊदावत ने कंठा को पहुंचा दी । तब वह कूच करके जाता रहा ।

संमत 1788** के मार्गशीर्ष में महाराज ने राजाधिराज को बुलाया तब वे नागौर से आये ।

संवत् 1788*** के माघ माह में मराठा खांडेराव की बहू उमा का उमराव पीलू सेना लेकर आया तब दोनों साहिबान कूच कर के बीस कोस सामने पधारे । चोथ की बातचीत (रदलबदल = NEGOTIATION) हुई । श्री महाराज ने फरमाया कि कर (खिरणी) कदापि नहीं देंगे एवं पीलू की धोखा देकर हत्या करवाने का सोचा एवं फरमाया कि ऐसा कोई आदमी हो तो उसका पता लगाओ जो पीलू को मारकर आ जाये । तब लखजी ईंदा ने बीड़ा उठाया और कहा कि मैं पीलू को मार दूंगा । ईदा को आश्वस्त किया और समझौते के लिये पीलू के पास भेजा उनकी सूचि —

ईंदा लखजी पुत्र जैतसिंह
भंडारी अजबसिंह निवासी सोजत
पंचोली रामनाथ निवासी मेड़ता

कुल तीन व्यक्ति गये । दोनों मुसद्दियों को तो षड़यन्त्र का पता नहीं था और अनजान थे । लख़जी ईंदा ने कटारी से पीलू को धोखे से मार दिया । शोरगुल हुआ जिसमें अठारह व्यक्ति मारे गये और पीलू की सेना में भग्गी पड़ गयी । सो भाग गये । वहाँ से चलकर आगे डेरा उमरकोट हुआ वहाँ बाजरी खूब हुई । आगे चलकर डेरा माही नदी के समीप भेटासी में हुआ । जहाँ बरसात की झड़ी कुछ दिनों तक रही । तब श्री राजाधिराज तो नदी पर पुल बांध कर पार हुए । बाद में पुल टूट गयी तब साथ के कई लोग तो नदी में बह गये तथा महाराज का डेरा वहीं रहा । सारे तम्बुओं में पानी आ गया । दो-तीन दिन तक लोगों के रसोई नहीं हुई । घास नहीं मिलने पर घोड़ों को आम के पते चराये ।

---

* सन् 1729 ** सन् 1730 *** सन् 1731

बाद में राठौड़ भीमसिंह पुत्र मोकमसिंह निवासी तोसीणा ने इन्द्र-यज्ञ किया, माही नदी की पूजा की तब नदी के पानी ने उतार दिया एवं महाराज वहाँ से कूचकर अहमदाबाद पधारे।

भंडारी गिरधरदास के भंडारी (रुघनाथ) से द्वेष था सो महाराज से झूठी बात बना कर निवेदन किया कि महाराज श्री अजीतसिंह जी के राजवी, राणावत जी के पुत्र सुरताण सिंहजी से भंडारी रुघनाथ मिल गया है और बादशाह से बात कर रहा है इस प्रकार संशय में डाला तब महाराज ने दौलतराम और धांधल केसरी सिंह को परवाना लिखाकर हुक्म भेजा कि राजवी सुरताण सिंह को तथा भंडारी रुघनाथ को धोखा करके मरवा डालना। ये परवाने लेकर भंडारी गिरधर दास गुजरात से जोधपुर आया और नाजिर जी को परवाना दिया। तब चहुआण हिंदूसिह के हाथ से राजवी सुरताण सिंह को मरवा डाला।

भंडारी रुघनाथ कैद में था। उसका जिम्मा केसरसिंह धांधल परथा। केसरीसिंह ने परवाना पढ़कर कहा कि मेरा भाई श्री हुजूर की सेवा में है, सो उसकी मार्फत खास रुक्का आने पर ही यह काम होगा। भंडारी गिरधर दास गुजरात से परवाने लेकर रवाना हुआ उसकी सूचना रुघनाथ के पक्षधरों को हुई तब उन्होंने महाराज को अर्ज की कि गिरधरदास एवं रुघनाथ के आपस में वैमनस्य है इसलिए वह झूठी बात बना कर गया है। सो हुजूर इस बात की जाँच करवाकर बाद में कोई कार्यवाही करावें। तब नाजिर दौलत राम को लिखा कि सुलतानसिंह जी को मत मरवाना और केसरीसिंह को उसके भाइयों के मार्फत परवाना भिजवाया कि भंडारी रुघनाथ को मत सोंपना और मत मारना। सुलतान सिंहजी को तो पहले ही मर चुके थे और रुघनाथ को केसरी सिंह ने सौंपा नहीं था उस बीच मनादी पहुँच गई जिससे वह बच गया।

भंडारी गिरधरदास से महाराज अप्रसन्न हो गये और फरमाया कि ऐसी झूठी बात बनाकर अर्ज की जिससे अनर्थ हो गया इसलिए यह व्यक्ति पेट फूटकर मरेगा। बाद में शीघ्र ही गिरधरदास डर के मारे मर गया।

संवत 1788* में राजाधिराज सीख कर पधारे। बाद में 1789** के फाल्गुन में मराठा खांडेराव की पत्नी उमा सत्तर हजार की सेना लेकर गुजरात में आयी। तब राजाधिराज को नागौर से बुलाया तथा जोधपुर वगैरा परगनों से फौजें बुलायी, सभी आये। दोनों साहिबान किले में दाखिल हुए, शेष सेना व मुसद्दियों के डेरे किलकिला नदी के तट पर हुए। दरबार की सेना 20 हजार थी।

करणोत दुरगादासजी के खांडेराव से भाईचारा था। इस लिए करणोत अभयकरण पुत्र दुरगादास को उमा के पास भेजा। उमा ने कहा कि मेरी गुजरात में चोथ है, बाजीराव बागी होकर आया था, जिससे कोई बात हुई नहीं और मेरे उमराव पीलू को तुमने क्यों मरवा डाला। और भी कई कठोर बातें कही एवं कहा कि या तो बाहर आकर युद्ध करो या चोथ दो। तब रुपये डेढ लाख देने की ठहरी।

---

* सन् 1731 ** सन् 1732

करणोत अभयकरण जी ने श्री हुजूर से अर्ज की। कइयों को यह बात पसन्द नहीं आई और युद्ध करने का तय किया।

श्री महाराज की सेना में भंडारी रतनसिंह; पंचोली बालकिसन; भंडारी विजयराज के पास मारोठ परबतसर की सेना; मुहता जीवणदास के पास सोजत जालोर की सेना; श्री राजाधिराज की सेना में परदेसी; पंचोली लालजी यह सारी सेना सजी और उधर से उमा की सेना चढी। जोशी जीवराज की सेना से झगड़ा हुआ, जीवराज काम आया और सेना दबी। उधर की सेना भी खड़ी रह गयी। तब श्री महाराज का आदेश पहुँचा कि तलवार युद्ध (Man to Man War) अभी आरंभ मत करना। जहाँ हो वहीं ठहरे रहना।

दिन ढला तब उमा की सेना अपने डेरे में चली गई। फिर दूसरे दिन करणोत अभयकरण जी को भेजकर बात चलाई। रुपये दो लाख देना तय हुआ और उमा को वापिस भिजवाया।

संवत 1790* में अहमदाबाद परगने का बन्दोबस्त करके भंडारी रतनसिंह एवं कई उमरावों को वहाँ रखकर दोनों भाई अहमदाबाद से कूचकर जालोर पधारे। राजाधिराज जालोर से अनुमति लेकर नागौर गये एवं महाराज जोधपुर लौटे। रायकाबाग में डेरे किये एवं गोठ कराई; केसर गलायी गई; उमरावों मुसद्दियों और खवास-पासवानों की पागें-पोशाकें केसरिया करवायी; खुशी मनायी। बाद में अरोग कर हाथी सवार हुए। आगे हाथी के हौदे में भंडारी दौलतराम को बिठाया, बाजार में रुपयों की बौछार की गई। बड़े जुलूस के साथ गढ़ में प्रवेश किया। गुजरात से जीती हुई बहुत सी सामग्री, तोपखाना, सिलहखाना वगैरह जोधपुर एवं नागौर के राज्य में आयी और इसी तरह फौज में सभी सरदारों इत्यादि के भी अच्छा फायदा हुआ।

संवत 1791** के भाद्रपद में राजाधिराज ने सेना सहित बीकानेर पर चढाई की। गोपालपुर खरबूजी में अमल[1] करके बीकानेर खास के समीप जाकर डेरा किया।

उधर आसोज सुद में श्री हुजूर जोधपुर से कूच करके खींवसर पधारे। रुपये एक लाख खर्चे के देकर पंचोली रामनकिसन को भेजा। सो सेना-सिपाही भर्ती करके गांव ककू एवं सारुंडा खाली करवाकर चार हजार सवारों सहित हाजिर हुआ। उधर हुजूर दर कूंचां बीकानेर पधारे। आसोज सुद पूनम को गाँव आंबासर डेरे हुए।

राजाधिराज ने बीकानेर जाकर ठाकुरजी श्री लिखमीनारायणजी के मंदिर की तरफ मोरचा स्थापित किया। इस पर शहर से आयी सेना ने झगड़ा किया जिसमें राजाधिराज के बीस आदमी काम आये। हमलावरों को खदेड़कर वापिस कोट में घुसा दिया। उधर महाराज के डेरे शहर के

---

* सन् 1732   ** सन् 1733   1. आधिपत्य।

समीप हुए। चारों तरफ मोरचे लगाये। बीकानेर के राजा सुजानसिंह जी के कुंवर जोरावर सिंहजी भादरा की ओर गये हुए थे सो कांधलोत[1] लालसिंह कुंवरजी को लेकर चार हजार आदमी सहित शहर में दाखिल हो गया। महीने चार लड़ाई रही। शहर में निहायत ज्यादा मजबूती दिखाई पड़ी। कांधलोत लालसिंह ने हाजिर होकर निवेदन किया कि अभी तो आप लौट जाइये और फिर चार महीने बाद मरजी हो तो पधारें तो मैं स्वयं आपकी सेवा में होकर काम करा दूंगा। इस प्रकार लालसिंह ने धर्म-कर्म दिया तो दोनों महाराजाओं ने कूच करके नागौर में आकर होली मनाई — उस समय की कहावत है कि "मारकी फौज देस को चली तब होलिका कोस पेंतीस चली।"

दोनों महाराज अहमदाबाद पर गये थे तब राजाधिराज को हुजूर ने वचन दिया था कि बीकानेर खाली करा देंगे। हुजूर नागौर में दो माह रहे, बाद में संवत 1791* की जेठ में श्री महाराज नागौर से पुष्कर पधारे। अजमेर में आनासागर के महलात में बिराजे। माह एक वहाँ मुकाम किया। महाराज जयसिंहजी जयपुर से पुष्कर आयें और महाराज से मिलने के पश्चात् तुरंत जयपुर की ओर लौट गये।

संवत 1791** में महाराज जयसिंह जी जयपुर से कूच करउदयपुर के राणा जगतसिंह जी के राजतिलक के मुहूर्त पर उदयपुर गये। कोटा और बून्दी से वहाँ के राव राजा आये। फिर सभी राजा उदयपुर से रवाना हुए और गांव हुरड़ा में डेरे किये। महाराज अभयसिंह जी ने हुरड़ा के मुकाम पर लाल तम्बू चांदी के खम्भों पर खड़े कराये और राणा संग्रामसिह जी की कांण करवाने[2] के लिये सफेद पोशाक से पधारे। फिर राणाजी और जयसिंहजी महाराज के डेरे आये और महाराज भी सबके डेरों पर पधारे एवं दस्तूर के मुताबिक भैंट की रकम परस्पर ली दी गई। राणाजी एवं जयसिंह जी की पेशावाई[3] में हुजूर ड्योढ़ी तक पधारे और जब महाराज उनके डेरों पर पधारे तो वे भी अपनी ड्योढ़ी तक पेशवाई में आये।

सभी राजा एकत्रि। हुए तब बैठक की व्यवस्था इस प्रकार की। राणाजी तो मसनद पर बीच में बैठे और महाराज अभयसिंह जी उनके दाहिनी ओर बराबर बैठे तथा उनके नीचे कोटा के महाराव दुर्जणसाल। सवाई जयसिंह जी राणाजी के बायीं ओर उनके बराबर बैठे तथा राजाधिराज बखतसिंह जी उनसे नीचे।

वहाँ मशविरा किया कि दिखणी (मराठे) हिन्दुस्तान (उत्तरी भारत) में आते हैं सो उनकी रोकथाम का प्रबन्ध किया जाना चाहिये तथा तय रहा कि एक दूसरे के प्रदेश की जमीन पर

---

*,** सन् 1731

1. राठौड़ों की शाखा कांधल पुत्र राव रिड़मल के वंशज।
2. शोक संवेदना प्रकट करने हेतु।
3. अगवानी।

अतिक्रमण नहीं किया जावे तथा भोमियों[1] संबंधी सनातन नीति पारंपरिक ढंग से रखी जावे। इस तरह सलाह करके सभी राजा अपने अपने देश लौट गये।

महाराज अभयसिंह जी ने चांदी के खम्भों पर लाल डेरे खड़े किये इसकी हकीकत बादशाह को दी जाने पर बादशाह महमदशाह ने रुष्ट होकर कहा कि यह बड़ी चिन्ता की बात है। महाराज शाहजादों की बराबरी कर रहे हैं। इस पर महाराज की ओर से नियुक्त वकील भंडारी अमरसिंह को बुलाकर खानदौरां ने लाल डेरे खड़ा कराने संबंधी प्रश्न किया। इस बात की जानकारी अमरसिंहको नहीं थी किन्तु उसने शिष्टता वश वापस निवेदन किया कि महाराज तो स्वामिभक्त की भांति सेवा कर रहे हैं।

किन्तु उनके शत्रु इस तरह की शिकायत कर रहे हैं। इसलिए उन्हें इसकी सूचना मिलेगी तो उन्हें दुःख होगा। इस पर वकील को पूछा गया कि यह बात किस तरह है ? तो उसने सूचित किया कि महाराज ने तो सोचा कि मराठे हिन्दुस्तान में आते हैं सो ठीक नहीं इसलिये सभी राजाओं को इकट्ठा किया और वे किस स्थान पर इकट्ठा हों इसके लिये बादशाही कचहरी की तथा मराठों को हिन्दुस्तान से दूर रखने के बाबत मशविरा किया। ऐसी सेवा पर निवाजिश की जगह यदि कुसूर निकाला जाता है तो जो मालिक की मर्जी वही ठीक है। आगे से ध्यान रखकर नौकरी देंगे। इस पर बादशाह ने अमरसिंह को खातिरजमा दिलाई और महाराज को खास दस्तखतों से खातिर जमा देते हुए सिरोपाव इनायत किया और भंडारी अमरसिंह को भी सिरोपाव दिया।

खास रुक्का एवं सिरोपाव के साथ अमरसिंह ने समस्त घटना का विवरण लिखकर अर्जी भेजी।

जिस पर महाराज भंडारी पर बहुत प्रसन्न हुए और फरमाया कि मुसद्दी हो तो ऐसे हो जो समय आने पर बिगड़ी बात को भी बना देते हैं।

बाद में संवत् 1792* में हुरडे से रवानगी कर देवलिया डेरे किये। भीणाय के गांव देवलिया को शाहपुरा के राजा उम्मेदसिंहजी सीसोदिया[2] ने ले लिया था और अपने भाई ईसरीसिंह को दे दिया था। इसलिए मोरचा लगाकर राठौड़ रुघनाथ सिंह पुत्र नारसिंह जोधा को पटे कर दिया। तीन माह तक वहाँ मुकाम रहा तथा शाहपुरा के गांव से पेशकश ली तब शाहपुरा राजा उम्मेदसिंहजी ने आकर अभिवादन किया और महाराज की अधीनता स्वीकार की। सूरत का सुबायत[3] बड़ी सेना लेकर अहमदाबाद पर चढकर आया इस पर भंडारी रतन सिंह भी बड़ी सेना लेकर सामने गया। युद्ध हुआ सुबायत को मार गिराया तथा रतनसिंह के हाथ व शरीर के घाव लगे। श्री महाराज जीत के समाचार पाकर खुश हुए।

---

* सन् 1734

1. पारंपरिक भू-स्वामियों।

2. गुहिलोत राजपुत वंश की शाखा।

3. सुबेदार।

सवाई जयसिंह जी ने खानदौरां के मार्फत (बादशाह को) निवेदन करवाया कि रणथम्भोर का किला हमको दें तो मराठों (गनीमों) को आगे नहीं आने देंगे। इस पर किला देने का निश्चित हुआ। जब यह खबर अमरसिंह को मिली तो उसने कहा कि उधर की व्यवस्था तो ये कर लेंगे और अजमेर का किला बीटली हमें दिया जाय तो जालोर की ओर बन्दोबस्त हम कर लेंगे। तब दोनों प्रस्ताव निरस्त कर दिये गये।

पूना से मराठों की सेना के उरली ओर[1] कूच करने की सूचना बादशाह को होने पर विशाल बाइसी सेना लेकर नवाब खानदौरां को विदा किया एवं समस्त राजाओं को आदेश दिया कि खानदौरां के साथ रहो। तब महाराज अभैसिंह जी कूच करके हाड़ौती में मुकंद्रा के घाटे से उतरकर चंद्रावतों[2] के रामपुरा से तीस कोस इस तरफ नवाब के शामिल हुए। नवाब एवं महाराज तथा समस्त राजाओं की सेना 200000 दो लाख, इकट्ठी हुई। मराठों की सेना एक लाख के लगभग थी। जब डेरे नजदीक आये तब महाराज अभैसिंहजी ने नवाब को कहा कि युद्ध करें तो गनीमों को हटा देंगे और जयसिंहजी ने मराठों को कहलवाया कि युद्ध मत करना।

और प्रदेश में लूटपाट करते रहना। इस पर मराठों ने सांभर और मौजाबाद पर धावे डाले और दिल्ली जाकर कालका का मेला लूटा। इस पर नवाब और महाराज (अभैसिंहजी) दिल्ली आये। बादशाह की सेवा में उपस्थित हुए। बादशाह ने हकीकत पूछी तो महाराज ने निवेदन किया कि नवाब का तो युद्ध करने का मानस था किन्तु जयसिंह जी ने नहीं करने दिया और ऊपर से मराठों द्वारा देश में लूटपाट करवा रहे हैं। इस पर बादशाह महाराज पर प्रसन्न हुआ।

बाद में मराठों को फौज़ खर्च के रुपये 3033500/- तीस लाख तैंतीस हजार पाँच सौ बादशाह ने दिये। मराठों के सामने पूर्व की ओर कमरदी(न) खां को भेजा था सो लौट आया।

सवाई जयसिंहजी ने मराठों को कहलवाया कि तुम मारवाड़ पर सेना ले जाओ तो महाराज अभैसिंह जी दिल्ली से रवाना होकर उधर चले जाऐंगे। इस पर मराठा सेना लेकर मल्हार (राव) गुजरात से आया फौज पचास हजार से। जालोर सोजत का बिगाड़ कर फौज मेड़ता आयी। तथा फौज की कई टुकड़ियाँ (तूंगा) जोधपुर आयीं।

रातानाडा पर पड़ाव डाला। जोधपुर में चांपावत सगतसिंह पुत्र आईदान पटे रोहट तथा चांपावत महासिंह पुत्र भगवानदास पटे पोकरण एवं जगू वगैरह थे। मालकोट मेड़ता में भंडारी विजयराज एवं मनरूप ने तैयारी की। मनरूप तो मेड़ता का हाकिम था और विजयराज परबतसर महारोठ का हाकिम था। इस प्रकार सारे सरदार सेना लेकर आये।

1. इस ओर।
2. सिसोदिया गुहिलोतों की शाखा।

मेड़तिया शेरसिंहपुत्र सरदारसिंह रियां वगैरह माधोदासोत, रायपालोत चांदावत वगैरह एवं ऊदावत उदयसिंह पुत्र प्रतापसिंह देवलिया ये सभी ।

उम्मेदसिह पुत्र भारथसिंह से मित्रता थी, इसलिए उन्हें बुलाया । इस प्रकार चार हजार आदमी मालकोट में एकत्र हुए । मराठे पचास हजार आदमी बाहर थे । मोरचे चारों तरफ लगाये । उधर महाराज का दिल्ली से हुक्म आया कि मराठों को एक छदाम भी मत देना । मनाणा के धीरत सिंह ज़ी का डेरा मालकोट के आगे था । अंदरवालों के मोरचे पीरनडी के बेलदारों के घरों के पास थे ।

मराठों ने धीरतसिंहजी के डेरे एवं मोरचों पर हमला बोला । तब मालकोट की प्रोल खोलकर सरदार एवं पैदल सातसौ आदमी म्यानों से तलवारें निकालकर निकले और भारी युद्ध किया तथा मालकोट की प्राचीरों से तोपें चली जिससे मराठों की सेना के पालखी नवीस सरदार मारे गये । इस पर मराठो ने फैंटा फेरा[1] (साफा हिलाया) कि अब युद्ध मत कीजिये । मराठों के कई आदमी मारे गये । महाराज की सेना में घायल तो कोई कोई हुआ किन्तु मारा कोई नहीं गया । श्री महाराज की विजय हुई ।

मराठों के आने की सुनी तब दिल्ली में महाराज ने बादशाह से विदा मांगी थी और विजय की सूचना मिलने पर रवानगी का इरादा बदल दिया ।

संवत् 1793* में भंडारी रतनसिंह ने अहमदाबाद की प्रजा की बहुत लूट-खसोट की तब हुक्मेशाही हुआ कि अहमदाबाद खाली करा देना । सो खंभायच (खंभात) से मोमन खां चढकर अहमदाबाद आया । और घेरा दिया, एक वर्ष तक युद्ध हुआ । उस समय अहमदाबाद में भंडारी रतनसिंह इत्यादि जो आसामी थे उनकी सूचि इस प्रकार है —

1 चांपावत पदमसिंह पुत्र अनोपसिंह पटे सरवाड़ ।
1 चांपावत दौलतसिंह पुत्र मुकनदास सथलाना ।
1 कूंपावत कनीराम पुत्र रामसिंह आसोप ।
1 जोधा शिवसिंह पटे जूनिया ।
1 जोधा प्रतापसिंह भाद्राजूण ।
1 ऊदावत केसरीसिंह पटे रास ।
1 करणोत अभयकरण पुत्र दुर्गादास पटे गांव कोसांणो ।

---

* सन् 1735

1. युद्ध विराम के निमित्त आजकल के श्वेत ध्वज की तरह संकेत ।

और भी खास-खास आसमियाँ थी इसलिये उन्होंने महाराज को लिखा किन्तु मदद नहीं हुई इसलिये बातचीत करके भारवीरदारी (मांल-असबाब) सहित अहमदाबाद छोड़ दिया ।

दिल्ली में महाराज ने रुपये वसूल किये उसका विवरण —

100000/- गिरधरदास से एक लाख लिये ।

25000/- अमरसिंह से पच्चीस हजार ।

शाहपुरा के राणावत उम्मेदसिंह जी को महाराज साथ लेकर गये थे सो बादशाह को अभिवादन करवाया एवं राजा पदवी दिलवायी ।

संवत् 1793* में महाराज एवं नवाब खानदौरां के आपसी मनमुटाव हो गया । महाराज विदा लेकर जोधपुर पधारते समय नवाब से मिलने उसके डेरे गये थे लेकिन नवाब मिलने के लिये वापस नहीं आया । बाद में महाराज ने कूच करके म्हेरमनगर के बाग में पड़ाव किया एवं भंडारी अमरसिंह को रायांराय की पदवी दी और सरफराज करके कहा कि नवाब से बिना मिले देश जा रहा हूँ सो ठीक नहीं । तब भंडारी अमरसिंह ने नवाब से मिलकर बात तय की और उसे छः कोस तक मिलने के लिये ले आया और छः कोस महाराज को । परस्पर मेल-मिलाप हुआ एवं सांभर की फ़ौजदारी महाराज को लिखवादी ।

फिर महाराज ने कूच करके रेवाड़ी डेरे किये

दीपमालिका रेवाड़ी में मनाई । राणी कछवाईजी के आभूषण पहले चुराये जा चुके थे और वहाँ अहीर का आधिपत्य था इसलिये महाराज ने आज्ञा दी कि रेवाड़ी लूट लो । तब उसे लूट लिया और एक चबूतरे की खुदाई की जिसमें रुपये 30000/- तीस हजार निकले ।

वहाँ से रवानगी कर सांभर पधारे और फौजदारी के काम पर मोदी रामजीदास को रखकर अजमेर पधारे । जहाँ आनासागर की पाल पर स्थित महलात में बिराजे ।

भंडारी अमरसिंह ने बादशाह से दो चार बार निवेदन करके रुपये पेंतीस लाख कम करवाये ।

बीकानेर के राजा जोरावर सिंह जी गोपालपुरे की गढी में थे । सो नागौर से राजाधिराज बखतसिंह जी चढे और गोपालपुरा जा घेरा । दिल्ली से महाराज ने भंडारी विजयराज को आदेश भेजा कि तुम राजाधिराज के साथ जाना, सो वह गया । बाद में कांधलोतों की मार्फत बात इस तरह तय हुई । काफी पैदलों और घुड़सवारों सहित कांधलोत लालसिंह सेवा करेगा[1] । सो लालसिंह एवं

---

* सन् 1735

1. महाराज अभैसिंहजी की अधीनता में सेवा करेगा ।

प्रोहित जगूजी मौजाबाद आकर शामिल हुए और मनरूप विजयराज भी शामिल हुए। खरबूजी की पट्टी बीकानेर वालों ने राजाधिराज को सौंप दी। चांपावत कुशलसिह पुत्र हरनाथ सिंह आउवा और मेड़तिया शेरसिंह पुत्र सरदारसिह रियां के बीच मित्रता बढ़ी और पट्टे में बढ़ोतरी के लिए महाराज से निवेदन करवाया। इस पर महाराज अप्रसन्न हुए तो ये दोनों चढकर अखूवास आये और भंडारी गिरधरदास, मनरूप और प्रोहित जगन्नाथ को उन्हें मनाने के लिए भेजा। ये हुजूर में उपस्थित हुए तो महाराज आनासागर तक उनके सामने पधारे। फिर शेरसिंहजी को भंडारी मनरूप ने फंटा लिया और पट्टा लिखाया वह पोशीदा नजर करवाया। इसकी हकीकत आउवा कुशलसिंहजी ने सुनी तो उनके मन में संशय हुआ और वे छोड़कर उदयपुर चले गये।

दौलतसिंह पुत्र मुकनदास सतलाना और रोहट, आऊवा, बातां वगैरह साथ चढे।

तब इनके पट्टे जब्त हुए और डेरे-जखीरे खालसे कर लिये गये।

संवत 1793* में महाराज का डेरा अजमेर में एक वर्ष रहा।

1794** के आसोज सुद 10 को अजमेर से रवानगी हुई। मार्ग में गांव चावण्डिया के पड़ाव पर भंडारी रतनसिंह ने अहमदाबाद से आकर सलाम अर्ज की। बाद में महाराज मेड़ते पहुँचकर महलों में बिराजे और सेना का पड़ाव बाहर रहा।

महाराज कल गाँव के आरण्य में शिकार पधारे। मास दो वहाँ बिराजे रहे। दीवाली वहीं मनायी। बाद में मिगसर में मेड़ते लौटे तब दीवाली का जुलूस निकाला, दरबार किया एवं शहर में रोशनी की।

राजाधिराज बखतसिंह जी ने पंचोली लालजी को कैद करके रुपये दो लाख वसूल किये एवं दीवान पदवी सिंघवी शाहमल के हुई। बाद में संवत 1795*** में शाहमल का देहान्त होने पर दीवान पदवी सिंघवी अमरचंद पुत्र शाहमल को दी।

राजाधिराज को नागौर से बुलाया। डेरा गांव सांगास हुआ और राजाधिराज से महाराज ने मशविरा किया कि भंडारियों को तो कैद किया जाना है और काम कायस्थों को सौंपा जाना है। सो तुम पंचोली लालजी को मुझे दो तो मैं काम इन्हें सौंपूँ बाद में चेत सुदि 7 को भंडारी गिरदास[1], रतनसिंह, मनरूप,दौलतराम वगैरह को परिवार जनों, नौकर चाकरों सहित कैद कर दिया। विजयराज सिरसा एवं भटनेर की त रफ फौजबंदी को गया हुआ था इसलिए कैद नहीं हुआ। और भंडारी अमरसिंह दिल्ली था जहाँ आदमी भेजकर उसे पकड़ मंगाया। और कायस्थों को काम सौंपा जिसका विवरण —

---

* सन् 1735 ** सन् 1736 *** सन् 1737

1. गिरधरदास।

दीवान पदवी पंचोली लालजी के नाम हुई ।

बक्शी पदवी पंचोली रामकिशन के थी सो बालकिशन के हुई ।

जोधपुर का सुबायत पंचोली रामकिशन का बड़ा भाई नियुक्त हुआ ।

जोधपुर की कचहरी पंचोली लालजी के पुत्र खोमकरण को ।

मेड़ता की हाकमी पंचोली लालजी के पुत्र को ।

गुजरात के अभियान में जो मुत्सदी पदों पर थे उन पर अर्थदण्ड तय करने का दायित्व राजाधिराज को सौंपा । कठोर यंत्रणा से लोग मर गये । इस पर हुजूर ने फरमाया कि बखतसिंह तो लोगों के प्राण ले लेता है, उसका स्वभाव अत्यंत कठोर है सो ठीक नहीं । इसलिए ठहराव (अर्थदंड) का जिम्मा राजाधिराज से छीन लिया जो उन्हें बहुत बुरा लगा ।

पंचोली रामकिशन को फौज लेकर भिणाय की ओर विदा किया । उसने गौंड़ अर्जुनसिंह से राजगढ खाली कराया तथा सावर निवासी सगतसिंह से घटियाली एवं पीपलाद, जो उसने दबा रखे थे, खाली कराये । ये गाँव (महाराज की) मनसब में थे ।

और राव का गाँव चौसल खाली करवाकर वहाँ थाना स्थापित किया । इस पर उदयपुर से सेना आयी । तब जयपुर से शाह नानकदास को भेजा जिसने समझौता करवाया । महाराज का आदेश पहुँचा कि सावर की गढी के कंगूरे गिराने के बाद में बात करना । पीछे रुपये दस हजार ठहरे ।

1795* में राजाधिराज विदा लेकर नागौर गये और महाराज मेड़ता से जोधपुर पधारे ।

महाराजकुमार श्री रामसिंह जी के साथ उदयपुर के राणा जगतसिंहजी की पुत्री की सगाई का नारियल फाल्गुन में आया ।

चैत्र में मंडोर के महलों में बिराजे । पीछे असाढ में सूचना मिली कि राजाधिराज ने बड़ी सेना के साथ नागौर से मूंडवे आकर डेरा किया है और उनके मेड़ते की तरफ जाने की खबर है । तब मेड़तिया जयसिंह पुत्र सूरतसिंह एवं बोरून्दा निवासी विसनदास को राजाधिराज के पास भेजा । उन्होंने समझाइश की परन्तु वे माने नहीं और मूण्डवे से आगे बढकर डेरा खजवाणा किया । तब मेड़ते का हाकिम पंचोली जयकरण पुत्र रामकिशन जोधपुर से तोपखाना लेकर आया । आगे मेड़ता में महकरण था ।

---

* सन् 1737 ** सन् 1738

मेड़ता के डेरे से पंचोली लालजी और पुरोहित जगूजी को बीकानेर की तरफ भेज रखा था और उनका डेरा बीकानेर से बारह कोस की दूरी पर कोलायत के पास था और मंडला (वत) मनरूप निवासी सांरुडा को सीमा निर्धारण हेतु भेज रखा था। राजाधिराज ने मेड़ते की ओर कूच किया तब पंचोली लालजी एवं प्रोहित जगन्नाथ को हुक्म पहुंचा और वे हुजूर में आये और पंचोली बालकिशन भी (नोट - यहाँ रामकिशन होना चाहिये) भिणाय की ओर से फौज लेकर आया।

संवत् 1796** के भादवा में राजाधिराज ने मेड़ता से रवानगी की और गांव चांदेलाव आकर पड़ाव डाला। तब महाराज अभैसिह जी जोधपुर से चढे और पड़ाव गांव बीसलपुर किया। दोनों के बीच में डेढ कोस की दूरी रही। राजाधिराज चांदेलाव से चढकर उरली ओर आये तब महाराज ने पंचोली लालजी और प्रोहित जगूजी को सेना लेकर चढ़ाया। एक कोस का फासला रहा। महाराज की सेना एवं भाईयों तथा सरदारों का मानस युद्ध करने का नहीं। आत्मीयता ज्यादह देखी तो श्री अभैसिंह जी ने खीची[1] हरनाथ के साथ पत्र लिखकर भेजा कि भाई बखतसिंह से लड़ाई की तो मेरी कसम है। इसलिए लड़ाई नहीं हुई। सांझ पड़े डेरों में लौटे। सवेरे राजाधिराज ने चहुआन मोकमसिंह को तो महाराज अभैसिंह जी के पास भेजा और आप कूच करके गांव डांवरा होते हुए नागौर लौट आये।

पांच सात दिन बाद महाराज ने वीसलपुर से रवाना होकर दीहावड़ी डेरे किये। और रुपये बीस हजार एवं संदेश के साथ चहुआन् मोकम सिंह को राजाधिराज के पास भेजा। तब राजाधिराज ने नागौर से प्रस्थान कर गांव हिंदोड़ा डेरे किये और मिगसर में महाराज से मिले। वहाँ बातचीत करके उन्हें विदा किया और साथ में राठौड़ कनीराम पुत्र रामसिंह कूंपावत एवं करणोत अभयकरण पुत्र दुर्गादास को भेजा कि बीकानेर की ओर जाएंगे तब, तुम बखता (राजाधिराज) को संभाले रखना। श्री महाराज का मुकाम दो मास तक दीहावड़ी रहा। फिर वहाँ से रवानगी कर महाराज अभैसिंहजी बीकानेर पधारे। बैसाख सुदि द्वितीया को शहर कब्जे करने के बाद कोट के लिये मोरचे लगाये। दो मास तक लड़ाई हुई कोट में अफीम व सामान नहीं इस पर राजा जोरावर सिंहजी ने कहलाया कि भारवीरदारी दीजिये हम किला छोड़ देंगे। इस पर पुरोहित जगूजी इत्यादि ने महाराज को निवेदन किया कि इन्हें दर्जेलाचारी छोड़कर जाना होगा और यदि इन्हें भाखीरदारी दी तो मालअसबाब लेकर चले जाएंगे और नहीं दी तो माल असबाब अपने हाथ पड़ जाएंगे। इससे समझौता हो नहीं पाया। गढ़ में सामान नहीं था सो राजाधिराज ने नागौर से सहायता करके अफीम इत्यादि बीकानेर पहुँचाये क्योंकि उनकी महाराज अभैसिंहजी से अनबन थी और उन्होंने कहलवाया कि डटे रहना और सहायता चाहिये तो यहाँ से भेज देंगे किन्तु हटना मत। बीकानेर वालों को पता चल गया कि बीच भाइयों[2] के अनबन है। जोरावर सिंहजी ने अपने कामदार मुंहता बख्तावरमल को

1. चौहान राजपूत वंश की शाखा।
2. महाराज अभैसिंहजी एवं राजाधिराज बखतसिंह जी।

राजाधिराज के पास नागौर भेज बहुत लाचारी और शिष्टाचार के समाचार कहलवाये तब उन्होंने जयपुर महाराज जयसिंहजी के नाम खरीता[1] लिखकर दिया कि आप बीकानेर वालों की मदद करना और यह लिखा कि मैं भी शामिल हूँ। मुहंता बख्तावर मल ने खरीता लेजाकर जयपुर महाराज जयसिंह जी को दिया और जुबानी अर्ज की कि महाराज अभैसिंह जी हमारे पीछे पड़े हुए है और घेरा दे रखा है सो आप और राजाधिराज हमारी सहायता नहीं करोगे तो बीकानेर हमारे हाथ से निकल जाएगा। जयसिंहजी ने सोचा कि कदाचित बीकानेर पर अभैसिंह जी का अमल[2] हो गया तो वे सशक्त हो जाऐंगे। जयसिंहजी ने महाराज अभैसिंहजी को खरीता लिखा कि आप अभी तो घेरा उठाकर जोधपुर पधार जावें और यदि ऐसी ही इच्छा होगी तो दो माह बाद बीकानेर खाली करवा दूंगा। इस तरह से लिखा सो महाराज अभैसिंह जी ने स्वीकार नहीं किया। तब जयसिंह जी जयपुर से पचास हजार की सेना लेकर चढे। आसोप के कूंपावत कनीराम जी एवं काणाणा के करणोत अभयकरण पुत्र दुर्गादासजी ने राजाधिराज को इस संबंध में निवेदन किया किन्तु वे माने नहीं। इस पर वे दोनों सरदार अभैसिंहजी के पास आ गये।

राजाधिराच के डेरे गांव जारोड़ा हुए। उस समय मेड़ता में हाकिम पंचोली महकरण पुत्र लालजी था। उसके पास मेड़ता परबतसर भिणाय की (सेना) पांच हजार थी, जिसे लेकर वह चढा और गांव जारोड़े पहुँचा[3]। राजाधिराज चढ़कर आये, युद्ध हुआ, महकरण भागकर जोधपुर गया और विजयी महाराज बखतसिंहजी ने मेड़ते जाकर डेरा किया और अमल कर लिया। इसी दरमियान जयसिंह जी भी मेड़ते पहुँच कर उनके शामिल हुए और जोधपुर राज्य का नौ मोहरा बादशाह से बनवाकर लाये थे सो राजाधिराज को दिया। परबतसर महाराज अजीतसिंह जी के कुंवर किसोरसिंह जी को मिला एवं उनका अमल हुआ।

महाराज श्री अजीतसिंहजी की पुत्री सोभाग कंवर की सगाई उदयपुर के राणा जगतसिंह जी के कुंवर प्रतापसिंह जी से की थी। विवाह की तिथि निश्चित हुई इसलिये महाराज श्री अभैसिंह जी ने अपने प्रधान ठाकुर महासिंहजी चांपावत पोकरण को विवाह संपन्न कराने के लिये भेजा। वे जोधपुर पहुँचे। उदयपुर से बारात सजाकर कुंवर प्रतापसिंह जी शादी करने के लिये जोधपुर पधारे। बारात लौटने से पहले सवाई जयसिंह जी ने मारवाड़ की ओर कूच किया जिसकी सूचना मिलने पर कुंवर प्रतापसिह जी से उनके उमरावों ने अर्ज की कि हमारी राय में अब रवानगी उचित नहीं किन्तु उन्होंने रवानगी कर दी। राठौड़ पदमसिंह जी घाणेराव इत्यादि गोडवाड़ परगने के राठौड़ जोधपुर में ही रहे। दीपावत भंडारी अटकाव[4] में थे सो आज्ञा जारीकर भंडारी गिरुदास रतनदास को मुक्त किया और जोधपुर में सेना एकत्र की एवं खर्ची दी। महाराज ने तो समझा था कि जयसिंह जी कौन

---

1. पत्र। 2. आधिपत्य।

3. कालांतर में पंचोली महकरण को इस हमले के लिए राजाधिराज ने चौरंगा करवाकर सजा दी।

4. विचाराधीन (Under Trial)

से हिसाब से आयेंगे इसलिये हकीकत मालूम होने पर संवत 1797* की सावण वदि 7 को बीकानेर से प्रस्थान कर सावण सुदि 3 को जोधपुर सूरसागर बाग में प्रवेश किया एवं सुद 4 को गढ़ में पधारे । सात परगनों में आदेश पहुँचे थे और खर्ची भेजी थी सो दस पाँच हजार आदमी उपस्थित हुए । उधर बीकानेर सेना में प्रोहित जगूजी एवं पंचोली लालजी को रखकर आये थे सो वे तोपखाना वगैरह लेकर आये । मार्ग में तोपखाने के बैल थक गये । तोप शंभूबाण एवं हडूमानहाक को जमीन में गाढ़कर निशान करके आये थे सो बाद में मंगवाली । जोधपुर नगर में सवार और पैदल लगभग बीस हजार आदमी थे । पदमसर तालाब में पानी कम था । महाराज युद्ध का विचार करके सशस्त्र चढ़ै नेहड़ा की डूंगरी के समीप के चौक में अश्वारुढ़ खड़े थे, उस समय वहाँ एक कंगालपुरी नाम का जोगी बैठा था । महाराज ने अभिवादन कर उससे कहा कि महाराज मेरे यहाँ अभी पानी की पूरी तंगाई है; मुश्किल से टके-घड़ा[1] मिलता है; फौज एकत्र हुई है और पूरी कठिनाई है और आप महापुरुष है । तब कंगालपुरी ने कहा कि मुझे हाथी पर चढ़ाकर भंग घोटकर पिलाओ तो जरूर बरसात आ जाएगी । तब महाराज ने जोगी के कहे अनुसार भंग की कूंडी एवं लोटा मंगाया एवं उसे हाथी पर चढाकर प्रसन्न किया । जोगी ने भंग घोटकर हाथी पर बैठे-बैठे पी । बाद में आकाश की तरफ मुंह करके आवाज दी कि “आव ! आव ! ! आव ! ! !”[2] इस पर बादल निकले, फैले और बरसात हुई । चार घड़ी तक पानी बरसा । जिससे पदमसर एवं राणीसर तालाबों में चार छ: महीने का पानी आ गया । महाराज नेहड़ों की डूंगरी की तरफ पीठ रखते हुए घोड़े पर सवार खड़े थे । आगे तोपखाना था । राजाधिराज और जयसिंहजी का डेरा चैनपुरा में था । सो उधर से वे भी चढकर सामने आ खड़े हुए । सूर्यास्त होने पर उभयपक्ष अपने अपने ठिकाने दाखिल हुए ।

जयसिंहजी को विदित हुआ कि अभैसिंह जी के पास आदमी कम है परन्तु वे युद्ध के लिए उतारू है । उन्होंने महाराज को कहलवाया कि इस मुहिम में मेरे बीस लाख खर्च हुए है । यदि जोड़-तोड़ करवादो तो लौट जाऊं । और दूसरे जयसिंहजी से व्याहिता राजकुमारी जी ने उन्हें कहलवाया कि आप बखतसिंह जी की बात पर भरोसा मत करना अंतत: काम पड़े दोनों भाई एक हो जाऐंगे ।

सो जयसिंहजी के मन में संशय हो गया । बखतसिंह जी ने भी महाराज को पत्र लिखा कि यदि आप युद्ध करो तो अग्रिम मोरचे में मुझे समझना ।[3] परन्तु महाराज अभैसिंहजी को राजा धिराज पर पक्का भरोसा नहीं आया ।

---

* सन् 1739

1. टका एक प्रकार की मुद्रा थी जो रुपये के बत्तीसवें भाग के बराबर थी । टके-घड़ा का अर्थ है दो पैसे प्रति घड़ा
2. ‘आओ ! आओ ! आओ !’
3. अर्थात् मेरे सैन्य दल को आप स्वयं की ही सेना का एक अग्रिम दल समझना ।

बड़े महाराज श्री अजीतसिहजी के राज्य काल में जयपुर महाराजा जयसिंहजी सैयदों (सैयद बन्धु) के डर से जोधपुर शरण आये थे। तब भंडारी रघुनाथ ने जयसिंह जी को खरची की बहुत रकम दी थी और हर प्रकार से प्रसन्न रखा था। तब जयसिंहजी ने भंडारी रघुनाथ को लिखकर दिया था कि इसके एवजाने में तुम्हें बहुत सहायता देंगे। वह लिखावट रघुनाथ के पास मौजूद थी। और जयसिंह जी जोधपुर आये तब रघुनाथ भंडारी 'झरणा' में कैद था। यह हकीकत महाराज अभैसिंहजी को ज्ञात हुई और रघुनाथ ने भी अर्ज करवायी कि मुझे मुक्त कर दीजिये, मैं समूची बात को ठिकाने लगा दूंगा और (जयसिंह जी का) वापस कूच करा दूंगा।

सम्मान के साथ भेजने पर पूरी बात को रास्ते ले आऊंगा। तब महाराज ने उसे कैद से निकलवाकर बुलवाया और उसे बदस्तूर खड़े होकर सम्मान दिया और बाद में एक तरफ ले जाकर संदेश दिया। फिर प्रमुख मेड़तिया सरदार एवं उमरावों को रघुनाथ के साथ भेजा, जिन्होंने जाकर अभिवादन किया और दस्तूर के मुआफिक नजर-निछरावल की।

बाद में भंडारी जयसिंहजी से अकेले में मिला और अर्ज की कि आपको लोगों के बहकावे में आकर इतनी दूर नहीं पधारना था। तब जयसिंह जी ने कहा कि भंडारी जी तुम्हें कैद से छुड़ाना था इसलिए हम आये। इस प्रकार हंसकर कहा तब रघुनाथ ने कहा कि अपने स्वामी से शर्त लगाकर आया हूँ सो आप कृपा करके कूच का नगारा अभी करवा दें तो मेरी इज्ज़त महाराज के सामने एवं दुनिया में बढ़े और लोग कहें कि पहले की महरबानी का निर्वाह करते हुए एवजाना दिया। सो कूच तो करिये और आपको फौज पर खर्चा लगा है सो मैं उसे भरवा दूंगा।

फिर बीस लाख देने किये जिसके पेटे रोकड़ में तो कछवाई जी (महारानी) के आभूषण थे सो रखे तब जयसिंहजी ने आभूषण देखकर कहा कि ये तो मेरी लड़की के हैं सो नहीं ले सकता सो वापस लौटा देंगे। किन्तु अभी तो वह महाराजा अभैसिंह जी की रानी होकर दे रही है सो ले लेंगे। शेष रकम पेटे जो आसामियाँ सोंपी उनका विवरण —

1 भंडारी रघुनाथ।

1 भंडारी अमरदास पुत्र देवराज।

1 भंडारी रतनसिंह।

1 भंडारी मनरूप पुत्र पोमसिंह।

1 भंडारी गोरधन पुत्र मेघराज

5

इन पाँचों को बंधक में दे जयसिंहजी का कूच करा दिया। राजाधिराज और जयसिंहजी दोनों के मनों में लोगों ने संशय पैदा कर दिया।

बखतसिंह जी पछताये कि जयसिंह जी ने मुझे तो पूछा ही नहीं और भंडारी के कहने से लौट गये। वे बहुत उदास हुए और जयसिंहजी के साथ कूच कर मेड़ता में प्रवेश किया।

जयसिंहजी ने आगे जयपुर की ओर कूच किया। रास्ते में गांव भखरी ठहरे।

एक दिन महाराज अभैसिंह जी ने करणोत अभयकरण पुत्र दुर्गादास जी को एक गुलाब का फूल ईनायत किया तो उन्होंने निवेदन किया कि फूल तो पाग[1] में लगाते हैं या नाक से सूंघा जाता है लेकिन पाग व नाक दोनों तो जयसिंह जी ले गये सो फूल का क्या करें। इस पर महाराज अभैसिंह जी ने जयपुर के विरुद्ध सेना तय्यार कर राइकाबाग डेरा किया। राजाधिराज बखतसिंहजी ने लिखा कि राठौड़ अभयकरण जी को मेरे पास भिजवाइये, कुछ निवेदन करना है। तब हुजूर ने अभयकरण जी को भेजा। अभयकरण जी को यह कहकर (राजाधिराज ने) वापस भेजा कि जालोर मुझे दे दीजिये और मैं मेड़ता छोड़ दूंगा। तथा मेरे द्वारा आपकी सेवा में उपस्थित होने पर रुपये तीन सौ प्रति दिन दिलवायें। एवं आप कूच करके पधारें तो जयपुर की धरती पर पहुँचकर युद्ध करेंगे। यह सारी बात महाराज अभैसिंहजी ने मान ली।

फिर सं. 1797* में जेठ में महाराज अभैसिंहजी का डेरा गांव वीसलपुर हुआ। भीणाय, केकड़ी वगैरह स्थापनों पर आदेश पहुँचा तब सभी (सेनाएं) आकर शामिल हुई। महाराज अभैसिंहजी ने राजाधिराज को लिखा कि साथ सारा मौजूद है सो 'दरकूच'[2] शामिल हो रहे हैं, तब तक धैर्य रखना। फिर महाराज ने कूचकर डेरा मेड़ता में किया। राजाधिराज बखतसिंह जी ने महाराज अभैसिंहजी से अर्ज की कि हम कूच करें सो जयसिंहजी जहाँ मिलेंगे वहीं युद्ध करेंगे और अजमेर जयसिंह जी के नियन्त्रण में है सो छीन लेंगे।

फिर जालोर राजाधिराज को प्रदान किया गया। और मेड़ता राजाधिराज ने छोड़ दिया। फिर मेड़ता से कूचकर राजाधिराज ने अजमेर पर अधिकार किया और महाराज श्री अभैसिंहजी ने मेड़ता पर शासन स्थापित कर आगे की ओर कूच किया। सो रियां डेरा किया। जयसिंहजी ने अजमेर छिन जाने की सुनी तब आगरा से कूचकर शीघ्रता से 'दर मंजिल' आकर गांव उठड़ा में डेरे किये। तब राजाधिराज ने अजमेर से कूचकर गगवाणा में डेरा किया। सो जयसिंह जी और राजाधिराज के बीच गांव गगवाणा के डेरों पर घमासान युद्ध हुआ। जयपुर (राजा) सवाई जयसिंह जी के पास फौज

---

* सन् 1739

1. पंगड़ी

2. मंजिल दर मंजिल

पचास हजार थी और राजाधिराज के पास पाँच हजार फौज थी । और जयपुर के जयसिंह जी की सेना में शाहपुरा का सीसोदिया उम्मेदसिंह और गिराल का सरदार हरावल में थे सो इन दोनों की सैन्य टुकड़ियों का सफाया हो गया तथा जयसिंह जी की सेना के और भी अनेक आसामी काम आये ।

राजाधिराज अपने घोड़े पर युद्ध करते हुए दो तीन बार (शत्रुपक्ष की) सेना में से पार निकले । राजाधिराज की नासिका के मूल में तीर लगा । मूंछे भरी थी सो ऊपर रक्त के कण जा पड़े । राजाधिराज की सेना को भी बहुत हानि उठानी पड़ी ।

थोड़ी सेना रह जाने पर नागौर के प्रमुख गांव दुगोली के रतनोत जोधा सरदारसिंह जी ने राजाधिराज के घोड़े की लगाम पकड़कर घोड़े को पीछे मोड़ा । तब राजाधिराज के हाथ में कमान (धनुष) था सो सरदारसिंह जी के सिर पर मारकर कहा कि (युद्ध में) पीठ नहीं दिखाऐंगे । परन्तु सरदारसिंह जी ने जबरदस्ती घोड़े को पीछे मोड़ा ।

और 'खवासें'[1] साथ थी सो दोढीदार[2] पीरा उन्हें लेकर निकल गया । पीरा को पहले फरमाया था कि यदि ऐसी ही विकट स्थिति देखो तो 'खवासों' के सिर कलम कर देना सो पीरा खवासों को लेकर सुरक्षित निकल गया जिससे पीरा पर (राजाधिराज) बहुत महरबान हुए ।

जयपुर (नरेश) सवाई जयसिंह जी के आने की खबर आयी तब राजाधिराज ने अजमेर से महाराज अभैसिंह जी को लिखा था कि आप कूच कर शीघ्र पधारें ताकि 'भगतिया' (जयसिंह जी का व्यंग्यमूलक विशेषण) की ताकत चूर-चूर कर लेंगे । तब महाराज अभैसिंह जी ने प्रत्युत्तर लिखा था कि ठीक है हम शीघ्रतापूर्वक आ रहे हैं । परन्तु बखतसिंह जी जयसिंह जी को जोधपुर पर (हमला करने) लिवा लाये थे जिससे महाराज (अभैसिंह जी) राजाधिराज से खिन्न थे । सो यह विचार किया कि बखतसिंह जी को सबक मिल जाय तो ठीक है जिससे आगे कूच नहीं किया रियां से कूचकर गांव आलणियावास डेरे किये । फिर वहाँ से पुष्कर जी पधारे और उधर से राजाधिराज को भी लेकर सरदार श्री पुष्कर जी आये । दोनों भाई मिले । राजाधिराज ने बहुत उलाहने दिये और कहा कि 'मैं (युद्ध में) काम आ जाता तो आपका कष्ट मिट जाता ।' तब महाराज श्री अभैसिंहजी ने फरमाया कि स्वर्गीय महाराज अजीतसिंह जी और स्वर्गीय माता जी चवांण जी यदि आना चाहें तो तुम ही आओगे । मेरा तुम्हारे सिवाय कौन आत्मीय है । (अर्थात तुम्ही मेरे स्वर्गीय मां-बाप की निशानी हो, तुम्हारा अहित मेरे लिए हितकर कैसे हो सकता है) और बहुत दिलासा दी और फरमाया कि तुमने 'भगतिया' से अच्छा बदला लिया ।

---

1. खास, नजदीक रहने वाली जैसे उपपत्नी ।
2. द्वार सुरक्षा प्रबंधन अधिकारी ।

राजाधिराज का तोपखाना खींचने वाली बैलों की जोड़ियां हट्टी-कट्टी थी सो तोपखाना तो साबुत आ गया और डेरे वहीं रह गये । इसलिये महाराज अभैसिंह जी के पास दूसरा खेमा था, सो दूसरे डेरे वहीं खड़े कर दिये गये ।

और ठाकुर जी श्री मुरली मनोहर जी की सेवा (पूजा) (के हाथी) पर पीछे सेवग माणकचंद बैठा था सो हाथी सवाई जयसिंह जी की फौज में चला गया । राजाधिराज ने ऐसा फरमाया कि श्री मुरली मनोहर जी के दर्शनोपरांत भोजन ग्रहण करेंगे । सेवा का हाथी नहीं (आया) तब तक शाकाहार किया ।

श्री मुरलीमनोहर जी की सेवा इस प्रकार प्राप्त हुई थी । (महाराज अजीतसिंह जी के) जालोर प्रवास के दौरान एक संन्यासी ने महाराज अभैसिंह जी, बखतसिंहजी के माताजी चवांणजी को सेवा दी थी और कहा था कि यह सेवा जब तक रहेगी तब तक तुम्हारे पुत्रों-पौत्रों के पास राज्य रहेगा। महारानी जी के तीन बेटे थे सो महाराज अभैसिंह जी के 'इष्ट' था और जेतसिंहजी अल्पायु थे और महाराज बखतसिंह जी को सेवा सौंपी गई थी । सो 'इष्ट' था इसलिए सेवा का हाथी पुनः आया तब 'सखड़ी भोग' धर कर भोजन ग्रहण किया ।

सं. 1797* के आ. वद 1 जयपुर के राजा जयसिंह जी से राजाधिराज बखतसिंह जी का युद्ध हुआ तब राजाधिराज की इतनी आसामियाँ काम आयी उनकी विगत —

खांप चांपावत आसामी 4

1 रा. कनसिंह पुत्र रूपसिंह पट्टे खाटू ।
1 रा. रूपसिंह ।
1 रा. सवाई सिंह पुत्र किशोर सिंह पट्टे मेरुवास ।
1 रा. विसनदास पुत्र रघुनाथसिंह पट्टे ललाव ।

4

खांप मेड़तिया माधोदासोतों में आसामी 3
1 रा. रामदास पुत्र जेतसिंह पट्टे मांझी नागौर की ।
1 रा. भावसिंह पुत्र गोविन्द दास ।
1 रा. भारथसिंह जो जयसिंह की सेना में था (किन्तु बखतसिंह के पक्ष में) आकर काम आया ।

3

* सन् 1739

खांप जोधा आसामी 2

1 रा. रूपसिंह पुत्र नाहरसिंह पट्टे पालड़ी ।
1 रा. भोपत पुत्र सुजानसिंह पटे छावड़ी ।

2

खांप चांदावतों में 2

1 रा. उम्मेदसिंह पुत्र भावसिंह पटे नोंखा ।
1 रा. लखधीर पुत्र भावसिंह पटे गांव..... ।

2

खांप ऊदावतों में आसामी 2

1 रा. संग्रामसिंह पुत्र सबलसिंह पट्टे सांडीलो ।
1 रा. कीरतसिंह पु4 सबलसिंह पट्टे उचियारड़ा ।

2

और भी राजाधिराज की सेना में आसामी काम आये ।

महाराज अभैसिंह जी ने फिर युद्ध की तय्यारी की । जयसिंह जी के डेरे गांव लाडपुरा में हुए । भंडारी रघुनाथ ने महाराज श्री अभैसिंह जी से अर्ज की कि परस्पर युद्ध न हो तो ठीक है । इससे दोनों राज्य कमजोर पड़ जाऐंगे । अत: आप मुझे भेजिये सो मैं समझाइश करूंगा । तब महाराज ने उसे भेजा भंडारी रघुनाथ जयसिंहजी से मिला और कहा कि आगे जो युद्ध हुआ सो तो आपने देखा ही है और अब दोनों साहिब[1] साथ है सो युद्ध होने से दोनों राज्य कमजोर पड़ जायेंगे ।

तब यह तय किया गया कि परबतसर वगैरह सात परगने जयसिंह जी के अधिकार में थे सो छोड़ देना और राजाधिराज का हाथी उस तरफ चला गया था सो सेवा सहित ले आये और जयसिंह जी के अधिकार में थे सो छुड़वाये ।

जयसिंह जी का तो जयपुर की तरफ कूच हुआ और महाराज श्री अभैसिंह जी का डेरा मेड़ता में दूदासागर तालाब पर हुआ । वहाँ आलीशान महल बनवाये, बाग लगवाये और वहाँ सारे मुत्सदियों, व्यापारियों हेतु आवास बनवाये गये ।

1. महाराज अभैसिंह जी और राजाधिराज बखतसिंहजी ।

जालोर राजाधिराज को देना तय हुआ था सो दिया । श्री दरबार के मुत्सदी थे सो आ गये और राजाधिराज के (मुत्सदी) वहाँ गये ।

स्वर्गीय महाराज (अजीतसिंह जी) के राजवी सलीमकोट में थे उनसे महारोठ का राठौड़ सूरतसिंह[1], किलेदार ऊहड़[2] विहारीदास पुत्र हरीदास गांव कोडणा का स्वामी, मुहनोत चंद्रभाण पुत्र सांवतसिंह और भांड जलाल इन चारों जनों ने पत्राचार किया फिर सवाई जयसिंह जी से रा. जसवंतसिह ने पत्राचार किया कि जोधपुर का राज्य राजवी रतनसिंह जी को दिलवाना ।

और जयसिंह जी महाराज अभैसिंह जी से अप्रसन्न थे अत: जयसिंह जी ने कहा कि तुम लोग उपायकर सरदारों को अपनी ओर मिलाओ । अत: जलाल ने सरदारों के डेरों में घूम-घूम कर कितने ही सरदारों को मिलाया ।

इधर भं. दौलत (राम अमर) सिंह बिना खिदमत जोधपुर में बैठे थे सो इन्हें मेड़तिया जसवंतसिंह और भांड जलाल ने आकर कहा कि तुम इस बात में शामिल हो जाओ । तब दौलतराम, अमरसिंह ने कहा कि शामिल होने वालों में से किसी का रुक्का दीजिये, तब इनके पास रुक्के थे सो दिखाये । तब इन लोगों के सामने तो इन दोनों ने हां भर दी और श्री महाराज तलहटी के महलों में थे वहाँ जाकर अर्ज करवायी कि जरूरी समाचार रूबरू कहने है सो हुजूर (समक्ष) बुलवाइये, तब हुजूर ने फरमाया कि अर्ज लिखकर भेजो । तब इन्होंने समझा कि लिखकर भेजने से (बात) जाहिर हो जाएगी । जिससे अर्ज हो नहीं पाई और हुज़ूर का कूच जयसिंहजी के विरुद्ध हो गया ।

भं. मनरूप जयसिंह जी के पास बंधक था और राजा जयसिंह जी के डेरे पर आगरे में था । तब भंडारी मनरूप को बंधक के रूप में बुलाकर जयसिह जी ने कहा कि तुम इस बात में शामिल हो जाओ, तब इसने देखा कि पराधीन हूँ सो मना करूंगा तो और कष्ट मिलेगा सो स्वीकार कर लिया ।

तब राजा जयसिंह जी ने सारी बात इसे स्पष्ट बतायी । उसके बाद गगवाणा में राजा जयसिंह जी और राजाधिराज के बीच युद्ध हुआ और राजा जयसिंहजी के डेरे गांव लाडपुरा में हुए तब भं. मनरूप राजा जयसिंह जी के साथ ही था सो मनरूप को कहा कि सरदार कितने ही मिल गये हैं, अत: अब तुम जाकर यह काम सिद्ध करो । योजना यह बनी कि लाडपुरा से जयसिंह जी के पांच सौ घुड़सवार रवाना होंगे सो 'लखणा पोल' की तरफ से जोधपुर दुर्ग में प्रवेश करेंगे और किलेदार ऊहड़ विहारीदास मिला हुआ है सो प्रोल पर अधिकार कर लेंगे और गढ में राजवी रतनसिंह जी को मुक्त करने के बाद जयसिंह जी को समाचार भेजेंगे । तब जयसिंह जी 'दरकूच' जोधपुर आकर सारी बात का बंदोबस्त कर लेंगे । इस प्रकार के समाचार जयसिंह जी ने कहे ।

1. यहाँ जसवंतसिंह होना था ।
2. राठौड़ों की एक शाखा; उहड़ पुत्र जोंपसाव पौत्र आसथान के वंशज ।

तब भं. मनरूप ने लाडपुरा के डेरे से रवाना होकर, महाराज अभैसिंह जी के डेरे गांव रियां थे, वहाँ ड्योढ़ी पर आकर अर्ज करवाई तब (महाराज ने) फरमाया कि डेरे पर जाकर आओ तब पुन: अर्ज करवायी कि जरूरी समाचार अर्ज करवाना है सो पानी भी दर्शनोपरांत पीऊंगा, तब अंदर बुलाया। (मनरूप ने अर्ज किया) कि प्रोहित जगूजी को तो खड़ा रखिये और बाकी सभी लोगों को बाहर भेज दीजिये। फिर प्रोहित जगूजी को शामिल रखकर सारे समाचार क्रमवार सूचित किये कि कल लाडपुरा से पांच सौ घुड़सवार चढाई करेंगे सो 'लखमण पोल' के मार्ग से दुर्ग में प्रवेश करेंगे सो उनके घुड़सवार पहुंचने से पहले जोधपुर समाचार भेजिये।

तब सरदार दौलजी और चांपावत (पदमसिंह) पुत्र अनोपसिंह गांव धामली का इन दोनों को भेजा और आदेश लिख दिया कि (दुर्ग) पदमसिंह को सौंप देना सो ये यहाँ आये और किलेदार विहारीदास हुजूर के पास गया। पदमसिंह ने सारा बंदोबस्त कर लिया। किलेदारी दौलतराम ने देने नहीं दी तब दौलतसिंह वापस हुजूर के पास गांव रियां के डेरों में गया और सारे षडयन्त्र के बारे में महाराज को सूचित किया। बाद में रियां के डेरों में मुहनोत चन्द्रसेण को कैद किया और भांड जलाल को पकड़कर कैद किया और मेड़तिया जसवंत सिंह के विरुद्ध सैन्य टुकड़ी भेजी सो महारोठ को जा घेरा और एक महीने तक गोले चले बाद में मुल्क के बाहर निकाल दिया और जसवंत का पट्टा जसवंत के भाई शेरसिंह को लिख दिया और ऊहड़ विहारीदास को मन से उतार कर सीख दी (और कहा) कि मुँह मत दिखाना। तब वह घर जाकर शोकवश मर गया और विहारीदास का पुत्र रणछोड़दास डेरों में चोथ की पूजा कर रहा था उसे संवत् 1800* में मेड़ता से अजमेर की तरफ कूच होते समय ईदा जोरावरसिंह पुत्र लखधीर के हाथों मरवा डाला। कोडणा का पटा जोरावर सिंह पुत्र लखधीर को दिया और ऊहड़ों को धरती (देश) से बाहर निकाल दिया गया और सरदार कितने ही इनके साथ मिल गये थे उनकी बात फिलहाल दबाकर रख ली।

इस बंदगी के कारण श्री हुजूर भं. मनरूप पर बहुत प्रसन्न हुए और फरमाया कि तुम्हारा परिवार खींवसी से लेकर आज तक स्वामिभक्त रहा है, सो ऐसी सेवा तो तुम लोगों से ही बन आती है। तुम्हारे समान हमारे दूसरा कोई सेवक है नहीं।

अत: इस बंदगी के कारण दीवानगी का सिरोपाव इनायत किया।

भंडारी राय रघुनाथ पुत्र रायचंद ने रुपये आठ लाख राज्यकोष में जमा करवाये। बाद में संवत् 1798** में रामशरण हुआ तब मेड़ता में लड्डुओं का ग्राम भोज (सारे गांव को भोजन कराना) हुआ। संवत् 1799*** में राजाधिराज आज्ञा लेकर नागौर पधारे। सं. 1799 में भा. सुदि 4 पं. लालजी, दीवान रामकिशन और बख्शी बालकिशन को उनके बाबस्तों सहित कैद किया। सं. 1799 में कार्तिक वदि 1 को औहदे प्रदान किये उसका विववण —

---

* सन् 1742 ** सन् 1740 *** सन् 1741

1 दीवानगी रायांराव अमरसिंह पुत्र खीवसी को और बैठने का सम्मान और सिरोपांव इस प्रकार दिया उसका विवरण —

पालखी 1, हाथी 1, कड़ा 1, मोती 1, मोतियों का कंठहार 1, सिरपेच 1 ।

1 सूबा भं. मनरूप पुत्र पोमसिंह को दिया सिरोपावं, कड़ा 1 मोती 1 पालखी 1, कंठहार 1, सिरपेच 1 और बैठने का सम्मान प्रदान किया गया ।

1 भं. दौलतराम और थानसिंह पुत्र खीवसी को जोधपुर की हाकमी और कड़े और रुपये 1000/-

सं. 1800* आसोज सुद 14 जयपुर महाराज सवाई जयसिंह जी देवलोक हुए जिसकी खबर मेड़ता में महाराज श्री अभैसिंहजी को मिली और राजा ईश्वरीसिंह जी सिंहासन पर बैठे । भं. अमरसिंह को दिल्ली की ओर विदा किया गया । डेरे महारोठ में किये गये । भं. सूरतराम को कार्तिक में अजमेर पर (अधिकार हेतु) विदा किया, जिसके साथ इन आसामियों को भेजा —

1 रा. सूरजमल पुत्र सरदार सिंह गांव आलणियावास ।

1 जोधा शिवसिंह पुत्र राजसिंह वगैरह पीसांगण देवगांव के और

1 कुंवर बहादुरसिंह रूपनगर के राजा राजसिंह के कुंवर को विदा किया ।

इतनी आसामियों को विदा किया सो जाकर अजमेर पर अधिकार कर लिया । राजा जयसिंह जी का हाकम था सो भाग गया और फौजदार खंगारोत[1] बनेसिंह वचूण का था सो लड़कर काम आया । गौड़ सूरजमल राजगढ में था सो उसे निकाल दिया और राजगढ पर अधिकार कर लिया । और भीणाय रामसर पुष्करजी में जयसिंह के हाकिम थे सो तमाम भाग गये और (वहां) श्री दरबार[2] का अधिकार हो गया । सं. 1800 के माघ में महाराज श्री अभैसिंहजी ने मेड़ता से कूचकर डेरे गांव डांगावास में किये और राजाधिराज भी आकर शामिल हुए । कार्तिक वदि 1 को कूच अजमेर की तरफ हुआ सो पुष्करजी में डेरे हुए ।

वहाँ भं. अमरसिंह के महारोठ में रामसरण होने की खबर मालूम हुई । तब एक टंक तक नोबत नहीं बजी और भं. मनरूप, दौलतराम के डेरे पर मातमपोशी करने के लिये श्री महाराज अभैसिंहजी पधारे ।

---

* सन् 1742

1. खंगारत : कछवाहा राजपूतों में खंगार पुत्र जगमाल पौत्र राजा पृथ्वीराज के वंशज ।

2. महाराज अभैसिंह जी ।

ख़ातर दिलासा दी। और मेड़ता में लड्डुओं का मृत्युभोज हुआ।

तत्पश्चात् महाराज का कूच हुआ सो डेरा अजमेर के गांव छांतड़ियां हुआ। कोटा से पाँच हजार घुड़सवारों को लेकर भट्ट गोविन्दराम महाराज के शामिल हुआ महाराज के पास तीस हजार की फौज थी।

और जयपुर से राजा ईश्वरीसिंह जी ने डेरे गांव ढाणी किये तब राजाधिराज ने युद्ध की तय्यारी की। तब जयपुर की ओर से खत्री राजमल और इधर की ओर से प्रोहित जगूजी की मार्फत बात इस प्रकार तय हुई कि (जयसिंह जी) के समय से भं. रतनसिंह वगैरह जो बंधक थें उनको तो सौंप दिया। और बीकानेर के गांव भादरा का कांधलोत लालसिंह था जिसे भी जयसिंह ने पकड़ कैद किया था उसे छुड़ाया। सो संधि हुई और युद्ध होने नहीं दिया जिससे राजाधिराज नाराज होकर नागौर चले गये। हुजूर से मिले बिना कूच कर दिया।

तत्पश्चात् महाराज श्री अभैसिंहजी और जयपुर महाराज ईश्वरीसिंह जी का मिलाप हुआ और ईश्वरीसिंहजी के डेरे पर दावत हुई, महाराज भोजन अरोगने के लिये पधारे। और डेरे छांतड़ी रखकर दोनों महाराज गिनेचुने लोगों को साथ लेकर पुष्करजी पधारे, स्नान किया। श्री महाराज रुपियों की तुला पर विराजे (अर्थात् तुलादान किया)। फिर श्री हुजूर की ओर से दावत की तय्यारी आनासागर के महलों में हुई। सो दोनों महाराज अरोगने हेतु पधारे। भोजनोपरांत दोनों महाराज छांतड़ी के डेरों में दाखिल हुए। फिर महाराज ईश्वरीसिंह जी तो वापस जयपुर चले गये और महाराज के डेरे छांतड़ी में ही रहे।

भट गोविन्दराम ने अर्ज की कि बूंदी पीछे हाडा[1] दलेलसिंह जी के अधिकार में है सो सहायता कर राव उम्मेदसिंह जी को दिलवा दीजिये।

भं. गोरधनदास, रतनसिंह और काम होने के बाद राजा किसोर सिंह जी आये और गांव बारह से राजगढ पटे दिया और नवाब फकरुद्दौला गुजरात के सूबे की ओर जा रहा था सो श्री महाराज साहिबों से मिला। तब महाराज ने फरमाया कि राजा किसोरसिंह जी और पं. बालकिशन तुम्हारे साथ भेज रहे हैं सो तुम इनके शामिल जाकर बूंदी खाली करवादो तब नवाब ने हां भरी। तब राजा किसोरसिंह को फौज देकर नवाब फकरुद्दोला को विदा किया सो बूंदी को जा घेरा। बूंदी में हाडे चार हजार थे। राजा किसोर सिंह जी के गोली लगी सो वे घायल हुए और भट गोविन्दराम के गोली लगी सो वह भी काम आया। बूंदी खाली करवाकर उम्मेदसिंह जी को (गद्दी पर) बैठा दिया। दो अथवा चार महीने बाद ईश्वरीसिंह जी ने फौज भेजकर वापस दलेलसिंह जी का आधिपत्य करवा दिया।

1. हाडा : चौहान वंश के राजपूतों की एक शाखा।

और रूपनगर[1] के राजा राजसिंह नादिरशाह दिल्ली आया तब भागकर रूपनगर आ बैठे थे। सो नादिरशाह दिल्ली उजाड़कर वापस विलायत चला गया उसके उपरांत राजसिंहजी के बड़े पुत्र सांवतसिंह जी थे उन्हें तो रूपनगर ही रखा और छोटे पुत्र बहादुरसिंह जी को दिल्ली 'चाकरी'[2] में भेजा सो सांवतसिंह जी खरची पहुँचाते नहीं तब भं. अमरसिंह ने श्री हुजूर से पूछ कर बहादुरसिंह जी को हुजूर के पास बुला लिया। और रु. 100/- रोजीना (दैनिक वेतन) कर दिया, डेरा, सांईवान वगैरह नहीं थे सो दिया।

तत्पश्चात् सं. 1800* में भं. सूरतराम को अजमेर पर अधिकार करने हेतु विदा किया तब पीछे से बहादुर सिंहजी को भेजा।

संवत 1801** में भं. मनरूप दौलतराम को गांव छांतड़ी के डेरों में कैद हुई। भं. गिरधरदास को तो दीवानगी इनायत हुई और भं. रतनसिंह को सूबा इनायत हुआ।

और सांभर का सरोवर नावा तक था और नमक जमता था सो खीची शिवदान को भेजकर नमक निकलवाया सो रुपये सवा लाख ले आया। सो बालदों की भर्ती हुई उसके बाद नांवा में हाकिम रहना शुरु हुआ।

श्री महाराज कूचकर अजमेर शहर में ख्वाजा दानिस की हवेली में दाखिल हुए और लसकर के डेरे शहर से बाहर रहे। तत्पश्चात् नवाब कमरुद्दीन खां के पुत्र के नाम अजमेर का सूबा था, सो उसके आने की सुनी तब महाराज ने डेरे शहर से बाहर किये।

वह तो अजमेर के गांव हरमाड़ा के डेरों से, उसके पीछे काम पड़ गया, जिससे चला गया और श्री महाराज के डेरे बाहर ही रहे सो दरबार के और सभी के पक्के मकान बन गये थे।

सं. 1803*** में भंडारी रतनसिंह को बीकानेर पर विदा किया और कितने ही सरदार साथ में थे सो बीकानेर गये। पीछे से मोदी टीकूदास और महारोठ परबतसर के सरदारों को और विदा किया। दोनों दल मिलकर बीकानेर शहर जा पहुँचे।

बीकानेर के महाराज जोरावरसिंह जी रामशरण हुए थे और पुत्र नहीं हुआ तब जोरावरसिंह जी के चांचा अणदसिंहजी के पुत्र गजसिंह जी को सिंहासन पर बैठाया। बड़े अमरसिंह जी थे उन्हें नहीं बैठाया। अमरसिंह जी महाराज की फौज में थे। कितने ही सरदार शहर से बाहर आये तब दरबार की सेना चढी, तब युद्ध हुआ और इतनी आसामियां सं. 1804**** में श्रावण में काम आयी उनकी विगत इस प्रकार है —

---

* सन् 1743 ** सन् 1743 *** सन् 1745 **** सन् 1746

1. रूपनगर (किशनगढ़) राठौड़ शासित राज्य। 2. बादशाह की सेवा में।

1 भंडारी रतनसिंह के एक तीर मुँह पर लगा और बरछी काले केशों में लगी सो काम आया और अजमेर में खर्च (मृत्यु भोज) हुआ।

1 कूंपावत केसरीसिंह पटे नाड़सर।

1 चांपावत अमरसिंह पुत्र धनराज पटे गांव रणसी गांव।

1 ऊदावत अक्षयसिंह

1 मेड़तियो भीवसिंह

उनके भी बहुत से आदमी काम आये। बाद में मोदी टीकमदास तोपखाना और लोगों को लेकर हुजूर के पास आया। सं. 1804* में भाद्रपद में काम इस माफिक हुए —

1 भंडारी मनरूप पुत्र पोमसिंह को दीवानगी इनायत हुई। और बैठने का सम्मान पहले से ही था और हाथी इनायत हुआ।

1 भंडारी दौलतराम पुत्र थानसिंह को सूबेदारी और बैठने का सम्मान और पालखी इनायत हुई।

1 भंडारी सूरतराम को जोधपुर की हाकमी दी।

1 भंडारी जोधमल पुत्र अमरसिंह को मेड़ता की हाकमी हुई।

1 सिरोही का चांदावत बहुत मनमानी कर रहा था। भंडारी मनरूप ने उसे पकड़कर अपने डेरों में कैद कर अजमेर चौकी में सौंप दिया।

1 भंडारी मनरूप को बीकानेर पर विदा किया, साथ में पोकरण का चांपावत देवीसिंह नींबाज का ऊदावत कल्याण सिंह रियां का मेड़तिया शेरसिंह पुत्र सरदार सिंह और राजा बहादुर सिंह, रूपनगर के राजा सांवत सिंहजी (के छोटे भाई) इतनी आसामियों को भेजा।

सो डीडवाना जाकर डेरे किये और इतने बीकानेर के (लोग) साथ में थे राजा अमरसिंह जी पुत्र अणदसिंहजी, बीका भींवसिंह गांव महाजन का।

राव दक्खनी (मराठा राव) जयपुर पर आया मल्हारराव और वकील भट लक्ष्मीचंद के पत्र आये सो सहायता मंगाई तब हुक्म पहुँचा सो मनरूप सारी फौज लेकर हुजूर आया। मनरूप को

* सन् 1746

और सरदारों को मल्हार की सहायतार्थ भेजा। बगरू के डेरों पर मल्हारराव और राजा ईश्वरीसिंह जी के बीच वार्ता हुई। मल्हार राव के तो रू....... साख तय हुई और राजा माधोसिंहजी मल्हार के साथ थे उनको टोडा, टोंक, मालपुरा ये तीनों परगने दिलवाये।

रावराजा उम्मेदसिंहजी मल्हार के साथ में थे सो फौज तो वहाँ से बूंदी भेजी और मल्हारराव गिने-चुने साथ से और मल्हार (राव के पक्षधर) राजा माधोसिंहजी, रावराजा उम्मेदसिंह जी अजमेर आये।

महाराज श्री अभैसिंह जी अगुवानी में पधारे। मल्हार जी के लिये अच्छी खानों की वटियाँ खड़ी करवाई। भोजन दरबार की ओर से जाता था।

एक दिन महाराज श्री अभैसिंह जी, माधोसिंह जी, उम्मेदसिंह जी, किसोरसिंहजी एक ही थाल में अरोगे। पास में मल्हारराव और मल्हार का पुत्र खांडेराव ने भोजन किया। रावराजा उम्मेदसिंहजी के संबंध में शत्रुलोग और प्रकार से बात बनाते थे सो साथ-साथ भोजन किया। जिससे आशंका मिट गई।

मल्हारराव, माधोसिंह जी तो उम्मेदसिंह जी के डेरे पधारे। बाद में हाथी घोड़ा वगैरह महाराव को देकर सीख दी सो बूंदी गये।

बादशाह मोहम्मदशाह पर नवाब ने चढाई की तब महाराज अभैसिंहजी और राजाधिराज बखतसिंहजी को दिल्ली बुलवाया गया। सो महाराज तो पधारे नहीं और राजाधिराज ने कूच किया। तब भंडारी मनरूप और चांपावत देवीसिंह पुत्र महासिंह को हुक्म दिया कि तुम जाकर राजाधिराज को रोको और कह दो कि दिल्ली नहीं जाये, खरची हम दे देंगे। तब इन्होंने जाकर रोका परन्तु राजाधिराज माने नहीं और रवाना होकर दिल्ली चले गये।

पठान के विरुद्ध शाहजादा अहमदशाह, वजीर कमरदीन खां, जयपुर राजा ईश्वरीसिंहजी वगैरह को बादशाह ने भेजा। पठान से युद्ध हुआ और वजीर कमरदीनखां के गोला लगा सो काम आया, जयपुर राजा ईश्वरीसिंह भाग गये और शाहजादा अहमहशाह की फतह हुई पठान वापस चला गया।

सं. 1805* में बादशाह मोहम्मद शाह की मृत्यु हुई तब शाहजादा अहमदशाह सेना लेकर पठान के विरुद्ध निकला था सो वापस दिल्ली आकर तख्त पर बैठा। राजाधिराज को खरची के रुपये, सांभर, डीडवाना, नारनौल और गुजरात का सुबा देकर विदा किया।

---

* सन् 1747

सो समाचार आये तब श्री महाराज ने सेना इकट्ठी की और मल्हार बूंदी में था सो भंडारी मनरूप और चांपावत देवीसिंह को बुलाने के लिये भेजा । रु. 11000/- प्रतिदिन तय हुए और बीस हजार घुड़सवार सेना लेकर बुलाया । और श्री महाराज ने कूच किया और राजाधिराज के सांभर पहुँचने की खबर आयी तब सांभर डेरे किये । सांभर की ओर कूच होते समय किसोरसिंह जी को राजा बहादुर का खिताब इनायत हुआ ।

यह तय हुआ कि नांवा, डीडवाना तो राजाधिराज को दिये जाय और जालोर वापस ले ली जाय । दोनों साहिब मिले । तत्पश्चात् राजाधिराज तो कूच कर नागोर पधार गये । मल्हारराव अपने मुल्क को चला गया । जालोर राजाधिराज से पुन: लेना तय हुआ था सो उन्होंने दिया नहीं ।

महाराज श्री अभैसिंहजी ने निर्माण कार्य करवाये उनका विववण —

1 तलाब अभयसागर चांदपोल के बाहर पश्चिम की तरफ सं. 1786* में निर्माण प्रारम्भ हुआ रुपये तीन लाख लगे परन्तु संपूर्ण नहीं हुआ ।

1 गांव चोखां में बाग लगवाया परकोटा और 'अठपेलू'[1] कुआं बनवाया । महलों की नींव दिलवायी सो अधूरे है ।

1 मंडोर में स्वर्गीय महाराज अजीतसिंह जी का देवल करवाया सो अधूरा है ।

1 बाग की प्रोल, महल समूह, गऊमुख और इस तरफ ड्योढ़ी के ऊपर बंगला और देवताओं की मूर्तियाँ बनवायी । इस तरफ वाली 'साल' महाराज श्री अजीतसिंह जी द्वारा बनवायी हुई है ।

1 जोधपुर के किले पर राव जोधाजी ने चेजा के काम से परकोटा बनवाया था सो महाराज अभैसिंह जी ने चार चाँद तो जोधाजी के हाथ के रखे और बाकी सारा दुर्ग उखलवाकर पक्का करवाया । गोल की घाटी की तरफ बुर्ज खड़ा किया । सूरजपोल, लोहापोल के सामने चौक के लिये यह काम करवाया परन्तु बुर्ज अधूरे हैं । और चौकेलाव कुएं का नवीनीकरण करवाया जिस पर रुपये पचास हजार व्यय हुए ।

और थीराद का परगना महाराज के मनसब में था जहाँ हाकिम की नियुक्ति हुई सो पालनपुर के पंचोलियों को ईजारे पर दिया सो उनसे राधनपुर वाले बाबियों ने छीन लिया सो उन्हीं के नियन्त्रण में रहा ।

---

* सन् 1728

1. ऐसा कुआ जिसकी मुंडेर अष्ठकोणीय हो और आठों उपदिशाओं में पानी सींचने (निकालने) की व्यवस्था हो ।

सं. 1805* में फाल्गुन सुदि 6 को रानीजी कछवाही जी अजमेर के डेरों पर देवलोक हुई । श्री महाराज की इन पर बहुत मर्जी थी सो अत्यधिक अफसोस किया और काफी दिन तक पलंग पर नहीं पोढ़े ।

महाराजाधिराज महाराजा जी श्री 108 श्री अभैसिंहजी सं. 1806** आषाढ सुदि 15 सोमवार को अजमेर के डेरों पर धाम पधारे । दाह संस्कार श्री पुष्करजी में हुआ ।

पीछे सतियाँ हुई उनकी विगत —

2 खवासें[1] दो

11 पड़दायतयियाँ[2]

13

जोधपुर में खबर संवत 1806*** में श्रावण वदि 2 को आई ।

तब बुधवार को सतियाँ हुई और मंडोवर में दाह संस्कार हुआ वहाँ जलीं उनका विवरण —

6 रानियाँ सो प्रति रानी तीन-तीन हजार रुपये और खैरात करने हेतु रुपये राजकोष से दिये ।
7 गयनियां पड़दायतियां
1 गवसर अजबगुल

14

जुमले सतियाँ सताइस हुई 27

महाराज श्री अभैसिंह जी की मृत्यु पर ब्रह्म भोज श्रावण वदि 7 को हुआ । दक्षिणा के रूप में दो-दो रुपये दिये ।

महाराज श्री अभैसिंहजी के राजलोक (रानियों) का विवरण । राजलोक 12 जिनका विवरण—

1 बड़े तंवरजी[3] पाटण के तंवर बक्षीराम जी के बेटी कुमार पद के समय विवाह हुआ था । उन्होंने गोल में नया झालरा (कुआं) बनवाया । रुपये 42000/- व्यय हुए ।

महाराज के पीछे सती हुए उसी दिन मंडोवर पधारते समय मार्ग में झालरा देखा तब कहा कि झालरा अच्छा नहीं बनवाया सो गजधरों से तकरार की । इन रानी तंवरजी के

* सन् 1748 ** सन् 1748 *** सम् 1748

1 व 2. उपपत्नियों के प्रकार । 3. तोमर राजपूत वंश की ।

राजकुमार 1 और राजकुमारी 1 हुए उनकी विगत — कुंवर जोरावरसिंह जी हुए थे सो एक वर्ष के होकर तथा राजकुमारी छोटी उम्र में चल बसे।

1 रानी नरूकीजी[1] लदांणा के नरूका केसरीसिंहजी की बेटी कुमारपद के समय विवाह हुआ था। इनके राजकुमार रामसिंह जी हुए जिनका जन्म 1787* में भाद्रपद वदि 10 को हुआ।

1 रानी कछवाही जी[2] आमेर जयपुर के राजा सवाई जयसिंहजी की बेटी उदयपुर के राणा संग्रामसिंह जी की दौहित्री। जिनको महारानी पद दिया पटा सताईस हजार का दिया। सो अजमेर के डेरों पर सं. 1805 में फाल्गुन सुदि 6 को देवलोक हुए जिसका अफसोस महाराज ने बहुत किया।

1 रानी वीरपुरी[3] जी लूणावाड़ा के सो सुबा गुजरात में अहदाबाद में रामसरण हुए।

1 राणी देवड़ी जी[4] सिरोही के राव उदयसिंह की बेटी, अहमदाबाद के सुबे की ओर पधारते समय गांव पोसालिये डोला आया था वहाँ विवाह हुआ था।

1 बड़े भटियाणी जी[5] जैसलमेर के गांव लाठी के..... की बेटी सो जोधपुर में सती हुए।

1 रानी छोटी भटियाणी जी गांव ओसियां के रावलोत[6] स्वरूप सिंहजी की बेटी, महाराज के पीछे जोधपुर में सत किया।

1 रानी लाडी भटियाणी जी देवरीया के भाटी पदमसिंह की बेटी, डोला आया था।

1 रानी लाडी तंवरजी बीकानेर इलाके के लखासर के तंवर जोरावरसिंह की बेटी, सो जोधपुर में सती हुए।

1 रानी जाड़ेची जी जोधपुर में महाराज के पीछे सती हुए।

1 रानी राणावत जी[7] वणेड़ा के, महाराज के पीछे जोधपुर में सती हुए।

---

12 जुमले रानियां 12

---

* सन् 1729 ** सन् 1748

1. कछवाहा वंश की नरूका शाखा की।
2. कछवाहा राजपूत वंश की।
3. सोलंकी राजपूत वंश की वीरपुरा उपशाखा की।
4. चौहान राजपूत वंश की उप शाखा देवड़ा वंश की।
5. भाटी राजपूत वंश की।
6. भाटियों की एक शाखा।
7. सिसोदिया गुहिलोतों की राणावत शाखा की।

1 पासवान[1] गुणरेखा के दो पुत्र हुए थे विगत — लालजी, रूपजी ये दो पुत्र ।

11 पड़दायतियाँ सो महाराज के पीछे पुस्करजी में सतियाँ हुई ।

4 खवासें की विगत —

1 जीवसुख महाराज के साथ पुस्कर जी में सती हुए जिनके जीवजी नामक पुत्र हुआ ।

अंतसुख दे महाराज के पीछे पुस्कर जी में सती हुए ।

स्नेहसुख और रतन ज़ोत

जुमले 4

7 गायणिया[2] सो महाराज के पीछे जोधपुर में सतियाँ हुई ।

27

इति श्री महाराज अभैसिंहजी पुत्र अजीतसिंह जी की ख्यात संपूर्ण । यहाँ से आगे महाराज श्री रामसिंहजी की (ख्यात) लिखी जाएगी ।

---

1. उपफली का प्रकार ।
2. गायिकाएँ

राठौड़ौ री ख्यात

महाराज श्री रामसिंह जी पुत्र अभेसिंहजी का जन्म संवत 1787* के प्रथम भाद्रपद कृष्ण 10 सोमवार का और संवत 1806** के श्रावण शुक्ल 10 गुरुवार को वे जोधपुर गढ़ पर राज्यतिलक विराजे। तत्पश्चात् कच्ची-सौहवत [1] के कारण नादानी की बातें करना प्रारम्भ कर दिया और उमरावों[2] को नाराज कर दिया। फलस्वरूप कितने ही (उमराव) राजाधिराज बखतसिंहजी के पास नागौर चले गये और राजाधिराज को भी (रामसिंहजी ने) नाराज कर दिया जिससे दोनों ओर से भीषण युद्ध हुए। फिर महाराज बखतसिंह जी ने छल-बल कर जोधपुर का राज्य हथिया लिया महाराज रामसिह जी ने युद्ध तो अनेक किये परन्तु जोधपुर का राज्य पुनः प्राप्त हुआ नहीं और पीसोर में देवलोक[3] हुए। और पद एवं सेवाएं इतनी इनायत की जिसका विवरण —

धायभाई करणें को पचास हजार का पट्टा[4], हाथी, घोड़ा, पालखीं[5], जड़ाऊ तलवार, कटारी, मोतियों का कंठहार प्रदान किये।

चाकर दाने को सिरपाव[6]।
चूड़ीगर[7]. . . के दिये।
घसींयारे[8] को सिरपाव कडा मोती दिये।

पाठभेद —

राठोड़ौ की वंशावली की प्रतिष्ठान में उपलब्ध हस्त प्रति के अनुसार —

नगारची अमीये को कड़ा, मोती, सिरपाव, ढाल, तलवार कटारी स्वयं (महाराज) के बांधने की इनायत किए।

---

* ई। 1729
** ई.1748
1. बुरी संगत।
2. प्रमुख ठाकुर, अमीर।
3. देहावसान हुआ।
4. एक अथवा अनेक गांवों का राजस्व प्राप्त करने का अधिकार पत्र।
5. प्रतिष्ठान में उपलब्ध राठौड़ों की वंशावली हस्तप्रति में निम्न पंक्तियाँ अतिरिक्त हैं —

किलंगी, सिरपेच, ऊठने और बैठने का सम्मान, भारी सिरपाव और राज्यतिलक विराजे तब नजराने के रुपये, हाथी घोड़े प्राप्त हुए सो रुपये तो इनायत किये और हाथी घोड़े, राज्य में ही रखे।

6. एक प्रकार का राजसी सम्मान (सिर से पांव तक की पौशाक)
7,8 . जाति विशेष।

चाकर चांदा को सिरपाव, कड़ा, मोती और गांव रोइला और सेज बरदारी (शयनकक्ष की सेवा)

चूड़ीगर सरपदीन को सिरपाव और कड़ा-मोती ।

घसीयारा खूमो ग्वदा बगस को सिरपाव, कड़ा-मोती ।

मुत्सदियों को पद एवं सिरपाव प्रदान किये उनका विवरण —

दीवान पदवी भंडारी[1] मनरूप के पुत्र सुरतराम को दी । सिरपाव और बैठने का सम्मान दिया ।

बख्शी पद पंचोली[2] खीमकरण, लालजी के पुत्र को और सिरपाव कड़ा-मोती दिए ।

सुबेदारी भंडारी दौलतराम को, सिरपाव, पालखी और बैठने का सम्मान ।

खानसामा पद पुरोहित[3] जगन्नाथ के पुत्र शिवकिसन को (साथ में) सिरपाव पालखी और बैठने का सम्मान ।

व्यास पदवी व्यास दौलतचंद पुत्र फतेचंद को इनायत, व्यास उदेचंद से तागीर ।

भंडारी मनरूप एवं पुरोहित जगन्नाथ दोनों को खातिर-तसल्ली के सिरपाव प्रदान कर अजमेर भेजा ।

राजाधिराज बखतसिंह जी को महाराज श्री अभेसिंह जी के देवलोक होने का (दुखद) समाचार नागौर में प्राप्त हुआ तब बहुत शोक प्रकट किया और स्नान करने हेतु तालाब पर गए[4] । धायाजी व धायभाई हरनाथ एवं पुरोहित विजयराज को टीके[5] के हाथी, घोड़े देकर जोधपुर भेजा । महाराज रामसिंहजी ने फरमाया कि जालोर का परगना छोड़ो तो टीका लें । तब धायजी ने राजमाता नरुकी जी से निवेदन किया तो नरूकी जी ने फरमाया कि बच्चा है और हठ कर रखा है सो महाराज (रामसिंहजी) के पास से बाद में वापस दिलवा देंगे । तब इन लोगों ने राजाधिराज को (पत्र) लिखा, सारा विवरण लिखा । तब राजाधिराज ने प्रत्युत्तर लिख भेजा, "जालोर तो मेरे हिस्से में आई है और मैं आधा राज्य मांगने का हकदार हूँ केवल जालोर पर ही संतोष कर बैठा हूं ।"

फिर 'वाभोजीसा'[6] तो आलसी थे और रामसिंह (उत्साही) युवक है । मैं हरावल[7] होकर जालोर जैसे कितने ही परगने ले दूंगा ।"

1. महाजनों की एक उपजाति । 2. कायस्थ । 3. ब्राह्मणों की एक उपजाति ।
4. स्वजन के देहावसन हो जाने पर उसके दाह के पश्चात् स्नान करने का विधान है ।
5. राज्याभिषेक पर सम्मान पूर्वक दी जाने वाली भेंट ।
6. बड़े भाई साहब अर्थात् अभेसिंह जी ।
7. सेना का अग्रिम भाग ।

ये समाचार धायजी व पुरोहित जी ने महाराज रामसिंह जी को मालूम करवाये तब (उन्होंने) फरमाया कि और प्रदेश तो मेरे भाग्य में लिखा होगा तो आ जाऐंगे परन्तु आप तो जालोर छोड़ दो वरना नागौर भी छुड़ा लेंगे और यहाँ से चले जाओ। तब धायजी, धायभाई और पुरोहित विजयराज टीका लेकर वापस नागौर लौट गये।

महाराज अभेसिंह जी अजमेर राज्य में डेरे दाखिल[1] हुए जहाँ देवलोक हुए सो सेना और सरदार तो अजमेर ही थे और सरदारों के कंवर जोधपुर में हजूर[2] में आये सो रीयां के ठाकुर शेरसिंह जी के पुत्र जालमसिंह जी, फतहसिंह जी हजूर में रहते थे सो महाराज की इन पर मर्जी (प्रसन्नता) अत्यधिक हुई और ढोली अमीया प्रभावशाली हुआ, जिसे गांव पाल पट्टे दिया।

एक दिन मांढा का ठाकुर कुसालसिंह कूपांवत हजूर गया सो महाराज और रीयां के शेरसिंहजी के पुत्र खिलवत[3] कर रहे थे तब कुसाल सिंह देखकर लौट पड़ा। इस पर जालमसिंह जी ने महाराज से निवेदन किया कि इनको भी खिलबत में शामिल करवायें अन्यथा हमारी लोक निन्दा करवायेंगे। तब महाराज ने पुकार कर कहा, 'कुसालसिंह लौट आओ।' परन्तु कुसालसिंह जी तो कदम बढ़ाता चला गया इस पर महाराज ने दौड़कर कुर्ते के 'चाल'[4] पकड़े।

चाल फट गये परन्तु कुसालसिंह खड़ा रहा नहीं, ड्योढी से बाहर निकल गया। तब ड्योढी के महल पर चढ़कर आवाज दी 'यहाँ कोई है?' पृथ्वीसिंह पुत्र फतहसिंह था उसे कहा, 'कुसालसिंह को वापस बुला लाओ।' तब पृथ्वीसिंह लोहापोल पहुँचा और (कुसालसिंह) से बोला, 'नादान राजा है और तुम्हें बुला रहे है सो तूं क्यों नहीं जाते?' तब कुसालसिंह ने कहा खिलबत में साथ रहना मेरे लिये तो संभव नहीं, तब पृथ्वीसिंह वापस भागे (और महाराज के पास पहुँचे)। महाराज ने फरमाया कि या तो कुसालसिंह को ले आओ या तुम भी निकल जाओ तब पृथ्वीसिंह ने सेवक को (कहा) खटिया उठाकर गढ से उतार दो[5]। सो डेरे[5a] पर आकर चढ़े[6] सो महाराज बखतसिंह जी ने रोजीना[7] नियत कर दिया और अच्छी तरह रखा।

---

1. पड़ाव स्थापित करवाकर वहाँ निवास करना।
2. राजा की सेवा में।
3. खिलबत = संभवतः अमर्यादित हंसी-ठिठोली।
4. कुर्ते के निचले किनारे (पल्ला)।
5. मेरा सामान खेमे में पहुँचा दो।
5a. पड़ाव स्थल
6. प्रस्थान हेतु अश्वारुढ हुए।
7. दैनिक वेतन।

राहण ठाकुर वनेसिंह पुत्र कनीरांम ने मुजरा[1] किया तब महाराज रामसिंहजी ने फरमाया कि स्वर्गीय महाराज को अफीम सिखाया[2] सो ये ही था ? तब उपस्थित जनों ने कहा ये हाँ था । तब महाराज रामसिंहजी ने फरमाया कि मेरे राज्य से बाहर चले जाओ । राहण तो लालसिंह पुत्र मुकनदास को दी । सो वनेसिंह (जोधपुर) छोड़कर नागौर चले गये सो 'बोड़वा'[3] राजाधिराज ने दिया ।

महाराज रामसिंह जी ने कूच किया सो मेड़ते पधारे । अजमेर से सरदार आए । महाराज के चरण स्पर्श किए[4] । दक्खनी[5] मल्हार[6] का टीका आया; हाथी 1, घोड़े 4, सिरपाव तोड़ा[7], साथ में घुड़सवार दो सौ । हाथी लड़ाने का महाराज श्री रामसिंह जी को शौक हुआ सो मल्हार से हाथी प्राप्त हुआ सो तो महाराज बखतसिंह जी का ठहराया गया तथा दूसरा हाथी सरकार[8]का था सो स्वयं का मुकर्रर किया और (दोनों को) लड़ाया गया । सो मल्हार राव से प्राप्त हुआ था वह हाथी जीत में रहा । (इस पर महाराज ने फरमाया) कि मल्हार वाले हाथी को तो (तोप के) गोले से उड़ाकर मार डालो । सो हाथी को मारने हेतु ले गए जिस पर दक्खनियों[9] को खबर लगी कि तुम्हारे हाथी को मरवा रहे है । तब दक्खनी चढकर 200 घुड़सवार तोडा[10] जलाकर जा खड़े हुए और कहा कि हमें मारने के पश्चात् ही इस हांथी को मार पाएंगे ।

तत्पश्चात् रीयां के ठाकुर शेरसिंह जी ने निवेदन किया कि इस तरह टीके में प्राप्त हाथी को नहीं मरवाया जाता है परन्तु (निवेदन) माना नहीं ।

तब शेरसिंह जी ने कहा कि मेरे मरने के पश्चात् ही मल्हार का हाथी मरेगा । तत्पश्चात् सभी सरदारों ने भी निवेदन किया कि हाथी तो गणेशजी का स्वरुप होता है सो मारने पर अपशकुन होता है । अतः यदि हाथी रखने की इच्छा ही न हो तो किसी और को प्रदान कर दिरावें किन्तु मरावें नहीं अन्यथा इस बात से कोई नया विवाद उठ खड़ा होगा ।

तब इस हाथी को खींवसर के ठाकुर जोरावर सिंह को प्रदान किया तथा और भी दूसरे उमरावों[11] को हाथी इस प्रकार इनायत किये जिसका विवरण —

1. अभिवादन (प्रायः महाराज के सम्मुख अभिवादन) ।
2. अफीम की लत का आदी बनाया ।
3. ग्राम का नाम ।
4. तत्कालीन रीति के अनुसार अधीनस्थ अमीरों द्वारा शासकों के चरणवंदन का चलन था ।
5. मराठा । 6. मल्हार राव ।
7. आभूषण 8. जोधपुर राज्य । 9. मराठों ।
10. तोड़ादार बंदूक का वह भाग जिसकी लौ से बारुद जलकर बंदूक चलती है ।
11. प्रमुख ठाकुर, अमीर ।

1 राठौड़ जोरावर सिंह पुत्र उदयसिंह खींवसर को ।
1 रा.[1] देवीसिंह पुत्र महासिंह चांपावत[2], पोकरण ।
1 रा. कुसालसिंह पुत्र हरनाथसिंह, आऊवा ।
1 रा. कनीरांम पुत्र रामसिंह कूंपावत[3], आसोप ।
1 रा. शेरसिंह पुत्र सरदारसिंह पट्टे रीयां के ।
1 रा. कल्याणसिंह पुत्र अमरसिंह पट्टे नींबाज

1 रा. भाखरसिंह पुत्र हृदयराम पट्टे रायपुर ।
1 रा. भगवतसिंह चांपावत पट्टे गांव रोहित ।
1 रा. प्रेमसिंह पुत्र राजसिंह चांपावत पाली के ।
1 रा. केसरी सिंह पुत्र बखतसिंह पट्टे गांव रास ।
1 रा. ईन्द्रसिंह पुत्र प्रतापसिंह पट्टे खेरवा ।
1 रा. देवीसिंह पुत्र दौलतसिंह पट्टे कोसांणा ।
1 रा. खींमजी धणले[4] के ।
1 रा. भाद्राजूण[5] के ठाकुर ।
1 रा. भीमसिंह जी जूनियां[6] के ।
1 रा. शामसिंह पुत्र अभेसिंह मसूदा[7] का ।
1 रा. जालमसिंह जी मेड़तिया[8] पट्टे कुचामन ।
1 रा. . . . . . . सिंह पट्टे गांव . . . . ।

18

अठारह हाथी सरदारों को इनायत किए ।

ठाकुर शेरसिंह जी रीयां के हजूर[9] आते तब उनका सेवक वीजिया ठाकुर के साथ आता । सो वीजिया को महाराज रामसिंहजी ने ठाकुर से मांगा तब उस समय (सम्मुख) तो ठाकुर ने कहा ठीक है । फिर ठाकुर डेरे[10] पर गए तो बाद में पीछे से महाराज का ड्योढीदार[11] आया । (बोला) कि वीजिया को दीजिए । तब ठाकुर ने आनाकानी की । (कहा कि) अभी तो राजाजी सेवक मांग रहे हैं और फिर कहेंगे कि तुम्हारी औरत सुन्दर है सो मुझे दे दो । सो (सेवक तो) दूं नहीं । राजाजी नाराज

1. राठौड़ शब्द का शब्द संक्षेप ।
2. जोधा के भाई चांपा पुत्र रिड़मल के वंशज ।
3. कूंपा पुत्र महाराज पौत्र अखेराज के वंशज ।
4. 5 से 7 विभिन्न स्थानों के नाम ।
8. राव दूदा (दूदा पुत्र जोधा) के वंशज ।
9. सेवा में 10. पड़ाव
11. राजकीय पद नाम संभवत ड्योढ़ी का सुरक्षा प्रभारी ।

होंगे इस संबंध में, तो अपना राज्य रखेंगे । सेवक तो दूंगा नहीं । तब ड्योढ़ीदार ने वापस आकर निवेदन किया कि रायका[1] वीजिया को तो ठाकुर नहीं दे रहा है । तब महाराज रामसिह जी ने चोबदार[2] भेजकर कहलवाया कि मेरा राज्य छोड़ कर चले जाओ । तब शेरसिहजी चढ़े[3] सो रीयां आए ।

और महाराज ने सरदारों को निराश करके नागौर की तरफ कूच किया । डेरे गांव खेडूली हुए, तब खवास[4] पासवानों[5] ने निवेदन किया कि आप नागौर पर चढ़ाई कर रहे है सो यदि शेरसिह आपके पक्ष में हो तो ठीक है । कारण कि महाराज बखतसिह जी से शेरसिंह जी की दुश्मनी है । तब महाराज ने फरमाया कि शेरसिंह जी को बुलाने के लिए किसे भेंजे । तब (उनसे) निवेदन किया कि देवसिंह पुत्र दौलतसिंह को भिजवाइये । दौलतसिंह और शेरसिंह जी के परस्पर स्नेह है । तब देवसिंहजी को बुलाकर फरमाया कि शेरसिह जी को ले आओगे तो आपको गांव कोसांणा पट्टे[6] पर देंगे । तब देवीसिंहजी अभिवादन कर चढे[7], रीयां आए । शेरसिंहजी से अभिवादन किया । (शेरसिंह जी ने पूछा,) 'देवजी भाई आप कहां से आए' तब प्रत्युत्तर दिया कि मैं तो फौज[8] से आया हूँ परन्तु ठाकुर ! हम-आप तो बायीं मिसल[9] के मालिक है, सर्वप्रमुख है आप हम । और राजा नादान है और अनेक उपहार और सुविधाऐं प्रदान करता हैं और आप रूठ कर चले आए सो ये कैसी आत्मीयता (आपने हम पर) की । तब (शेरसिंह जी) बोले सेवक मांगा था जिससे क्रोध आ गया और चढ़कर चले आए परन्तु अब तो पछता रहे हैं । तब देवसिंहजी ने कहा कि अब भी वापस चले चलिए । इस पर शेरसिंहजी ने कहा, 'अब वापिस, किस तरह चलूं ?' तब देवजी ने कहा कि 'सेवक' वीजिया को दो तो राजाजी को आपके घर ले आऊं ।' तब शेरसिंहजी ने कहा, 'राजाजी हमारे घर आएं पचास वीजिया राजाजी को दे दूं ।' तब देवी सिंहजी ने कहा, 'दावत की तैयारी कीजिए, मैं राजाजी को ले आता हूँ ।' इस प्रकार बात (तय) करके चढे[10] सौ फौज[11] में महाराज के पास

1. यहाँ सेवक अर्थ में, वैसे यह एक जाति विशेष का नाम भी है जो एक पशुपालक खानाबदोश जाति है ।
2. राजकीय पद नाम विशेष ।
3. प्रस्थानार्थ अश्वारूढ हुए ।
4 व 5 अन्तःपुर के पद नाम विशेष ।
6. राजस्व वसूली के अधिकार पत्र द्वारा
7. प्रस्थानार्थ अश्वारूढ़ हुए ।
8. सेना के पड़ाव से ।
9. तत्कालीन राज्य व्यवस्था में वंश के कर्णाधार उमरावों के दरबार में बैठने की व्यवस्था में राव जोधाजी के भाईयों के वंशज जिन्हें भाई कहते थे महाराज के दाहिनी और बैठते थे और जीवणी मिसल के सरदार कहलाते थे जिनमें अग्रणी चांपावत कूंपावत, करणोत इत्यादि थे और बाई ओर राव जोधाजी के वंशज प्रमुख सरदार बैठते थे और वह पंक्ति 'डावी मिसल' कहलाती थी । इसमें जोधा, मेड़तिया, ऊदावत इत्यादि होते थे ।
10. प्रस्थानार्थ अश्वारूढ हुए ।
11. सेना के पड़ाव पर ।

आकर अभिवादन किया । तब फरमाया कि ठाकुर आएंगे अथवा नहीं ? तब देवसिंहजी ने (महाराज को) मालूम करवाया कि शेरसिंह तो आ नही रहा है । उदयपुर से राणाजी का लिखा (निमन्त्रण) आया है सो लाख (रुपये) का पट्टा[1] देंगे अत: उदयपुर जाने की तैयारी कर रहे है । तब (महाराज ने) फरमाया कि यदि किसी प्रकार आते हो तो ज्यो आते है त्यों ले आओ । तब (देवसिंहजी ने) कहा कि, 'आप पधारें तो (वह) आ जाऐंगे ।' तब महाराज ने फरमाया कि, 'पधार तो जाऐं किन्तु सेवक वीजिया को (ठाकुर) हमें सौंप देंगे ?' तब निवेदन किया कि आप पधारेंगे तो वीजिया को तो मैं स्वयं कहलवाकर आपके पेश करवा दूंगा । तब उसी समय नगारा[2] करवाकर घोड़े पर सवार हुए और सात बीसी[3] जाखोड़े[4] साथ में लिए ।

और रीयां पधारे । ठा. शेरसिंहजी ने अगुवानी में आकर निजर निछरावल[5] की, कलश से वधाया[6], सेवक वीजिया को पेश किया (कहा) कि ये (आपकी सेवा में) हाजिर है । तब स्वयं (महाराज) ने अत्यन्त प्रसन्न होकर उसी समय वीजिया को सिरपाव, कड़ा-मोती, सिरपेच, जनेऊ, तुर्रा-किलंगी बख्शीस कर पालखी में बिठाकर सवारी (महाराज की सवारी) के आगे-आगे वीजिया की पालखी चलवाई और रीयां के कोट[7] में दाखिल हुए । दावत में भोजन कर शेरसिंह जी को लेकर घोड़े पर सवार हुए । सो 2 कोस[8] आये सो शेरसिंहजी का घोड़ा थक कर पीछे (रहने लगा) । हजूर[9] ने दूसरा घोड़ा प्रदान किया । सो (जब) वह घोड़ा भी थक गया तब फिर दूसरा घोड़ा इनायत किया सो इस प्रकार खेडूली के डेरों[10] और रीयां के बीच में चार घोड़े बदले (जो) राजाजी ने प्रदान किए । जिससे दाहिनी मिसल[11] के सरदार चांपा, कूंपा[12] वगैरह सभी नाराज हुए और कहने लगे कि राजाजी इस तरह[13] अनेक घरों में घूमेंगे किन्तु अकेले शेरसिंहजी के बलबूते पर नागौर राजाजी[14] को नहीं मिलेगा ।

---

1. राजस्व वसूलने का अधिकार पत्र ।
2. अभियान अथवा विशेष प्रयोजनार्थ राज यात्रा आरम्भ का एलान ।
3. 7x20 = एक सौ चालिस ।   4. ऊँट ।
5. भैंट एवं निछरावल
6. कलश सिर पर धरे सुहासिनियों द्वारा स्वागत करवाया ।
7. सुरक्षा प्राचीर से घिरी गढी ।
8. दूरी का एक माप, लगभग दो मील = एक कोस ।
9. महाराज रामसिंहजी ।
10. खेडूली का सैनिक पड़ाव ।
11. पिछले पृष्ठ की टिप्पणी देंखें ।
12. चांपावत, कूंपावत का संक्षिप्त नाम ।
13. अनेक लोगों को मनाने हेतु जगह-जगह जाएंगे ।
14. महाराज रामसिंहजी ।

फिर खेड़ूली से महाराज रामसिंहजी ने कूच किया तब राजाधिराज बखतसिंहजी ने फरमाया कि (जब शत्रु सेना) नागौर वाटी[1] में प्रवेश करे तब सरदारों[2] के गांवों में एक-दो दिन तक (उन पर) गोलियों की बौछार हो तो ठीक है । तब गोविन्ददास, ड्योढीदार[3] ने निवेदन किया कि इस (तरफ की) सीमा पर तो चांदावतों[4] के गांव है सो उनको फरमाइये तब बहादुरसिंहजी जालिमसिंहजी को बुलवाकर फरमाया कि आपके गांवों में गढियाँ है ? तब उन्होंने निवेदन किया कि शासकों से युद्ध करें वैसी तो है नहीं, परन्तु विश्वास है कि दो-दो दिनों तक गोलियों की बौछार तो कर ही लेंगे । तब महाराज[5] प्रसन्न हुए और बारूद, शीशा[6] जंजालें[6a] वगैरह प्रदान किये । फरमाया कि आपके गांवों पर सेना का हमला होगा तब (उनके) डेरों[7] पर हम हल्ला बोल देंगे । तत्पश्चात् गांव नोखा और देसवाल की गढियों को सुदृढ़ किया गया ।

बाद में रामसिंह जी ने खेड़ूली से कूच कर गांव रूंण में डेरे स्थापित किए और महाराज[8] ने आज्ञा दी कि गांव देशवाल में उनके लोग (पक्षधर) इकट्ठे हुए है सो चढ़ी-सवारी[9] गढी नष्ट कर उपरांत डेरे दाखिल[10] होंगे । सो गांव जारोड़े राजसी सवारी आई तब शेरसिंहजी, स्यामसिंह जी ने निवेदन किया कि देशवाल की गढी सुदृढ़ है और भीतर राजपुत युद्ध निपुण हैं, सो शीघ्र नष्ट होगी नहीं, दो रातें बीत जाएंगी । तब लोग कहेंगे कि ये नागौर किस प्रकार जीतेंगे ? सो गांव उलादणे में से होकर फिर रुंहण पधारिये । तब वहीर[11] छांपरी के मार्ग रवाना की गई । राजसी सवारी उलादणे पहुँची । सो गांव सूना था और (महाराज ने) फरमाया कि यह गांव कहाँ का है तब निवेदन किया कि नागौर का है । तब कहा कि गढी को नष्ट कर दो । तब प्राचीर द्वार थे सो नष्ट कर दिये और रूहण में डेरे किये ।

और दाहिनी मिसल[12] के सरदार तो गांव नौखा पर (आक्रमण हेतु) भेजे गये थे । सो बारह प्रहर गोलियों की बौछार हुई और रात्रि हुई तब (गढी के लोग) निकल गये और सेना[13] पुन: डेरों पर आई ।

---

1. नागौर राज्यान्तर्गत प्रदेश ।
2. नागौर राज्य के प्रमुख ठाकुर ।
3. एक पद विशेष ।
4. नागौर में राजपूतों की मेड़तियों की उप शाखा ।
5. महाराज बखतसिंह जी ।
6. एक धातु विशेष जिससे गोलियों के छर्रे बनते है ।
6a. एक प्रकार की बड़ी बन्दूकें ।
7. सैनिक पड़ाव स्थल
8. महाराज रामसिंह जी ।
9. 10. खेमे में प्रवेश 11. सैन्य दल
12. पृष्ठ 121 पर टिप्पणी देखें ।
13. म्हाराज रामसिंहजी की सेना ।

फिर बायीं मिसल[1] के सरदार गांव देशवाल पर (आक्रमण हेतु) भेजे गये सो सेना ने जाकर गाँव को घेर लिया । गोलियों की बौंछारें हुई । और स्यामसिंह सभी चांदावतों सहित तालाब किनारे छतरियां[2] में आकर ठहरे थे और वादलियां-जरजरियां[3] गढ़ियों के अंदर से पानी की भर मंगवायी थी और लखधीरजी सनावड़ा का ठाकुर तलैया किनारे पीपल के नीचे ठहरे थे और सेना के लोग प्यास के मारे परेशान थे और कुआ गहरा था और शेरसिंह जी पूर्व की और एक शमी वृक्ष था, वहां ठहरे थे । कुआ गहरा था सो पानी निकाला नहीं जा पा रहा था । लोटा-डोल[4] कुए में डाले और अंदर से गोलियां चली सो दो लोगों को लगी । सो डोलियों में डालकर लाए और भंडारीजी के सामने ला धरा । तब भंडारीजी ने सरदारों को कहा अंदर वाले लोग मार रहे है सो हल्ला बोल दो तो गढ़ी जीत लें, तब शेरसिहजी और श्यामसिहजी ने कहा कि यहां विजय की चेष्टा करेंगे तो काजू[5] लोग तो यहीं है और डेरों पर बखतसिह जी टूट पड़ेंगे तो गढ़ी लेकर क्या हासिल (कर लेंगे) बैठें हैं । सारे दिन सेना वहीं रही और सांझ पड़ी तब डेरों पर गए ।

महाराज बखतसिंहजी से विजयराज ने निवेदन किया जोधपुर के सामने टिक नहीं सकेंगे (अत:) दुर्ग में ही रहकर युद्ध किया जाय । तब बखतसिंहजी ने प्रत्युत्तर दिया कि मैं रामसिंह[6] के सामने दुर्ग में (घुसकर) बेठूंगा नहीं सीमा क्षेत्र में जाकर खुले में युद्ध करूंगा । कूच किया सो चारों तरफ सेना ले जाकर तोपखाने का जज़ीरा (साथ) देकर हिलोड़े डेरे किए । दोनों सेनाएं दो कोस[7] की दूरी पर रहीं ।

महाराज रामसिंहजी के यहाँ शेरसिंह जी की चलती थी सो दाहिनी मिसल[8] के सरदार नाराज थे जिन्होंने बखतसिंहजी को कहलवाया कि आप निश्चित रहें । (हम) आपसे युद्ध करेंगे नहीं ।

जोशी[8a] हरकिशन जयपुर गया था जिसे महाराज ईश्वरीसिंह जी ने कहा कि महाराज रांमसिंहजी ने नादानी की सो नागौर पर मुहिम की सो पहले राजपूतों[9] की राय तो ले ली होती । बखतसिंह जी ने तो अभयसिंह जी को भी बहुत कष्ट दिए थे ।

---

1. पृष्ठ 121 पर टिप्पणी देखें ।
2. मृत व्यक्तियों की स्मृति में निर्मित छतरी ।
3. जस्ते का बना पानी रखने का बरतन जिसमें पानी ठण्डा रहता है ।
4. लोटे एवं डोलियां ।
5. काम के ।
6. महाराज रामसिंहजी ।
7. दूरी का माप,1 कोस = लगभग 2 मील ।
8. पूर्व की टिप्पणी देखें ।
8a. ब्राह्मणों की उपजाति ज्योतिषी से व्युत्पन्न ।
9. अपने राज्य के ठाकुरों/राजपूत ।

तब हरकिसन ने कहा महाराज अभयसिंहजी तो बड़े थे सो गम खाते थे[1]। अब हमारे दो उमरावों[2] की शक्ति ही पर्याप्त है। कंकर इकट्ठे किये है सौ हम बिखेर देंगे।

ये समाचार नागौर का वकील[3] जयपुर में था, उसने महाराज बखतसिंहजी को लिख भेजे। फिर जोशी ने टीका[4] लेकर कूच किया साथ में धूलेह खा ठाकुर दौलत सिंह जी[5]राजावत[5a] था और तीन हजार सैनिकों सहित मेड़ते में डेरे[6] किए जिनकी खबर महाराज बखतसिंहजी को मालूम हुई तब बहादुरसिंह पुत्र सबलसिंह को पुकार कहा कि जोशी हरकिसन जयपुर से टीका लेकर रामसिंहजी के पास आ रहा है, मेड़ते डेरे हैं, सो चढ़[7] पकड़ लाओ। तब बहादुरसिंहजी ने निवेदन किया कि मेरे साथ किसे भेजेंगे। तब फरमाया कि आपके निजी दल को साथ लेकर चढ़ना सो पकड़ सको तो पकड़ना वरना मारकर चले आना। तब स्वयं के पचास घोड़े लेकर चढ़े सो गांव फलोदी की सीमान्तर्गत एक तलैया थी जहां आकर रूके।

और जोशी के डेरे मेड़ते थे प्रातः नगारा बजवाया[8] तब धुलेह के राजावत दलेल सिंहजी, ने कहलवाया कि आज मुकाम[9] यहीं रखिए। तब जोशी ने कहा कि मेरे तो दीपावली का उत्सव है खास-दरबार लगेगा सो मैं तो चढ़ जाऊँगा। सो कछवाहों का तो मेड़ते में मुकाम रहा और जोशी चढ़े सो कोस[10] एक पर तलैया थी वहाँ चांपावत[11] हाथीराम सुरक्षार्थ था जिसने कहा कि घड़ी भर रूको तो अफीम आदि ले लें[12]। तब जोशी ने कहा कि मैं तो आगे जा रहा हूँ और आप पीछे से चले आना। सो जोशी जी ने (घोड़ों को) आगे बढ़ाया, साथ में बीस घुड़सवार और पचास पैदल चल रहे थे। तब बहादुरसिंहजी को खबर लगी कि जोशीजी आ रहे है सो पकड़ लेना है। सो ये लोग वहाँ से चढ़े[13] सो हिन्दूसिंह पुत्र उदयसिंह ने जोशी के घोड़े की लगाम पकड़कर कहा राजाधिराज की आज्ञा है सो घोड़े से उतर जाओ। इतने में जोशी को नीचे गिरा दिया तब जोशी को इन्होंने पकड़ लिया। तब कड़ा-मोती, असबाब था सो छीन लिया और ऊँट पर डालकर ले गये तब जोशी ने कहा

1. सब्र कर जाते थे। 2. प्रमुख ठाकुर अमीर।
3. एक राज्य का दूसरे राज्य में प्रतिनिधि।
4. विवाह प्रस्ताव।
5. यहाँ दल्लेसिंह जी होना चाहिये।
5a. कच्छवाहा राजपूतों की एक शाखा।
6. सैनिक पड़ाव। 7. प्रस्थानार्थ अश्वारूढ़ होना।
8. प्रस्थान का एलान करने हेतु नगारा बजवाने की प्रथा थी।
9. अस्थाई निवास 10. दूरी का माप 1 कोस = 2 मील (लगभघ)
11. राठोड़ों की एक शाखा पृष्ठ 118 की टिप्पणी देखें।
12. उस समय अफीम लेने का आम प्रचलन था।
13. प्रस्थानार्थ अश्वारूढ़ हुए।

बहादुरसिहजी मुझे मारा न जाय । तब बहादुरसिंह ने कहा राजाधिराज के पास ले जाऊं तब तक तो मरने नहीं दूंगा । फिर (हिलोड़े के डेरों पर) आये तब (राजाधिराज को) मालूम करवाया जोशी हाजिर है । तब महाराज प्रसन्न हुए और जोशी को तो[1]... ।

जयपुर के राजा ईश्वरीसिंहजी की बेटी की सगाई का नारियल हाथी घोड़े तुर्रा-जवाहरात महाराज रामसिंहजी के टीके के धुलेह के राजावत दलेलसिंहजी ले आए ।

और राजाधिराज ने ड्योढीदार[2] गोविन्ददास को फरमाया कि कोई होशियार आदमी ऐसा हो सो भंडारी मनरूप को धोखे से मरवा दें । तब गोविन्ददास के पास एक राजपूत पातावत[3] दुस्साहसी था उसे राजी कर हजूर[4] में अभिवादन करवाया । तब फरमाया कि ये काम करके आयेगा तो तुम्हें अच्छा सा गांव देंगे । तब वह रामसिह जी के सेना में गांव रूहण आया सो कार्तिक शुक्ल द्वितीया को हजूर ड्योढी[5] से आकर (मनरूप) पालखी से उतर रहा था उसे तलवार से पातावत ने मार डाला औरपातावत जोरा मारकर भाग रहा था तब चांपावतों के घोड़ों की पछाडियों[6] से ठोकर खाकर गिर पड़ा । इतने में वाहर[7] आ पहुँची सो मार गिराया और मनरूप के घाव लगे सो उस समय तो नहीं मरा । महाराज रामसिंहजी सुख पूछने[8] डेरे[9] पर पधारे । खैरात के रुप. 4000/- चार हजार रूपये दिलवाये । बाद में काती शुक्ल 14 गांव दीहावडी के डेरों पर मनरूप का देहान्त हुआ ।

राजा बहादुर किसोर सिंहजी को[10] को अझमेर रखा था सो बाद में बुलाया तब आए । छाती के हाथ लगाकर[11] परस्पर अभिवादन किया ।

शाहाणी बखता की महाराज रामसिंहजी के यहाँ बहुत चलने लगी । शिकदार[12] पद प्रदान किया कड़ा-मोती, कंठहार प्रदान किया ।

चरवादार[13] चार लोगों को मरवाया और शिकदार अमीदास के पुत्र जगनाथ से बचपन में कबूतर पालते थे तब से ईर्ष्या थी सो जगनाथ शादी करके अभिवादन करने आया तब (महाराज ने) फरमाया कि तुमने मुझसे पहले शादी की सो इस प्रकार क्रोधित होकर (उसके) सिर पर गुरज[14] देकर मार डाला ।

---

1. वाक्य अपूर्ण रखा गया है । अधिक जानकीर हेतु पृष्ठ 174 देखें ।
2. एक पद विशेष ।
3. राठोड़ों की खांप पाता पुत्र रिडमल के वंशज ।
4. महाराज की सेवा में ।
5. महाराज के खेमे से ।
6. घोड़े के पिछले पैर बांधने की रस्सियाँ ।
7. पीछा करने वाली टुकड़ी ।
8. सहानुभूति जताने, आराम पूछना ।
9. खेमे पर ।
10. महाराज अभयसिंह जी के एक लघु भ्राता ।
11.
12. एक पद विशेष ।
13. चंवर डुलाने वाला सेवक ।
14. छोटी गदानुमा शस्त्र जिसके शिर पर चारों ओर कांटे लगे हो ।

महाराज रामसिंहजी ने गांव दीहावड़ी से कूच कर गांव भदोरे डेरे[1] किये और राजाधिराज ने डेरे गांव कालीयास किये सो मि.[2] कृष्ष 8 को दोनों महाराज की सेनाएं चढी[3] सो एक दिन तोप गोलों का युद्ध हुआ फिर बात तय हुई कि जालोर राजाधिराज छोड़ देंगे परन्तु धोखा देकर नागौर को चढ़ गए[4] और जालोर छोड़ा नहीं।

महाराज रामसिंहजी ने अपने मुत्सदियों को सिरपाव इस भांति दिए, जिसका विवरण ----

1 भं. सुरतंराम केदीवान पद बहाल रहा और हाथी, सिरपाव।

1 पुरोहित जगनाथ पुत्र जयदेव को हाथी सिरपाव।

1 पुरोहित शिवकिशन पुत्र जगनाथ को मोतियों का कंठहार और गांव तिलवासनी पट्टे दी।

3

और अजमेर सूबा बादशाही बादशाह ने सैयद सलावत खां को दिया।

सो राजाधिराज की तरफ से आसोपा[5] हरनाथ दिल्ली में रहता था सो इसने नवाब[6] से मिलीभगत की और राजाधिराज को लिखा। इस पर राजाधिराज नागोर से कूचकर गांव वांभले-दंताले में मिले। तब महाराज रामसिह जी ने जयपुर के राजा ईश्वरीसिंहजी को सहायतार्थ लाने हेतु मेड़ता से कूच कर डेरें गांव माणकियास में किये।

रास[7] के ठाकुर केसरीसिंहजी व खींवसर[8] के ठाकुर एवं उनके सेवक डेरों के स्थान बाबत लड़े (जिसका) मालूम हुआ तब ड्योढी से सेवक भेज केसरीसिंहजी का डेरा फिकवा दिया और जोरावरसिंहजी का डेरा उस जगह स्थापित करवा दिया। तब केसरीसिंहजी रास और नींबाज के ठा. कल्याणसिंहजी ने छाड़[9] एक साथ की।

और कूंपावत[10] खीमजी धणला[11] का ठाकुर नयी पोशाक पहन हजूर में आ रहा था तब (जो लोग) आगे रामसिंहजी के पास बैठे थे उन्होंने निवेदन किया कि आज तो खीमजी पोशाक पहन कर आ रहे है सो आसोप के ठाकुर हो ऐसे लग रहे है। खीमजी ने आकर अभिवादन किया।

---

1. पड़ाव स्थल। 2. मार्गशीर्ष का शब्द संक्षेप।
3. युद्धार्थ तैयार हुई। 4. प्रस्थानार्थ अश्वारूढ़ हुए।
5. ओसवालों की शाखा।
6. नवाब सैयद सलावत खां।
7 व 8. प्रमुख गांव।
9. पक्ष छोड़कर चले जाना।
10. राठौड़ों की शाखां देखें 118 की टिप्पणी।
11. गांव का नाम।

तब फरमाया कि पुन: अभिवादन कीजिये आपको आसोप प्रदान की । तब खींमजी ने आसोप का अभिवादन कर लिया[1] जिसके समाचार कूंपावत कनीरांम जी आसोप के थे, उनको मिले तब कनीरांम जी आउवा[2] के ठाकुर कुसालसिंहजी थे, उनके पास आए और कुंवर दौलतसिंहजी को कुंसालसिंह जी की गोद में बिठाया और कहा कि 'कनिया'[3] के घोड़ों की जीन आउवा के साथ ही कसेगी । इतने दिन तक तो आपसे अनबन थी और अब आप सहायता करना । तब कुसालसिंहजी ने कहा ठाकुर बिलकुल निश्चित रहिए आऊवा और आसोप साथ हैं ।

तत्पश्चात् कुसलसिंह जी ने हजूर[4] में जाकर निवेदन किया कि काम का तो अवसर है और बखतसिंहजी से युद्ध है सो फिलहाल कनीरांम जी को नाराज मत कीजिए । तब फरमाया कि आसोप तो खीमजी को दे दी । तब फिर कुसलसिंहजी ने जोर देकर निवेदन किया कि एक वर्ष तक तो आसोप मेरे निवेदन पर कनीरामजी के पास ही रखिये तब निवेदन स्वीकार नहीं किया । तब कुसलसिंहजी ने कहा कि आउवा और आसोप दोनों ही खींवजी को दिलवा दीजिए । इस पर (महाराज ने) कहा भले ही आप भी पधारिये, नौ की तेरह करने में आए ज्यों कर देना । तब आउवा के कुसलसिंहजी डेरों पर आकर घोड़ों पर जीन कसवाकर, ख़ेमे समेटवाकर चढे तब पोकरण[5] देवीसिंहजी ने आकर कहा कि इस राजा के पास हमारा भी निभाव होता नहीं दिखता । हम भी जल्दी ही आ जायेंगे । फिर सरदारों ने छाड[6] की उनका विवरण —

1 आउवा[7] के कुसालसिहज़ीं पुत्र हरनाथसिहजी
1 रोहिट[8] का ठाकुर वगैरह सभी आईदानोत ।[9]
चांपावत बलोत[10]

1 उदयसिहं पुत्र सूरजमल पटे गांव धांधीया[11] ।
1 मुकनसिंह पुत्र किसनसिंह पटे गांव नारनडी[12] ।
1 राजसिंह पुत्र सहसमल पटे गांव बनाड[13] वगैरह कुल आसामी 3, तीन ।
1 कूंपावत[14] कनीराम पुत्र रामसिंह पट्टे आसोप

---

1. आसोप के ठाकुर की हैसियत से अभिवादन किया ।
2. प्रमुख गांव । 3. कनीरामजी ।
4. महाराज की सेवा में उपस्थित होना ।
5. एक प्रमुख गांव ।
6. पक्ष छोड़कर चले जाना ।
7,8. गांवों के नाम ।
9. राठौड़ों की चांपावत शाखा में आईदानजी के वंशज ।
10. राठौड़ों की चांपावत शाखा में बलूजी पुत्र गोपालदासजी के वंशज ।
11,12,13. गांवों के नाम ।
14. राठौड़ों की एक शाखा । देखें 118 की टिप्पणी ।

ये सभी चढ[1] गांव रास[2] आकर उतरे तब महाराज रामसिंहजी ने रीयां[3] के ठाकुर शेरसिह जी को मनाने को भेजा सो रास आये और कुसालसिंह जी से मिले और कहा ठाकुर आप दाहिनी मिसल[4] के प्रमुख हो अत: आपके रूठने से काम नहीं चलेगा। तब कुसालसिंहजी ने कहा आप पहले भी हमें छोड़कर स्वलाभ सिद्ध कर बैठ गए थे सो ठाकुर अब तो तलवारों के वार बरसेंगे। तब शेरसिंहजी ने कहा हम वहीं पर मिलेंगे, आप जल्दी आना। सो गए तो मनाने के लिये थे परन्तु उलटा वैमनस्य बढाकर लौटे और महाराज रामसिंहजी को निवेदन किया कि वे तो आ नहीं रहे हैं सो (यदि) आपके भाग्य में जोधपुर है तो चापांवत[5] कूपांवत[6] क्या कर लेंगे ?

तत्पश्चात् चांपावत, कूंपावत, ऊदावत[7] चढे सो नागौर आए सो महाराज बखतसिंह जी तो नवाब[8] को लेने को गए थे और पीछे कंवर विजयसिंहजी नागौर में थे सो उनको लेकर जोधपुर का खालसा[9] लूटना प्रारंभ किया। गांव वीसलपुर, काकेलाव, बनाड वगैरह अनेक गांव लूटे तब महाराज रामसिंहजी के डेरे गांव लाडपुरा हुए और प्रधानगी का सिरपाव, कड़ा-मोती, पालखी वगैरह लवाजमा चांपावत देवीसिंह पुत्र महासिंह पटे पोकरण वालों को हुआ।

रा. खीमकरण पुत्र फतेकरण कूंपावत[10] को आगे गांव धणला प्राप्त था उसे आसोप का सिरा[11] इनायत हुआ। तत्पश्चात् डेरे मारोठ हुए।

राजधिराज बखतसिंह जी ने नवाब सलावत खां को लेकर मारवाड़ पर कूच किया और जयपुर के महाराज ईश्वरीसिंहजी भी नवाब से मिले। उधर महाराठे के डेरों से भं.[12] दौलतराम, पुरोहित[13] जगूजी और धायभाई देवकरण को महाराज रामसिंहजी ने भेजा सो नवाब सलावत खां ने इनसे रूख जोड़ा नहीं। तब इन्होंने राजा ईश्वरीसिंहजी को रूपये पचास हजार एकत्र कर रिश्वत के देकर महाराज ईश्वरी सिंहजी को महाराज रामसिंह के शामिल करना तय करवाया और रोजीना[14] रू. 13000/- तेरह हजार देना तय हुआ।

और भरतपुर का स्वामी जाट सूरजमल नवाब के साथ था जिसे रु. 100000/- एक लाख रूपये देना तय कर वापस कूच करवाया। महाराज रामसिंहजी शेखावाटी के गांव हंसपुर में राजा ईश्वरीसिंहजी से मिले और उमराव-सरदार भी अभिवादन हेतु गए सो सर्वप्रथम प्रधान देवीसिंहजी

---

1. अश्वारूढ होकर 2,3. गांव का नाम।
4. पृष्ठ 121 की टिप्पणी देखें। 5,6,7. राठौड़ों की शाखाएं।
8. सैय्यद सलावत खां। 9. वे गांव जो किसी की जागीर में नहीं थे।
10. राठौड़ों की एक शाखा पृष्ठ 118 की टिप्पणी देखें।
11. अतिरिक्त पट्टा।
12. भंडारी शब्द का शब्द संक्षेप।
13. ब्राह्मणों की एक उपजाति। 14. दैनिक भुगतान।

अभिवादन हेतु आगे आए तब महाराज रामसिंहजी ने देवीसिंहजी की छाती पर हाथ धर कर (उन्हें) पीछे धकेला और ईश्वरीसिंहजी को कहा पहले ठाकुर खीमकरण जी से मिलिए। तब देवीसिंहजी तो डेरे चले आए और सब्र कर गए।

तत्पश्चात् वैशाख शुक्ल 3 को अक्षयतृतीया का भोज हुआ और खास-दरबार लगा। हजूर[1] के लिये थाल आया और रसोईयों ने देवीसिंह जी के लिये थाली परोसकर लाकर सम्मुख धरी तब्ब महाराज रामसिंह जी ने फरमाया कि थाली उठालो और ठाकुर खीमजी के सम्मुख धरों तब थाली उठाकर खीमजी के सम्मुख ला धरी देवीसिंहजी तो (आश्चर्य से) देखते ही रह गये।

फिर सभी सरदारों के थाली आई तब देवीसिंहजी के भी दूसरी थाली आई सो देवीसिंहजी को तो क्रोध आ गया सो भोजन ही नहीं किया और दरबार सम्पन्न हुआ तब देवीसिंह जी ने डेरे आकर भोजन किया। तत्पश्चात् पाली के ठाकुर प्रेमसिंह पुत्र राजसिंह वगैरह सभी बिट्ठल दासोत चांपावतों[2] ने अपने बंधु-बांधवों सहित छाड[3] की सो कुंवरजी विजयसिंहजी के पास सेना में आए तब कुंवरजी विजयसिंहजी और आऊवा के कुसालसिंहजी आसोप कनीरामजी वगैरह आसामी आकर देवीसिंहजी वगरैह को ले आए।

रूपनगर[4] के राजा सांवतसिंहजी तो दिल्ली थे और पुरोहित ब्रजलाल वगैरह ने मिलकर रूपनगर बहादुरसिंहजी के हवाले कर दिया। तत्पश्चात् बहादुरसिंहजी और बीकानेर के राजा गजसिंहजी ये तो राजाधिराज के शामिल हुए और सांवतसिंहजी महाराज रामसिंह जी के शामिल हुएं।

बीकानेर के राजा अनोपसिंहजी के बड़े बेटे सुजानसिंह जी सिंहासन पर बैठे छोटे बेटे अणदसिंहजी (थे।) जिनके पुत्र दो, सो बड़े तो अमरसिंहजी और छोटे गजसिंहजी। राजा सुजानसिंह के पुत्र जोरावरसिंहजी के संतान नहीं थी, तब उनके बाद सिंहासन पर बैठे और गजसिंहजी तो लोक हजार तीन 3000 सहित राजाधिराज के शामिल हुए और गजसिंहजी के बड़े भाई अमरसिंहजी महाराज रामसिंहजी के शामिल हुए। और राजा जोरावरसिंहजी की गोद लेने के लिये गांव रिणी से अमरसिंहजी को बुलाया था सो मार्ग में आते समय अपने सेवकों के घरों की कीमत की जिस मुद्दे के कारण अमरसिंहजी को धरा रखकर जोरावरसिंहजी की रानी और सेवकों ने शामिल होकर राजा गजसिंहजी को गद्दी पर बैठाया।

1. महाराज रामसिंहजी।
2. राठौड़ों की चांपावत शाखा में बिट्ठलदास की वंशज।
3. पक्ष छोड़कर चले जना।
4. राठौड़ों द्वारा शासित एक राज्य।

महाराज रामसिंहजी और जयपुर के राजा ईश्वरीसिंहजी के डेरे गांव रीयां हुए और राजाधिराज बखतसिंहजी नवाब समेत आए सो मेड़ता पर अधिकार कर लोगों पर पेशकशी रोपकर बाद में मेड़ता से कूच कर गांव सूरियावास डेरे किये। रामसिंहजी और बखतसिंह जी के मध्य दस-पन्द्रह बार तोपखाना के युद्ध हुए जिससे दोनों तरफ के आदमी बहुत काम आए और घायल हुए। महाराज रामसिंहजी दखिनी[1] सतवाजी को रू. 7000/- सात हजार रुपये रोजीना[2] देना तय करके मदद के लिये लाए। तब नवाब एवं राजाधिराज ने मेड़ता छोड़कर पीपाड़ डेरे किए और महाराज रामसिंहजी और जयपुर महाराज ईश्वरीसिंहजी के डेरे गांव नानड़ खोडेचां हुए और कुंवरजी विजयसिंहजी और आउवा, आसोप, पोकरण वगैरह सरदार पीपाड़ के डेरों पर राजाधिराज के पास आये सो कुंवरजी विजयसिंहजी को तो नागोर भेजा और सरदारों को अपने पास रखा।

महाराज रामसिंहजी और बखतसिंहजी के मध्य तोप गोलों का युद्ध हुआ जहां इस प्रकार आसामियां[3] काम आई.उनका विवरण तफसील वार —

1 बीकानेर के राजा गजसिंहजी के बड़े भाई अमरसिंहजी पुत्र आईदानसिंहजी के गोलों की लगी जिससे काम आ गये।

1 पीसांगन[4] के राजा शंभुसिंह पुत्र फतहसिंह खांप जोधा[5] के गोली की लगी। और भी उभयपक्ष के अनेक आदमी काम आए।

और कछवाहों की मार्फत बात इस प्रकार तय हुई कि दोनों महाराज अपनी-अपनी सीमाओं में रहें और रूपये एक लाख तो बादशाह की नजर के नवाब को दिए और रूपये पचास हजार नवाब के दीवान मिर्जा-मुगल को दिए और बाद में बादशाह की तरफ से टीका महाराज रामसिंहजी को हाथी घोड़ों वगैरह सहित दिया, मार्फत नवाब के।

और नवाब और जयपुर महाराज ईश्वरीसिंहजी वगैरह सभी सरदार अपने-अपने ठिकाने गए और महाराज रामसिंह जी कूच कर मेड़ता पधारे और राजाधिराज बखतसिंहजी नागौर को रवाना हुए। तत्पश्चात् महाराज रामसिंहजी ने भंडारी[6] दौलतराम को अपनी ओर से जयपुर महाराज ईश्वरीसिंहजी के पास साधन रखने के लिये भेजा और दीवान पदवी भंडारी सवाईराम पुत्र रत्नसिंह को संवत 1807 के आसोज शुक्ल 10 को हुई और भंडारी दोलतराम सूरतराम वगैरह को कैद हुई सो बिरादरी सहित पेशकसी के रूपये एक लाख पच्चीस हजार तय हुए।

---

1. मराठा। 2. दैनिक भुगतान।
3. प्रमुख व्यक्ति। 4. राठौड़ों द्वारा शासित अजमेर जिलान्तर्गत प्रदेश।
5. राठौड़ों की एक शाखा। म. मालदेव पुत्र राव गंगा के वंशज (इनके पौत्र शूरसिंहजी के वंशजों के अलावा।)
6. ओसवालों की एक उपजाति

राजाधिराज बखतसिहजी तो नागौर के दुर्ग में थे और सरदारों के डेरे अजमेरी दरवाजे के बाहर रुधा की बावड़ी के पास हुए। राजाधिराज ने सरदारों के रोकड़ रुपये घोड़ों की संख्या अनुसार निश्चित कर दिये सो भिन्न-भिन्न स्तर के अनुसार किसी को चालीस तो किसी को पचास रोजीना[1] तय कर दिया सो दिया जाने लगा।

और आउवा के ठाकुर कुसलसिंहजी के यहाँ वैश्या जीऊ आती-जाती थी जिसके यहाँ ठाकुर आते-जाते थे सो एक दिन कुसलसिंहजी ने, शराब के नशे में, रात्रि दो प्रहर बीते, वैश्या जीऊ से मिलने के लिये घोड़े की जीन कसाई तब सेवकों ने कहा शहर के दरवाजे बन्द हैं। तब ठाकुर ने कहा कपाट के पीछे ले लो सो ताले तोड़कर (अंदर) चले जायेंगे। तब एक सेवक ने जाकर पोकरण के ठाकुर देवीसिंह जी को कहा कि ठाकुर कुसलसिंहजी शराब के नशे में दरवाजों के कपाट-ताले तुड़वा रहे हैं और बखतसिंहजी का स्वभाव और ही है सो विपत्तिकाल यही समाप्त हो जावेगा।[2] तब देवीसिंहजी फूर्ती से आए और मना किया परन्तु कुसलसिंहजी तो मना करने पर भी रूक नहीं रहे हैं। तब देवीसिंहजी ने कहा कि एक घड़ी तक रुक जाईये सो दरवाजों की कुंजियां मंगवा लेंगे और दरवाजे खुलवा लेंगे। बाद में देवीसिंहजी ने आदमी भेजकर दरबान[3] को कहलवाया कि कोटवाल[4] के पास से कुंजियां लाकर दरवाजा खोल दो, नहीं खोला तो हजूर में[5] निवेदन कर तुम्हें उलाहना दिलवायेंगे तब दरबान भागकर कोटवाल के पास गया। कोटवाल पडिहार[6] शिवदान था जिसके पास से कुंजियां मांगी तब कोटवाल ने दुर्ग में जाकर, हजूर[7] अंतःपुर में थे, सो निवेदन करवाया कि सरदार अजमेरी दरवाजे की कुंजिया मंगवा रहे हैं। तब हजूर ने नाजर[8] के साथ कहलवाया कि आठों ही दरवाजों की कुंजिया ले जाकर सरदारों को सौंप दो। तब कोटवाल (कुंजियां) ले जाकर सरदारों के पास आया (बोला) कि इच्छा हो वह दरवाजा खुलवाइये, कुंजियां सभी दरवाजों की हाजिर है। तब आउवा के कुसलसिंहजी ने कहा कि मैं शराब के नशे में धुत नहीं हुआ। मैं राजाधिराज की परिक्षा ले रहा था। यह मस्तक तो स्वामी के काम को ही है।[9] तत्पश्चात् सरदारों के डेरे थे वह दरवाजा खुला ही रखने का आदेश राजाधिराज ने जारी किया।

महाराज रामसिंहज ने सरदारों को तो घर जाने की स्वीकृति दी थी और थोड़े से दल सहित मेड़ते में थे जिसकी खबर आउवा के कुसलसिंहजी वगैरह को लगी तब राजाधिराज से निवेदन किया कि हमें बैठे-बैठे खरची कितने दिन देंगे, अभी मेड़ता में लोक थोड़ा है सो यहाँ के चढे[10]

---

1. दैनिक भुगतान
2. अर्थात् हम सबको मृत्युदण्ड निश्चित ही मिलेगा।
3,4. विभिन्न पद
5. महाराज बखतसिंहजी को
6. राजपूतों की एक उपजाति (प्रतिहार)
7. महाराज बखतसिंहजी
8. अंतःपुर का प्रमुख अधिकारी, प्रायः नपुंसक।
9. अर्थात् राजाधिराज हेतु हम अपनी जान दे देंगे।
10. अश्वारूढ हुए

ऊपर टूट पड़ेंगे सो रामसिंहजी को पकड़ लेंगे या मार लेंगे। तब राजाधिराज ने कहा कि अभी तो रुक जाइये तब सरदारों ने निवेदन किया कि जोधपुर पर अधिकार करना हो तो यह अवसर है फिर संयोग बनेगा नहीं और जोधपुर लेने की इच्छा ही न हो तो (हमें) जाने की स्वीकृति दीजिए क्योंकि नागोर के परगनों में तो हम समा नहीं पायेंगे।[1] सरदारों ने इस प्रकार जबरदस्ती कूच करवाया सो गांव खजवाणा डेरे करवाये तब कुसलसिंह जी ने निवेदन किया कि इस तरह मंजिल दर मंजिल पधारेंगे तो सामने जोधपुर का स्वामी है बीस हजार लोक[2] एकत्र कर लेगा तब राजाधिराज ने कहा नागोर के भी सरदार एकत्र हो जाएं तो ठीक है। फिर बखतसिंहजी के डेरे खजवाणे होने की खबर महाराज रामसिंहजी को मालूम हुई तब सरदार जो घर गए थे उन्हें लिखा कि कल युद्ध होगा अत: जो स्वामिभक्त हो तो कल (हर हाल में) आ जाना। सो मेड़तिये[3] सारे रामसिंहजी के पास आ हाजिर हुए। राजाधिराज ने कूचकर डेरे गांव खेड़ूली किये तब आउवा के कुसलसिंहजी ने निवेदन किया कि बीस कोस[4] (की दूरी तय करने) में तीन दिन लगाये सो आपकी इच्छा क्या है ? तब फरमाया कि आज दिन थोड़ा (बचा) है और लोक[5] भी थका हुआ है सो प्रात: युद्ध करेंगे। तत्पश्चात् राजाधिराज ने बहादुरसिंह पुत्र सबलसिंह को बुलाकर कहा आपके भाई देवसिंह चांदावत[6] की रामसिंहजी के यहाँ चलती है सो आपका खास आदमी भेजकर कहलवाओ कि रामसिंहजी अपने उमरावों को राजीकर ले जाए और हमें खर्च लगा सो दे दे तो हम युद्ध नहीं करे और देवसिंह को यहाँ बुलवा लो और सरदारों को भनक पड़ने मत देना कि (हम) देवसिंह के पास गोविन्ददास को भेज रहे है। तब बहादुरसिंह चांदावत ने अपना आदमी भेजा सो देवसिंह पुत्र दोलतसिंह के पास गया और राजाधिराज ने फरमाया वे समाचार कहे और खास दस्तखतों का रुक्का[7] दिया। तब देवसिंहजी ने महाराज रामसिंहजी को मालूम करवाया और देवसिंह, शेरसिंह पुरोहित[8] जगु, भंडारी[9] सवाईराम सभी ने सलाहकार (देवसिंह को) रवाना किया सो देवसिंहजी तो गांव करकवाल के रास्ते आए और राजाधिराज ने ड्योढ़ीदार[10] गोविन्ददास को देवसिंह के सामने भेजा था सो देवसिंह (की अगुवानी में) कोसनडी के रास्ते जा खड़ा हुआ जिससे देवसिंह और गोविन्ददास मिल नहीं पाये और प्रभात हो गया तब देवसिंह ने शेखावत[11] राजसिंह को कहा कि आज तो तुम जाओ शाम को गोविन्द दास को ले आना बात तय कर लेंगे। तब राजसिंह ने आकर राजाधिराज से निवेदन किया कि महाराज

1. अर्थत नागौर की आय में तो हमारा भरण पोषण संभव नहीं।
2. लोग - सेना।
3. राठौड़ दूदा पुत्र जोधा के वशंज।
4. लगभग 40 मील।
5. सेना हेतु एक वचन सूचक शब्द।
6. राठौड़ों की शाखा
7. छोटा पत्र
8. ब्राह्मणों की एक उपजाति।
9. ओसवालों की एक उपजाति।
10. पद का नाम
11. राजपूतों की उपजाति

रामसिंहजी की भी वार्ता करने की इच्छा थी, देवसिंह आया था, एक प्रहर खड़ा रहा परन्तु गोविन्ददास मिला नहीं और सूरज निकल आया जिससे वापस चला गया, आज शाम को आएगा। तब राजाधिराज ने कहा चुपके से रसोईघर की ड्योढी की तरफ से ले आना।

और राजाधिराज ने पिछले दिन आदेश दिया था कि दो घड़ी बीते सुबह नगारा करायेंगे[1] सो सूरज निकल आया तब तक नगारा हुआ नहीं तब आउवा के कुसलसिंहजी ने राजाधिराज के पास आकर पूछा नगारे में देर क्यों हुई तब राजाधिराज ने कहा कि कल युद्ध करेंगे आज वार शुभ नहीं है, तब कुसलसिंहजी ने कहा कि वार तो सदा ही शुभ है और तीन कोस की दूरी पर जोधपुर है सो ले सकते हो तो लो अन्यथा कल तो बीस हजार लोक[2] एकत्र हो जाएगा और मेड़तियों[3] की बहुतायत है सो हमें नागोर पहुंचना मुश्किल हो जायेगा। और महाराज अभयसिंहजी ने तो शेर बुलंद खां[4] से अहमदाबाद में युद्ध करने के उपरांत किसी से युद्ध किया नहीं और आप भी जयपुर के जयसिंहजी से गगवाना में युद्ध करने के बाद पश्चमनस्थिति के हो गये है। परन्तु राजपूतों का कौशल तो देखिए। तब कनीराम जी पुत्र रामसिंह ने कहा ठाकुर जोर देकर निवेदन मत कीजिये, हजूर[5] की इच्छा है तो युद्ध कल करेंगे। तब कुसलसिंहजी बोले ठाकुर, ये अच्छी कही आपका तो पुत्र बर्छी संभाले बाजू में खड़ा रहता है और मेरा तो पोतड़ों में है परन्तु आमने-सामने का युद्ध है, विलंब होने पर बायीं मिसल[6] पर टिक नहीं सकते। नगारे का आदेश दीजिए युद्ध आज ही करेंगे। तब नगारा हुआ और चढ़े। कुसलसिंह जी ने शेरसिंहजी को रूक्का भेजा कि दीवारों की ओट मत लेना खुले में आकर तलवारों से युद्ध करना। शेरसिंहजी ने प्रत्युत्तर लिख भेजा कि आप भी तोपखाना की ओट मत लेना। तब कुसलसिंहजी ने राजाधिराज को मालूम करवाया कि मेरे और शेरसिंहजी के मध्य तलवारों और बर्छियों (से युद्ध) का वचन है सो तोपखाना और जूंजालों[7] की गाड़ियां हमसे दूर रखवाना, तब फरमाया कि ठीक है। तब शेरसिंहजी ने श्री चतुर्भुज जी के मंदिर जाकर रु. 500/- का छत्र चढ़ाया और विनती की कि हे प्रभु ! मुझे और कुसलसिंहजी को आमने सामने करना। फिर महाराज रामसिंहजी चढ़कर दूदासर[8] में आ खड़े हुए। दूदासर तलाव की पाल के ऊपर तोप तैनात हुई और गोले (बरसने) शुरू हुए और राजाधिराज बखतसिंहजी ने गांव सांगावास और जुमासमीतवा के मध्य से आगे बढ़ना प्रारम्भ किया और तोपखाना बरसना प्रारम्भ हुआ। रामसिंहजी की सेना में से रीयां के ठाकुर शेरसिंहजी आलणियातास के ठाकुर सूरजमलजी, बिखरणियां के

1. युद्ध अथवा विशेष अभियान के एलान के निमित्त नक्कारा बजवाना।
2,3. पिछले पृष्ठ की टिप्पणीयाँ देखें।
4. गुजरात का पदच्युत सुबेदार जिससे अभयसिंहजी ने अहमदाबाद लिया था।
5. महाराज
6. पृष्ठ 121 की टिप्पणी देखें।
7. एक प्रकार की बड़ी बन्दूक।
8. मेड़ता स्थित एक सरोवर।

ठाकुर डूंगरसिंहजी बलूंदा के ठाकुर श्यामसिंहजी, सेवरिया ठाकुर देवसिंहजी, खींवसर के ठाकुर जोरावरसिंहजी ये सभी बन्धु-बान्धवों सहित बखतसिंहजी की सेना की तरफ ब्रीग्वां ब्रीखां[1] घोड़े बढ़ाये और उधर से आउवा के कुसलसिंहजी पोकरण के देवीसिंहजी, नींबाज के कल्याणसिंहजी, रास के केसरीसिंहजी और आसोप के कनीरांमजी, चंडावल के पृथ्वीसिंहजी इन सरदारों ने भी घोड़े इनकी तरफ बढ़ाये। राजाधिराज ने तोपखाने के दरोगा पड़िहार[2] जैसा को पहले कह रखा था कि गजों[3] की गाड़ियां बाजू में रखना सो रामसिंह जी की सेना में से शेरसिंहजी घोड़ों को बढ़ाने लगे तब शीघ्रता से उनपर छोड़ना। (सो) उसी समय बाज से गजों की तीनों गाड़ियां छूटी, गजों के तीन-तीन तह थे सो सरदार कितने ही गोलियों से छलनी हो गये। शेरसिंहजी की छाती में गोली लगी सो घोड़े के ऊपर बैठे थे सो मूर्छित हो गये। कुसलसिंहजी पास आए तब जेतमाल[4] डूंगरसिंहने घुटना पकड़ ठाकुर को सावधान किया और कुसलसिंहजी को देखा तब बर्छी का वार किया सो कुसलसिंहजी के हाथ के गुद्दे पर लगी। फिर कुसलसिंहजी ने भी बर्छी का वार किया सो शेरसिंहजी की छाती में लगी सो घोड़ें पर से नीचे जा गिरे और आलणियावास के ठाकुर सूरजमल जी ने बर्छी का वार किया सो कुसलसिंहजी के काले केशों में लगी।

संवत 1807* के कार्तिक शुक्ल 9 को यह युद्ध हुआ। महाराज रामसिंहजी की सेना में इतने कांम आए विवरण —

मेड़तिया शेरसिंह पुत्र सरदारसिंह पट्टे रीयां।
मेड़तिया सूरज़मल पुत्र सरदारसिंह पट्टे आलणियावास।
श्यामसिंह पुत्र अभयसिंह पट्टे गांव बलूंदा।
डूंगरसिंह पुत्र श्यामसिंह पट्टे विखरणिया।
सुरतानसिंह पुत्र फतहसिंह पट्टे गांव सेवरिया।
शेरसिंहजी का कोठारी[5] सुजान।
करमसियोतों[6] की आसामियों में तीन काम आए

---

1. 'ब्रीख' चल से दौड़ते हुए। घोड़ों की चालों को राजस्थान में कमोबेसी चार प्रकारों में बांटा गया है। खडना, चाल, ब्रीख, सराड़ा जो अंग्रेजी के क्रमशः WALK, TROT, CANTER, GALLOPE से मिलते जुलते है। इस प्रकार ब्रीख CANTER की भ्रांति की चाल है जिसमें घोड़ा मध्यम वेग में भागता है।
2. राजपूतों की एक उपजाति (प्रतिहार)। 3. जुंजाले - एक प्रकार की बड़ी बन्दूक।
4. जेतमाल = जेतमाल पुत्र सलखा के वंशज (राठौड़)।
* सन् 1749
5. भण्डार रक्षक एक पद।
6. करमसियोत = करमसी पुत्र जोधा के वंशज।

राजाधिराज बखतसिंहजी के (पक्ष में) काम आए - चांपावत कुसलसिंह पुत्र हरनाथ पट्टे आउवा जख्मी हुए सो उसी दिन डेरा कोसनडिये हुआ तब रात को देहावसान हुआ सो कोसनडिये की पाल पर दाहसंस्कार हुआ।

शेरसिंह जी कुसलसिंह जी ने घोड़े (एक दूसरे की ओर) बढ़ाकर तलवार बर्छियों से युद्ध किया जहां सरदारों के भाई-भतीजे बहुत से काम आए दोनों ओर के। कुचामन के ठाकुर जालमसिंह जी और मीठड़ी के ठाकुर शक्ति सिंहजी पुत्र केसरीसिंह और कुंवर नाहरसिंह पुत्र शक्तिसिंह, इन्होंने गांव सांगावास के बाहर से होकर राजाधिराज की पीठ की ओर आकर घोड़े बढाये[1] सो तलवार चलाते-चलाते देराणी तालाब पर आ गए और चांदावतों के बिना नागौर का साथ[2] सारा भाग गया सो गांव फलोदी तक पीछा किया और राजाधिराज हाथी पर सवार अकेले थोड़े से साथ सहित पाल पर रह गये। बाद में तो और लोक[3] आकर एकत्र हो गए। महाराज रामसिंहजी के सरदार इतने कांम आये उनका विवरण —

शक्तिसिंह पुत्र किसोरसिंह पट्टे मीठड़ी।
कुंवर नाहरसिंह पुत्र शक्तिसिंह मीठड़ी वाले।
जालमसिंह पुत्र किसोरसिंह कुचामन के ठाकुर जख्मी हुए।
आसामी पांच रूघनाथ सिहोत मेड़तियों[4] में तथा सहायक दस काम आये और
सात जख्मी हुए।

महारोठ के मेड़तिये और भंडारी दौलतराम देराणी तालाब में जगमंदिर के पास घोड़ों पर सवार खड़े थे सो उनके घोड़े बढे सो नागौर की सेना भागी सो गांव लाही तक पीछा किया। राजाधिराज और बीकानेर तथा रूपनगर के शासक औरप्रमुख उमराव जमे रहे। कुसलसिंहजी ने घायलावस्था में आकर राजाधिराज को अभिवादन किया। तब राजाधिराज ने कहा, ठाकुर धन्य है आप, कि वीरतापूर्वक युद्ध किया। अब पालखी में बैठ जाइये। तब कुसलसिंह जी ने निवेदन किया कि पालखी का आदेश न दें। तब हाथी के हौदे पर बिठाया तत्पश्चात् सूर्यास्त तक तो तोपों का युद्ध किया और महाराज रामसिंहजी के काम आये उनका विवरण —

राजा अनोपसिंह धीरजसिंह।
जोधा[5] अनोपसिंह पुत्र हरनाथ गांव दंधांणा का जेतावत।
जेतमाल[6] बखतसिंह पुत्र मानसिंह सोजत का गांव सारंगवास पट्टे था वह
राजाधिराज की सेना में और काम आये —

---

1. घोड़ों पर सवार हमला किया।
2, 3. सैन्यदल
4. राठौड़ों की मेड़तिया शाखा में रुघनाथसिंहजी के वंशज।
5. राठौड़ों की एक शाखा पृष्ठ 142 की टिप्पणी देखें।
6. जेतमाल = पृष्ठ 151 की टिप्पणी देखें।

भाटी रावलोत[1] बखतसिंह पुत्र पृथ्वीसिंह वीठोरा।
रात्रि के उतरार्द्ध में कुसलसिंहजी का देहावसन हुआ सो कोसनडी की पाल[2] पर दाह संस्कार हुआ।

दूसरे दिन राजाधिराज ने फिर चढाई की सो दूदासागर तालाब पर महलों की तरफ आए। महाराज रामसिंहजी का तोपखाना दूदासागर की पाल पर स्थापित किया हुआ था सो उभयपक्ष के अनेक आदमी और घोड़े बिखर गए (टुकड़े-टुकड़े हो गये)। सूर्यास्त होने पर डेरों में दाखिल हुए तब विचार किया कि मेड़ता तो हाथ आ नहीं रहा है। लोक[3] मरवाने से क्या हासिल। तब राजाधिराज, बीकानेर महाराज गजसिंह जी और रूपनगर के बहादुर सिंहजी एक राय पर कूचकर नागौर गए, सो रायपुर के ठाकुर भाखरसिंहजी को सेवक रखा। वहाँ से कूचकर सोजत पर अधिकार किया। बाद में महाराज रामसिंहजी ने मेड़ता से कूचकर लोढावास डेरे किए और राजाधिराज कूचकर गांव आए चारपांच बार गोली बारी का युद्ध हुआ। पहले गोलीबारी के युद्ध में राजाधिराज हाथी पर सवार थे सो गोला हाथीकी छाती में लगा। (तब) दूसरे हाथी पर सवार हुए। राजाधिराज ने विचार किया वार्ता करें तो कष्ट समाप्त हो सो पोकरण देवीसिंहजी (की मार्फत) देवसिंह कूचामन जालमसिंहजी को कहलवाया कि (संधि की) वार्ता करें। तब जालमसिंह जी वार्ता करने आए। तब राजाधिराज ने फरमाया आपके सरदारों को मना लीजिए और मेड़ता (हमें) दीजिए। तब जालमसिंहजी ने कहा कि मेरी ज़बान से तो बर्छी के फल के नीचे जमीन आये उतनी भी देंगे नहीं। जालमसिंहजी, देवसिंहजी वापस डेरों पर आए। दूसरे दिन प्रभात में राजाधिराज चढकर आए। रामसिंहजी लोक[4] लेकर तलैया पर जा खड़े हुए और तोपखाना स्थापित किया और इधर से राजाधिराज ने भी तोपखाना स्थापितं किया। सो राजाधिराज महाराज रामसिंहजी के डेरों पर गए सो बाजार लूट लिया और तम्बू खड़े थे सो जला दिए। तब महाराज रामसिंहजी ने जोर-जोर से पुकारा, 'अरे मेरे गडकड़े[5] जल रहे हैं।' कुचामन कुंवर चैनसिंहजी ने ठाकुर जालमसिहजी को कहा की राजसी खेमों का धुंआ मूंछों में से होकर निकल रहा है। अब खड़े क्या देख रहे हैं? तब कुचामन के ठाकुर ने घोड़े बढाये सो रुघनाथसिंहोत[6] सीधे राजाधिराज के हाथी की ओर टूट पड़े सो गीजां[7] की गाड़ियों से हाथी घोड़े आदमी बिखर गए तब सरदार पैदल होकर तलवारों से युद्ध करने लगे। यह युद्ध सं. 1807 के वैशाख कृष्ण 1* को हुआ।

---

1. भाटी उपजाति की शाखा।
2. सरोवर का किनारा।
3. सेना अथवा सैनिक।
4. सेना।
5. गडकड़े = कुत्ते, पिल्ले।
6. राठौड़ों की मेड़तिया शाखा के रघुनाथसिंहजी के वंशज।
7. एक प्रकार की बन्दूक।   * सन् 1749 ई.

महाराज रामसिंहजी की सेना में काम आए उनका विवरण —

मेड़तिया जालमसिंह पुत्र किसोरसिंह पट्टे कुचामन के, आदमी 70 सहित काम आये और कुंवर दो काम आए उनका विवरण —

1 रा. चेनसिंह ।
1 रा. सुरतानसिंह ।
2

महारोठ के —
बखतसिंह पुत्र इन्द्रसिंह ।
राठौड़ वैरीशाल पुत्र इन्द्रसिंह ।
राठौड़ देवीसिंह पुत्र शंभुसिंह, पांचोता ।
दुर्जनासिंह पुत्र शंभुसिंह ।
रा. भवानीसिंह पुत्र सावंतसिंह ।

भं. दौलतराम के हाथी के तीर एक लगा और घोड़े के कंधों पर तलवार लगी सो घोड़ा काम आया ।

भंडारी दौलतराम सूरतराम ने एक लाख साठ हजार रुपये संकट देखकर नजर किए ।

राजाधिराज ने कूचकर गांव हींगावास डेरे किए । महाराज रामसिंहजी के डेरे गांव रूपावास हुए । फिर गोलों का युद्ध हुआ । महाराज रामसिंह जी के हाथी फतहगज के बंधे हुए के गोला लगा सो काम आया ।

दूसरे सरदार तो सभी छोड़कर राजाधिराज के पास चले गए थे और मेड़तिये[1] रहे थे सो दोनों युद्धों में काम आ गए । महाराज रामसिंहजी रूपावास से कूचकर गांव पालासणी आए और छड़ी-असवारी[2] जोधपुर पधारे । और राजाधिराज बखतसिंहजी ने कूच मेड़त की तरफ किया । तब महाराज रामसिंहजी को सभी सरदारों ने निवेदन किया मेड़ता यदि बखतसिंहजी ने ले लिया तो छोड़ेंगे नहीं । तब महाराज रामसिंहजी एक रात जोधपुर में रहकर चढ़े[3] सो मेड़ता में दाखिल हुए और तोपखाना गांव गगराणे में अटका पड़ा था । तब राजाधिराज गांव गगराणे गए सो तोपखाना तो मेड़ता में घुस गया तब जेतारण की ओर कूच किया । तब रास के ठाकुर केसरीसिंहजी ने निवेदन

1. राठौड़ों की एक शाखा दूदा पुत्र जोधा का वंशज ।
2. नगण्य प्राय: सहयोगियों सहित अथवा अकेले ।
3. प्रस्थानार्थत वाहन आरूढ हुए ।

किया कि बलूंदा पर[1] पधारिये, सो रु. एक लाख ले लेंगे। और आप नही पधारे तो हमें आदेश दीजिये सो हम लूट लेंगे और दो महीने तक आप से खर्ची नहीं मागेंगे। तब राजाधिराज बलूंदा की ओर बढ़े।

चांदावत बहादुरसिंह, जालमसिंह को खबर पड़ी तब इन्होंने विचारा कि मालिक पर जोर नहीं परन्तु हम तो बलूंदा पर चढ़ेंगे नहीं। भारवीरदारी[2] के ऊंट वालों, को बुलाया सो सेवकों ने भारवीरदारी के ऊंट मार्ग से हटाकर खड़े किए तभी राजाधिराज की सवारी आई सो पूछा कि ऊँट किसकें है और मार्ग से क्यो हटा कर खड़े किए है ?

तब सेवकों ने कहा बहादुरसिहजी जालमसिहजी की भारवीरदारी है सो वापस मंगाई है तब राजाधिराज ने सवारी खड़ी रखवाई और बहादुरसिहजी जालमसिंहजी को बुलवा कर फरमाया कि उदास क्यों है ? तब इन्होंने निवेदन किया कि बलूंदा हमारा बडेर[3] है तब फरमाया कि फतहसिंह हमारे पास आकर चला गया इस तरह हमारी मजाक उड़ाई। तब इन्होंने निवेदन किया कि यह गुनाह हम पर माफ कीजिए, फतहसिंह को लाकर हम हाजिर कर देंगे। तब राजाधिराज के डेरे गांव बांजाकुड़ी हुए। चांदावत[4] बहादुरसिंह, जालमसिह बलूंदे गये सो फतहसिंह को लाकर राजाधिराज के पांव स्पर्श करवाये। तत्पश्चात् फतहसिंह आज्ञा लेकर बलूंदे गया और जमीत राजाधिराज के पास रखदी। तत्पश्चात् बांजाकुड़ी से कूचकर नींबाज पधारे कल्याणसिंहजी ने दावत दी और महाराज का तोपखाना वहाँ पड़ा था सो नजर[5] किया। फिर नीबांज से रायपुर डेरे हुए। सो महाराज रामसिंह जी के बाबस्तां वहां थे उन्हें सौंप दिया गया। उनपर रु. 50,000/- पचास हजार (पेशकसी के) तय हुए। फिर रायपुर के ठाकुर भारथसिंह के पुत्र पदमसिंह ने आकर राजाधिराज को अभिवादन किया और साथ हुआ तब बाबस्तों को छोड़ दिया और रुपये तय हुए थे सो माफ कर दिए। रायपुर से जोधपुर को कूच किया सो बिलाड़ा लूट लिया और ड्योढ़ीदार का गांव पाल लूटकर रातानाडा डेरे किए।

संवत 1807 आ. शुक्ल 9* गढ तालके[6] आसामियाँ[7] थी उनका विवरण —

किलेदार[8] भाटी सुजानसिंह पुत्र साहबखान जेसाभाटी[9] पटे लवेरा।
चौहान राव मोकमसिंह पुत्र लालसिंह सांचोर।

1. बलूंदा पर धावा बोलने हेतु।
2. मालवाहक एवं खेमों के सामान के वाहक।
3. पूर्वजों का गांव है।
4. राठौड़ों की एक शाखा।
5. भेंट।
6. दुर्ग की रक्षार्थ उत्तरदायी अथवा दुर्ग में सन्नद।
7. प्रमुख व्यक्ति।
8. एक पद = दुर्गपाल।
9. राजपूतों की भाटी उपजाति की एक शाखा।
* सन् 1749

शहर तालके[1] आदमी थे उनका विवरण —

1 रा.[2] दोलसिंह, मुकनदास पुत्र सुजानसिंह पट्टे बलांणा ।

1 करणोत[3] जेतकरण पुत्र महकरण पट्टे वागावास ।

1 जोधा[4] सूरजमल पुत्र दुर्जनसिंह पटे पाटोदी ।

1 महेचा[5] सरदारसिंह पुत्र करणसिंह पट्टे थोब ।

1 भाटी[6] महेसदास पुत्र नाथा पटे कीटनोद ।

1 धायभाई देवकरण को महाराज रामसिंहजी ने भेजा ।

1 भंडारी सूरतराम पुत्र मनरूप ।

7

जोधपुर के सरदार सिपाही सभी महाराज बखतसिंहजी से मिल गए सो आषाढ शुक्ल 10* महाराज बखतसिंहजी रातानाडा से सवार होकर सिवान्ची दरवाजे पर पधारे सो दो-चारबन्दुकों के भड़ाके किए और फिर सिद्दियों[7] ने दरवाजा खोल दिया । धायभाई वगैरह जो शहर पनाह[8] के मोरचों परतैनात थे सो भागकर दुर्ग में घुस गए । महाराज बखतसिंहजी बीकानेर के राजा गजसिंहजी, रूपनगर के राजा बहादुरसिंहजी मुख्य बाज़ार से गुजरकर तलहटी के महलों में दाखिल हुए । दुर्ग के ऊपर तैनात तोपें छूट रही थी । राजा गजसिंहजी ने शहर लूटने का निवेदन किया, तब फरमाया कि कौनसा पराया देश है । चामुण्ड बुर्ज के गोले, तलहटी के महलों में जहाँ बखतसिंहजी विराजे थे वहां तक आ रहे थे तब बीच में दीवार चुनवाई । भाटी सुजानसिंह जी और धायभाई देवकरण ने जनाना ड्योढी जाकर रामसिंहजी की माताजी गांव लीचांणा की थी, उन्हें निवेदन किया कि आपके कुंवर रामसिंहजी और सरदारों के मध्य अत्यधिक कटुता पैदा हो गई है । आपके कुंवरजी से सरदार रुक नहीं रहे है और रामसिंहजी से कोई खुश नहीं है । आप फरमावें तो महाराज अजीतसिंहजी के राजवी रतनसिंहजी रूपसिंहजी[9] कैद में है उन्हें मुक्त कर (राज्य) सौंपे सो सरदार

1. शहर में नियुक्त ।
2. राठौड़ शब्द का शब्द संक्षेप ।
3, 4. राठौड़ों की शाखाऐं करण पुत्र रिडमल के वंशज करणोत कहलाते हैं । 'जोधा' हेतु पृष्ठ 142 की टिप्पणी देखें ।
5. राठौड़ों की शाखा भोजराज पुत्र राव मंडलक के वंशज ।
6. राजपूतों की एक उपजाति ।
7. अबीसीनियाई मुसलमान ।
8. नगर की सुरक्षा प्राचीर ।
9. महाराज अजीतसिंहजी के पुत्रों, मं. अभयसिंहजी के भाइयों के नाम ।

भी कितने ही फंट कर चले आयेंगे । तब माजी[1] नरूकीजी[2] ने फरमाया आपके प्रयत्नों से रहता हो तो (राज्य) रामसिंह का ही रखिये । और रतनसिंहजी रूपसिंहजी तो मेरी सास चौहानजी[3] के सौत के पुत्र है और बखतसिहजी मेरे सगे देवर है सो बखतसिहजी के राज्य रहेगा तो मेरी सास चौहानजी के पेट से[4] तो राज्य जायेगा नहीं ।

समाड़िया के चांपावत सूरजमल पुत्र रामसिंह और गांव देधांणा के जोधा उदयसिह पुत्र हिंदूसिंह, इन्होंने माजी नरूकीजी से निवेदन किया कि भाटी सुजानसिंह और चौहान मोकमसिंह ये दोनों बखतसिंहजी से मिले हुए है सो इन्हें अब मार डालें और दुर्ग छोड़े नहीं तब मांजी नरूकीजी ने फरमाया ठीक है । बाद में यह बात जाहिर हो गई जिससे मनसुबा पूरा नहीं हो पाया ।

राजा बखतसिंहजी ने पोकरण के ठाकुर देवी सिंहजी को भाटी सुजानसिंहजी से वार्ता करने के लिए भेजा, सुजानसिंह जी देवीसिंहजी के श्वसुर थे, देवीसिंहजी ने लक्ष्मण पौल जाकर सुजानसिंहजी को बुलाकर वार्ता की । कहा रामसिंहजी कल आपको भी निकाल बाहर करेंगे और हम सभी राठौड़ों पर अहसान होगा सो दुर्ग सौंप दीजिए अन्यथा मैं आप पर आत्मघात करूंगा तब सुजानसिंहजी ने कहा मैं अकेला दुर्ग में कर्ताधर्ता नहीं जब चौहान मोकमसिंहजी, महेचा सरदारसिंहजी धाय भाई देवकरणजी इनको और बुलाकर देवीसिंहजी ने कहा हम मराठों को लायेंगे परन्तु जोधपुर में विजयसिंहजी को सिंहासन पर बिठा देंगे वरना यह अवसर है जोधपुर का दुर्ग सौंप दो । धायभाई के पास मुसाहिबी रहेगी । आप सरदारों के लाख-लाख का पट्टा देंगे । और बखतसिंहजी तो घुमक्कड़ है सो वापस नागौर चले जायेंगे और विजयसिंहजी के राज्य में आपका दबदबा रहेगा । तब सरदारों ने हां भरी । दूसरे दिन चारों जनोंको राजाधिराज के पास लाए । राजाधिराज तीनों सरदारों से गले लगकर मिले । धायभाईजी की और तीनों सरदारों की बहुत खातिर की । देवीसिंहजी ने निवेदन किया मुहूर्त (शुभ) है सो दुर्ग पर पधारिये । तब फरमाया, 'ये तीनों सरदार हमारा हाथ पकड़ कर हमें ले जावें तो चलें तब सरदारसिंह महेचा ने निवेदन किया हमने तो हाथ महाराज रामसिंहजी का पकड़ा था परन्तु आपके हाथ तो ठाकुरजी श्री गिरिधारीजी ने पकड़े हैं। यह कहकर तीनों सरदारों ने राजाधिराज के हाथ के हाथ लगाकर (उन्हें) खड़ा किया । राजाधिराज हाथी पर सवार हुए । हाथी पर पीछे खवासी[5] में पोकरण के ठाकुर देवीसिहजी बैठे ।

---

1. राजमाता ।
2. नरूका राजपूत वंशोत्पन्न होने से 'नरूकीजी' कहलायी ।
3. चौहान राजपूत वंशोत्पन्न होने से 'चौहानजी' कहलायी ।
4. वंशजों से ।
5. खवासी = हाथी के हौदे में शासक के सिंहासनरूपी पिष्टिका के पीछे का वह स्थान जहाँ व्यक्ति चंवर लिये खड़ा रहता है ।

संवत 1808 के श्रावण वद 2* शनिवार रात्रि दो घड़ी व्यतीत हुए दुर्ग में दाखिल हुए। फतहपौल वडखेडे तोरण बांधा। क़ोई-कोई वर्षा की बूंदे बरस रही थी। कोठारों और द्वारों का जाबता करवाया[1]। मुरलीमनोहर जी की पूजा में पधारे और सरदारों को फरमाया कि श्रीकृष्ण जी ने पांडवों की बनिस्बत मेरी सहायता अधिक की। कौरवों का कुल नष्ट कर उन्हें राज्य दिया और मेरी सारी सभा रखकर राज दिया। दूसरे दिन चोबदार[2] ने घूमकर ऐलान किया कि मुख्य दरबार है सो आना। महाराज बखतसिंहजी श्रृंगार चौकी पर विराजे और फरमाया कि तलवार हमारे बांधिये। सो पहले से विजयसिंहजी को अभेसिंहजी की गद्दी पर बिठाना निश्चित किया था इसलिए सरदारों ने परस्पर एक दूसरे को देखा। तब आसोप ठाकुर कनीरामजी के पुत्र दलजी ने हाथ जोड़कर निवेदन कियाकि वचन पायें। तब महाराज बखतसिंहजी ने रुष्ट होकर कहा कि मेरे जीवित रहते ही। तब आसोप कनीरामजी ने पहाड़सिंहजी के पड़तले में से तलवार निकालकर बंधवा दी। सभी ने नजर निछरावल की। रूपनगर के राजा बहादुर सिहजी ने खड़े होक़र चंवर किया और बीकानेर के राजा गजसिंहजी बैठे रहे।

महाराज बखतसिंहजी का जन्म सं. 1763 ** भाद्रपद कृष्ण 8 का और संवत 1808*** के श्रावण कृष्ण 12 जोधपुर का दुर्ग लिया।

संवत 1807**** को महाराज बखतसिंहजी ने आषाढ शुक्ल 10 को शहर जोधपुर पर अधिकार किया। और तलहटी के महलों मे दाखिल हुए उस समय वर्षा हो रही थी शहर में आणदुहाई[3] बखतसिंहजी की फिरी कोटवाली चबूतरे के झंडों में खोली डालने के लिये महाराज बखतसिंहजी के आदमी आए सो पुस्करणा[4] पुरोहित ढोला चबूतरे पर नौकरी करता था सो ढाल-तलवार ले झंडे के पास आ खड़ा हुआ और कहा कि झंडे के खोली डाली तो आपको महाराज श्री रांमसिंहजी की सौगन्ध है। परन्तु उन्होंने सौगन्ध मानी नहीं तब लड़कर कांम आया जिसके वंशजों को महाराज बखतसिंहजी ने बड़प्पन से विचार कर चबूतरे तालके[5] आजीविका निश्चित कर दी। सो अभी तक चूबतरे पर सेवा में हाजिर है और आजीविका बदस्तूर है।

नागौर संदेशवाहक भेजा गया सो जनाना सरदारों[6] और कुंवरजी विजयसिंहजी का जनाना[7] और विजयसिंहजी के कुंवर फतहसिंहजी, भोमसिंहजी सरदारसिंहजी, जालमसिंहजी और बाबाजी आत्माराम जी जोधपुर पधारे। और आत्मारामजी को तासका चोला-ताखी[8] भेंट किये और बाबाजी

---

* सन् 1750 ** 1705 ई. *** 1750 ई. **** 1749 ई.

1. निरीक्षण किया एवं सुरक्षा-व्यवस्था हेतु निर्देश दिए।
2. एक पद विशेष। 3. आणदुवाई = राज्यभिषेक की घोषणा
4. ब्राह्मणों की एक उपजाति 5. चबूतरे (चौकी) के जिम्मे।
6. महाराज बखतसिंहजी के रनवास के सदस्य। 7. राजकुमार विजयसिंहजी के रनवास के सदस्य।
8. तास का चोला-ताखी = उपयुक्त वस्त्रादि।

के हाथी के हौंदे पर बिठाया और महाराज बखतसिंहजी स्वयं चंवर ले बाबाजी (के हाथी) की खवासी में विराजे। आगे-आगे कुंवरजी और भंवरों की पालखियां इस भांति मुख्य बाजार होकर पिछली दो घड़ी दिन रहते दुर्ग में दाखिल हुए और बीच वाले महल में बाबाजी को रखा।

बीकानेर की खरबूजी की पट्टी को महाराज अभयसिंहजी ने नागौर के अधीन कर दिया था सो राजा गजसिंहजी को वापस इनायत की और मोती-1, सिरपेच-1 जड़ाऊ पुणछियां[1]-1 और हाथी-1, घोड़े-4 और रुपये 10,000/- परबारी खुराक[2] के दे (उन्हें) बीकानेर को विदा किया।

रूपनगर के राजा बहादुरसिंहजी को अजमेर परगने के रामसर और श्रीनगर इनायत कर विदा किया। जोधपुर शहरपनाह[3] का निर्माण प्रारम्भ किया। और फरमाया कि शीघ्र पूर्ण हो ज्यों कीजिये। सो वास्तुकारों ने जगह-जगह कारीगर और मजदूर लगा दिये और निर्माणकार्य का निरीक्षण करने हेतु सवारी करके पधारे।

सि.[4] फतहचंद और ड्योढ़ीदार[5] गोविन्ददास को रिसाला व सिलहपोशचांदावतों[6] को साथ देकर मेड़ता की ओर विदा किया। रामसिंहजी मेड़ता से कूचकर महारोठ गये सो महारोठ परबतसर, सांभर तो रामसिंहजी के अधीन रहे और बाकी सभी जगह बखतसिंहजी का अधिकार हुआ। लवेरा के भाटी सुजनासिंहजी किलेदार[7] थे सो महाराज बखतसिंहजी का दुर्ग सौंप दिया उस समय का दोहा —

*थारो नाम सुजाणं थो, अबके हुओ अजांण।
आश्रम चोथे आवियों, ओ चूको अवसांण॥

महाराज बखतसिंहजी नित्यप्रति दोनों समय दरबार करते, सरदार पांतिये भोजन[8] करते, बागों, बगीचों में भोज आयोजन करते, हाथी लड़ाते, खर्च अलग करने के उपरांत सवा दो हजार रुपये खजाने में दाखिल कराते।

---

*भावार्थ — तुम्हारा नाम तो सुजान, समझदार था परन्तु अब नासमझ हो गया। चौथे आश्रम में आकर भी अर्थात् 75 वर्ष की उम्र पार करने पर भी, इस तरह कर्त्तव्यच्युत हो गया।

1. कलाई पर पहनने का आभूषण
2. Lumpsome भोजन व्यय।
3. नगर सुरक्षा प्राचीर
4. सिंघवी का शब्द संक्षेप।
5. एक पद का नाम।
6. राठौड़ों की उप शाखा।
7. एक पद का नाम।
8. पंक्तिबद्ध बैठकर भोजन करने की परंपरा है।

भाद्राजूण के विद्रोहियों पर सेना देकर महाराजकुमार विजयसिंह जी को विदा किया सो भाद्रजूण को (राज्य में) मिला दिया और वहां थाना स्थापित कर वापस आए और चौरासी 84 गांवों सहित भाद्राजूण पाली के ठाकुर चांपावत प्रेमसिंहजी को लिख दिया ।

महाराज बखतसिंहजी ने राज्यतिलक का मुहूर्त निकलवाया और फरमाया कि हम तो नागौर में भी राज्य करते ही आ रहे हैं परन्तु जोधपुर के सिंहासन पर आए है सो तिलक का मुहूर्त तो करना ही चाहिये ।

महाराज बखतसिंहजी ने सभी भंडारों की हाजिरी ली सो ख्वाबगाह की तरफ वाले भंडार की हाजिरी ले रहे थे सो कूंपावत दलजी पुत्र कनीरांम आसोप का, ठा. देवीसिहजी पोकरण, केसरीसिंहजी रास, कल्यामसिंह नींबाज, प्रेमसिंह पाली आदि सभी ।

सरदार दौलतखाने[1] में एकत्रित होकर बैठे थे । उन्हें दलजी ने कहा कि महाराज तिलक का मुहूर्त निकलवा रहे है और हम सभी से वायदा कुंवरजी विजयसिंहजी को महाराज अभयसिंहजी के खोले बिठाने का किया था सो कहो तो भण्डार की कूंडी जड़ दू । तब सरदारों ने कहा अभी तो रूकिये बहुत समय पड़ा है । पोकरण देवीसिंहजी और रास केसरीसिंहजी इन्होंने सिघवी फतहचंदजी को गोसे[2] में समाचारों से वाकिफ किया.। तब हजूर भण्डार से बहार पधार गए । फिर कनीरांम जी को महाराज बखतसिंहजी ने फरमाया आपके बेटे को मेरे राज्य में स्थान नहीं दे सकता । आपके कंवर को चले जाने की आज्ञा दीजिए और (आप यही) बैठे रहिए । तब कनीरांमजी ने निवेदन किया मेरा बेटा कपूत है और इसे छोड़ू तो मेरा लौकिक जीवन बिगड़ जावेगा, सो एक बार तो इसे लेकर बीकानेर चला जाऊंगा इसका वहाँ ठिकाना निश्चित कर आ हाजिर (होऊंगा) सो अभिवादन कर आसोप गए । मुसलमान सौदागरों का कारवां था सो दलजी ने लूट लिया और लूटकर बीकानेर को चढ गये महाराज गजसिंहजी ने गांव 'वस्सी' रहने हेतु दिया ।

और रोजीना कर दिया । बीकानेर के महाराज गजसिंहजी जैसलमेर विवाह हेतु गए तब महाराजकुमार विजयसिंहजी को बारात में भेजा सो सीधे ही पोकरण में शामिल हुए । महाराज गजसिंहजी जैसलमेर विवाह करके बीकानेर गए और महाराजकुमार विजयसिंहजी जोधपुर पधारे । बाद में देवड़ों का डोला[3] आया सो पंचोली[4] केसरीसिंहजी की हवेली में महाराजकुमार ने विवाह किया ।

---

1. कीमती सामान रखने का महल, किले की महलायत का एक महल ।
2. गौसे = खानगी
3. देवड़ा शाखा की राजकुमारी की डोली ।
4. कायस्थ ।

अजमेर का परगना राजगढ़ चंवालिस गांवों से राजा बहादुर किसोरसिंहजी को लिख दिया। बलूंदा के ठाकुर फतहसिहजीने छाड़[1] की बलूंदा चांदावत जालमसिंह पुत्र उदयसिंह को लिख दिया। गांव कोसांणा चांदावत बहादुरसिंह पुत्र सबलसिंह को लिख दिया।

भाटी किसनसिंह को पचास हजार का पट्टा लिख दिया, आउवा के जैतसिंहजी को अतिरिक्त पट्टा लिख दिया। पोकरण देवीसिंहजी को पट्टे का प्रस्ताव दिया (उन्होंने) लिया नहीं।

पुरोहित विजयराज को तिवरी पट्टे पर दी। जोधपुर की कोटवाली पड़िहार[2] शिवदान को दी। पूर्व में गांव बावरला महारज अभयसिंहजी ने ले लिया था सो शिवदान नागौर चला गया था सो गांव बावरला ही पुनः लिख दिया। भंडारी गिरधरदास की हवेली सि. फतहचंद को दी। पुरोहित रणछोड़दास का निवास ओझा जगनेश्वर को दिया और पुरोहित जगू का निवास पुरोहित जयराज को दिया और चतांणी व्यास देइदान महाराज अभयसिहजी का दानायक[3] था जिसे गधे पर सवार कर शहर से बाहर निकाल दिया। औहदे, सेवाऐं इस प्रकार इनायत की गई जिनका विवरण —

1 दीवान पदवी सिंघ (वी) फतहचंद को दी, सिरपांव, पालखी।
1 बख्शी पद मे.[4] सूरतराम।
1 खानसामा पद भं.[5] महेसदास।
1 दुर्ग की किलेदारी खीची[6] सूंदरा को दी।

1 श्रीमाली ओझा जगनेश्वर की अच्छी चलने लगी, पालखी दी।
1 प्रधानग़ी पोकरण ठाकुर देवीसिह जी को दी।
1 पुरोहित जयराज को गांव तिवरी पट्टे पर दी।
1 बारहठ[7] करणीदान को बारहठ पदवी दी।
1 खींची[8] विजा-1, गोरधन-1 निजमरजी में सो महारजकुमार
श्री विजयसिंहजी तालके हाजिर।
1 पड़िहार[9] जेसा को तोपखाने का दरोगा नियुक्त किया।
1 कछवाहा[10] जेसा को कटक की कोटवाली दी।
1 ड्योढीदार शोभावत गोविंददास पुत्र अणदरांम।
1 धायभाई हरनाथ जगनाथ की मान्यता बढी।
1 देशवाली साहबखां तोपखाना का दरोगा।

---

1. पक्ष छोड़कर चले जाना।
2. एक राजपूत वंश, प्रतिहार
3. दान लेने वाला
4 व 5. क्रमशः मुंहता एवं भंडारी का शब्द संक्षेप।
6. एक राजपूत वंश।
7. एक चारण वंश। 8,9,10. विभिन्न राजपूत वंश।

1 दरजी भूरा, अगोलिया हररांम पर विश्वास

1 भंडारी सूरतराम दुर्ग में था ।

1 भंडारी दौलतराम ।

मेड़ता के डेरों से इतने सरदारों के वचन से आए —

1 पोकरण देवीसिंहजी ।

1 आऊवा जैतसिंह जी ।

1 नींबाज कल्याणसिंहजी ।

1 आसोप कनीरांम जी ।

इनके वचन से आए ।

1 पं.[1] लालजी अजमेर था सो सीधे ही आया ।

और भी धांधल, खीची, पड़िहार, शोभावत सेवक-अपदार वगैरह सारे आ हाजिर हुए ।

और महाराज बखतसिंह जी ने इतने नवीन निर्माण कार्य करवाये तथा पिछले पुनः प्रारम्भ करवाये उनका विवरण इस प्रकार है —

1 मरदानी ड्योढी के पास जनानी पोल थी सो जनानी ड्योढी की पोल वाड़ी के महलों की तरफ बनवाई ।

1 अगरण का महल स्वर्गीय महाराज श्री जसवंतसिंहजी द्वारा निर्मित था सो दौलतखाने के महलों के सम्मुख चौक में था सो गिरवाया ।

1 ठाकुरजी श्री अणदधनजी का मंदिर बनवाया ।

1 शहर के चारों ओर दुर्ग प्राचीर विस्तार से बनवाया ।

1 छतरियां वगेरह थी सो गिरवाकर शहर के प्राचीर पर लगवाई । नौ माह में निर्माण कार्य सम्पूर्ण हुआ ।

1 व्यास नथावत उदयचंद की हवेली ।

1 ठाकुरजी विनायकजी[2] के मंदिर के सम्मुख ब्राह्मणों के घर थे सो गिरवाकर चौक बनवाया और ऐवज में ब्राह्मणों को दूसरे निवास स्थल दिए ।

1 भंडारी रुघनाथ की दीवानखाने के नीचे चार दुकाने थी सो गिरवाई ।

---

1. पंचौली = कायस्थ का शब्द संक्षेप ।

2. विनायकजी/गणेशजी ।

1 मूंहता गोपालदास के घर के सम्मुख कोटवाली चबूतरा बनवाया।
1 दुर्ग पर मस्जिदें तुरकांणी[1] के समय की थी सो गिरवाईं।
1 शहर में मंडी में बड़ी मस्जिदें थी जिनकी एक मीनार गिर गई थी
और बाकी की मस्जिदें गिरवाकर चौक बनवाया।
1 नवचौकिया में हाटें थीं सो गिरवाकर चौक बनवाया।
1 दुर्ग पर सूरजपोल पुरानी थी सो उखड़वा कर नई बनवाई।
और सिणगार चौकी संगमरमर की बनवाई और कठेड बनवाए।
1 भंडार गृह लोहा (पोल) में घुसते ही पक्के थे सो गिरवाए।
1 धाय भाई देवकरण को उठने का सम्मान दिया था
और बैठने का सम्मान दिया था। तत्पश्चात् आदमियां सहित भाग गया।
1 संवत 1808* में व्यास सीजो फतेचंदोत चला गया।
राजवी रतनसिंहजी सरूपसिंहजी को नागौर के दुर्ग में भेजा बाद में
(आंखों में) सलाइयाँ फेरने का आदेश हुआ तब दोनों भाई आत्महत्या
कर मर गये। ये महाराज अजीतसिंह जी के कुंवर थे।

1 राजवी प्रतापसिंहजी सौभाग्यसिंहजी दुर्ग में रहे।
मांजी नरूकीजी को दुर्ग से नीचे उतार दिया, शहर में हवेली में रखा, सम्पत्ति थी सो ले ली, ये रामसिंहजी की मांजी थे। दादीजी राणावत जी की पुत्री फूलकंवर का जैसलमेर के रावल अखैसिंहजी से विवाह किया। ये महाराज अजीतसिंहजी की पुत्री थी।

भंडारी दौलतराम सूरतराम को कार्तिक कृष्ण 8 को कैद किया। भंडारी हीमतराम, जोधामल, सावंतराम, भागकर आसोप गए सो कैदकर मंगवाये, सभी को दुर्ग के ऊपर झरणा में रखा। और भंडारी केसरी चंद पुत्र सरूपचंद को सरदारों ने हाथों से सौंप दिया। पंचोली लालजी और पुत्र खीमकरण महकरण वगैरह सभी बेटों को और जयकरण को सभी को कैद कर झरणा में रखा। बाद में महकरण को चौरंगा कर मरवाया गांव खेड़ूली[2] के डेरों पर चढाई कर आया था इसलिये। मुंहता गोपालदास के पुत्रों, रामदास, गोविन्दास को कैद कर दुर्ग ऊपर झरणे में रखा। व्यास उदयचंद को पुत्रों सहित कैद किया। जोशी हरकिसन को कैद किया, रूपये तय हुए।

सो कितने ही रूपये तो भरे बाद में आत्मघात कर मर गया। घर और जोशीपद देवदत्त, ब्रह्मदत्त को दिया।

---

* सन् 1750 ई.

1. शेरशाह द्वारा जोधपुर अधिग्रहण के काल में।

2. यहाँ जारोड़ा होना चाहिये।

महाराज कुमार श्री विजयसिंहजी को मेड़ता भेजा। बादशाह अहमदशाह ने टींके का हाथी, सिरपाव वगैरह दिल्ली से वकील व्यास हरनाथ के साथ भेजे। नाजिर के द्वारा वकील व्यास हरनाथ को हाथी इनायत कर पुनः दिल्ली भेजा।

महाराज रामसिंहजी की ओर से पुरोहित जगूजी, भंडारी, सवाईराम खीवसर का ठाकुर इन्द्रसिंहजी, कूंपावत खीमजी, खेरवा का ठाकुर इन्द्रसिंहजी, चांदावत देवसिंह इतने जने मराठा मल्हार के पास गये। मल्हार महाराज श्री अभयसिंह जी का पगड़ीबदल भाई था, परन्तु महाराज बखतसिंहजी ने मल्हार से ढब लगा लिया[1]। तब मल्हार ने जगूजी से कहा, 'मैं तो आपका ही हूं परन्तु आप आपाजी से मेल कर लिजिये।' तब जगूजी ने कहा हम तो आपाजी को जानते नहीं। तब मल्हारराव सभी को लेकर आपाजी के डेरे आए और कहा महाराज अभयसिंहजी के और मेरे भाईचारा था और अब रामसिंहजी से भाईचारा करने के लिए इनको भेजा है तब आपाजी ने कहा सुबायत आपका कहना है तो रामसिंहजी हमारे भाई है। तब दूसरे दिन जगूजी वगैरह 'खिड़किया पाग'[2] सिरपेच तुर्रा-किलंगी लगा वह ढाल में औछाड़ से ढक कर ले गए और कहा महाराज रामसिंहजी ने अप्पासाहब को भेजी है तब खिड़किया पाग तो अप्पाजी ने अपने सिर पर रख ली और अपनी पगड़ी उतार कर उसी ढाल में रखी और कहा यह मेरी पगड़ी महाराज साहब को भेज दीजिये और आपकी सहायता के लिए, फिलहाल यहां मामला है सो निपटाकर मैं मारवाड़ चलूंगा। तब जगूजी वगैरह सरदारों ने कहा अभी आप न चल सकें तो पांच-सात हजार लोक[3] हमारे साथ भिजवाइये बाकी लोगों को हम एकत्र कर लेंगे। 10,000 दस हजार लोगों सहित साहबा पटेल को इनके साथ भेजा और आपाजी जरूरी काम के मुद्दे से दक्खन को चढे। और इनको कहा आप साहबा पटेल को ले जाइए, मैं जीवित रहा तो 12 महिनों के भीतर मारवाड़ आकर रहूंगा तब यें साहबा पटेल को लेकर मह ाठ आए।

महाराज रामसिंहजी और राजाबहादुर किशोरसिंहजी पटेल साहबा को ले मेड़तियों को ले अजमेर गए। खोजा दानस्तां की हवेली में गौड़ अमरसिंह ने सामना किया।

सो उसे पकड़कर जीवित ही जमीन में गड़वा दिया और अजमेर पर रामसिंहजी का अधिकार हो गया।

---

1. मल्हार से सांठगांठ कर ली।
2. पारंपरिक पगड़ी का एक प्रकार।
3. सैनिक।

और पातावत जोगीदास साथ एकत्र कर फलोदी आया । सो हाकिम ने समझा नौकरी करने के निमित्त आया है । वह आते ही दुर्ग प्राचीर में घुस गया, महाराज बखतसिंहजी के हाकिम को पकड़ लिया और महाराज रामसिंहजी का अधिकार स्थापित कर लिया ।

महाराज बखतसिंहजी जोधपुर से कूचकर मेड़ता पधारे और चांदावत बहादुरसिंह पुत्र सबल सिंह का पैर दुख रहा था इसलिये उसके घर पालखी भेजकर कदमों में बुलवाकर फरमाया कि अजमेर पर रामसिंह ने आकर अधिकार कर लिया है, जिससे अपना हाकिम[1] दुर्ग में जा बैठा है सो अब आप सहायतार्थ अजमेर जाइये । तब बहादुरसिंह चढा सो गांव बुवाड़ के तालाब पर अफीम लेने हेतु उतरा[2] तब नगारे की आवाज सुनी जिसका पता करवाया सो अजमेर का हाकिम था तब बुलवाकर हालचाल पूछा तब हाकिम ने कहा कि अजमेर में महाराज रामसिंहजी का अधिकार हो गया है और दुर्ग में हमारे फकत पैदल सिपाही हैं जो आज रात पड़ने के बाद निकलकर चले आवेंगे । बाद में हाकिम वगैरह तो मेड़ते की ओर रवाना हुए और खीची हरिसिंह और खाटू का जोधा जालमसिंह और मानसिंह पुत्र ईश्वर गांव सेठम का, ये हाकिम के साथ थे, सो बहादुरसिंहजी के पास रुक गये । बहादुर सिंह सारे दिन सेठण में रहे, दावत हुई । तत्पश्चात् सूर्यास्त होने पर अजमेर की ओर चले सो अजमेर के दुर्ग में केवड़ा की नाल पास में ही थी जहां घोड़ों से उतरे और कहा कि हम दुर्ग पर जाकर तोपें छोड़ें तब तुम लोग घोड़ों को लेकर घर चले जाना । बाद में दुर्ग के मध्य मार्ग जाते समय किलेदार[3] मिला जहां जान-पहचान निकाली और किलेदार ने कहा कि हाकिम भागकर चला गया और दुर्ग में सामान नहीं जिससे छोड़कर रवाना हो रहे है । बाद में बहादुरसिंह जी और किलेदार दुर्ग में गये और तोपों की आवाजें करवायी तब घोड़ेवाले घोड़े लेकर रवाना हुए सो आलणियावास आकर उतरे । और अजमेर के दुर्ग की आवाजें सुनकर महाराज बखतसिंहजी मेड़ते से कूचकर आलणियावास (आये, गांव) में बहादुरसिंहजी का देखा तब बुलाकर बहुत खातिर की और अजमेर से हाकिम भाग आया था उसे चौरंगा करवाया । महाराज रामसिंहजी के उमरावों[4] को तथा पुरोहित जगू वगैरह को झूठे पत्र महाराज बखतसिंहजी के नाम लिखे जिनमें सरदारों वगैरह के नाम की प्रार्थना आयी थी जिसके प्रत्युत्तर में इस तरह से लिखा कि हमारा नगारा बजे उसी समय रामसिंहजी को पकड़ लेना और दक्खनियों[5] को हम मार डालेंगे । इस तरह महाराज बखतसिंहजी ने लिखे वे पत्र पत्र-वाहक को सौंप कर हिदायत दी कि ये पत्र दक्खनियों की सेना में चौकी हो वहां ले जाना । पत्र वाहक गया जिसके पास से पत्र दक्खनियों के आदमियों ने छीन लिये और पटेल

---

1. एक पद का नाम ।
2. रूका ।
3. दुर्गपाल
4. प्रमुख ठाकुर
5. मराठों

साहबाजी ने पत्र पढकर मकसद[1] समझ लिया कि रामसिंहजी के उमरावतो राजाधिराज बखतसिंहजी से मिले हुए है जिससे रामसिंहजी को पकड़वा देंगे और हमें भी मरवा रहे है सो उसी समय नगारा करवाकर[2] महाराज रामसिंहजी को कहा कि जल्दी से चढो[3] तब सरदारों की आसामियों वगैरह ने कहा कि अचानक ही क्यों चढ रहे हो आपको कौन खा रहा है परन्तु इन्होंने बात मानी नहीं। दक्खनियोंको महाराज रामसिंहजी लेकर चढ गए तब पीछे पुरोहित जगू वगैरह उमराव थे सो पटेल साहबाजी के पास गांव रामसर के डेरों परजाकर कहा कि आपने हमारी अच्छी सहायता की। तब पटेल ने महाराज बखतसिंहजी के लिखे पत्र थे सो पढवाये तब उन्होंने कहा कि ये पत्र तो झूठे बनवाये हुए है। हम महाराज रामसिंहजी को पकड़ें तो महाराज के पीछे पीछे हम भटकते क्यों घूम रहे हैं ? तब साहबाजी ने कहा, समझा, अब युद्ध करेंगे। तब सरदारों ने कहा अभी तो युद्ध मत कीजिये। हमारी सारी सेना तो आप द्वारा कूच करने की वजह से बिखर गई है जिससे अभी तो आप रुकिये। तब वहाँ से कूचकर सभी लोक मंदसौर गए और रूपनगर के राजा सावंतसिंहजी के कुंवर सरदारसिंहजी महाराज रामसिंहजी के साथ गए, सो महाराज रामसिंहजी को तो खास मंदसौर में सौंप पटेल साहबाजी दक्खन गए। बाद में महाराज रामसिंहजी को दक्खनी[4] अप्पाजी ने रु. 500/- रोजीना[5] खर्च हेतु कर दिया सो उज्जैन से सीधे ही महाराज के पास मंदसोर पहुंचता था। महाराज बखतसिंहजी अजमेर आए, किले पर सेना के सदस्य थे उनकी खातिर की। चांदावतों[6] को तो अजमेर में रखा और महाराज बखतसिंहजी ने कूच किया सो गांव डूंगरे पड़ाव डाला। श्यामपुरा के ठाकुर उम्मेदसिंह जी आकर मिले, हाथी भेंट किया। महाराज बखतसिंहजी ने उदयपुर, वकील भेजकर राणा राजसिंह जी को कहलवाया, 'राजतिलक किसने दिया है, हम नाथजी को दीवान नियुक्त करेंगे।' नाथजी राणाजी के भाई थे। उदयपुर से राणाजी ने दस हजार सैनिकों को तीन लाख रूपये खर्च हेतु देकर महाराज बखतसिंहजी के पास भेजा। और जयपुर वकील भेजा और कहलवाया कि आपके तो मल्हार से वेर है और हमारे आपाजी से वैर है सो हम सभी एक होकर दक्खनियों को नर्मदा तक निकाल बाहर करेंगे, मालवा हम दोनों आधा-आधा कर लेंगे।

तब माधोसिंहजी ने वकील भेजकर बखतसिंहजी को कहलवाया कि अभी तो चतुर्मास[7] है सो कूच कैसे करें तब महाराज बखतसिंहजी ने कहलवाया कि महाराज चतुर्मास में परेशान होते है तो हम ही जयपुर आऐंगे। सो महाराज बखतसिंहजी ने कूच कर गांव सोनेली में पड़ाव डाला तोपखाना और हाथी कीचड़ में फंस गए सो मुश्किल से पड़ाव स्थल पहुंचे। जयपुर के वकील ने महाराज

---

1. अर्थ
2. प्रस्थान का एलान कर
3. वाहनारूढ होइये।
4. मराठा
5. दैनिक व्यय
6. मेड़तियां राठौड़ों की उपशाखा।
7. वर्षाकाल के चार माह आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन।

माधोसिंह जी को लिखा, 'महाराज बखतसिंहजी जयपुर आ रहे हैं' तब महाराज माधोसिंहजी ने वारिश में कूच किया सो सोनेली आए। सोनेली में दोनों राजाओं का हाथी के हौदो पर मिलाप हुआ। दूसरे दिन महाराज जयपुर स्वर्गीय महाराज ईश्वरी सिंहजी की कांण[1] करवाने हेतु माधोसिंह जी के पास पधारे। दक्खनियों को नर्मदा से इस तरफ नहीं आने देना इस विषय में बातचीत की तत्पश्चात् अजनेकंवर बाई से मिलने हेतु भीतर पधारे। अजनेकंवर बाई किशनगढ़ के राजा की बेटी थी। माधोसिंह के पड़ाव से लौटते समय सिर में दर्द उठा सो हाथी से उतर खासे असवार[2] हो गये। ज्वर चढ़ गया। पड़ाव पर पधारे तब उल्टी (कै) हुई वैद्य सूरजमलजी ने नाड़ी देखते ही कहा ये लक्षण अच्छे नहीं। सेवकों का भाग्य प्रतिकूल है। तत्पश्चात् तीसरे दिन संवत 1809* भाद्रपद शुक्ल 13 बृहस्पतिवार दोपहर में श्री महाराज बखतसिंहजी देवलोक को प्राप्त हुए। सोनेली के तालाब पर दाह हुआ वहाँ देवल करवाया। लोगों ने ऐसा भ्रम डाला कि जयपुर वालों ने अजेनकंवर बाई के हाथ से जहर दिलवाया।

दूसरे दिन महाराज माधोसिंह जी मातमपुर्सी के निमित्त आए और शिष्टाचार निभाकर जयपुर की ओर चल पड़े। हमारी सेना सोनेली से कूच कर महारोठ आई।

आश्विन कृष्ण 1 रविवार जोधपुर में सोक समाचार पहुंचे तब सतियां हुई उनका विवरण —

5 रानियां पांच

1. तुंवरजी पटरानी।
2. भटियाणी ज़ी।
3. राणावत जी।
4. देवडीजी सिरोही की।
5. वीरपुरी जी।

10.

गायनियां 5
बडारणियां 5

व्यास उदयचंद पुत्रों सहित कैद में था जिसे सतियों ने छुड़वाया।

इति संपूर्ण महाराज बखतसिंह जी री ख्यात....

---

1. शोक प्रकट करना।
2. खासे असवार
* 1751 ई.